CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्ग संख्या.................. प्राप्ति-संख्या 33६3

ग्रन्थ-कार्ड
श्री गणेश वर्णी दि० जैन (शोध) संस्थान
ग्रन्थागार
नरिया, वाराणसी-५

ग्रन्थ नाम नम्मया सुन्दरी कहा
लेखक श्री महेन्द्रसूरि

लेनेवाले का	देनेकी	लेनेवालेका	लौटानेकी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

12·1

३३६२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिंघी जैन ग्रन्थमाला

[ग्रन्थाङ्क ४८]

श्रीमहेन्द्रसूरि-विरचिता

[प्राकृतभाषा-निबद्धा]

नम्मयासुन्दरी कहा

SINGHI JAIN SERIES

[NUMBER 48]

NAMMAYĀ SUNDARĪ KAHĀ

[A PRAKRIT WORK]

OF

MAHENDRA SŪRI

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कलकत्तानिवासी

साधुचरित-श्रेष्ठिवर्य श्रीमद् डालचन्दजी सिंघी पुण्यस्मृतिनिमित्त

प्रतिष्ठापित एवं प्रकाशित

सिंघी जैन ग्रन्थमाला

[जैन आगमिक, दार्शनिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, कथात्मक–इत्यादि विविधविषयगुम्फित
प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, प्राचीनगूर्जर, -राजस्थानी आदि नाना भाषानिबद्ध सार्वजनीन पुरातन
वाङ्मय तथा नूतन संशोधनात्मक साहित्य प्रकाशिनी सर्वश्रेष्ठ जैन ग्रन्थावलि]

प्रतिष्ठाता

श्रीमद्-डालचन्दजी-सिंघीसत्पुत्र

स्व० दानशील-साहित्यरसिक-संस्कृतिप्रिय

श्रीमद् बहादुर सिंहजी सिंघी

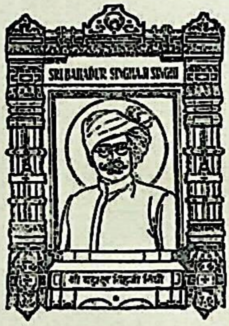

प्रधान सम्पादक तथा संचालक

आचार्य जिनविजय मुनि

अधिष्ठाता, सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ

निवृत्त ऑनररि डायरेक्टर

भारतीय विद्या भवन, बम्बई

*

संरक्षक

श्री राजेन्द्र सिंह सिंघी तथा श्री नरेन्द्र सिंह सिंघी

प्रकाशक

अधिष्ठाता, सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ

भारतीय विद्या भवन, बम्बई

जयन्तकृष्ण ह. दवे, ऑनररी डायरेक्टर, भारतीय विद्या भवन, चौपाटी रोड, बम्बई, नं. ७, द्वारा प्रकाशि
तथा – लक्ष्मीबाई नारायण चौधरी, निर्णयसागर प्रेस, २६–२८ कोलभाट स्ट्रीट, बम्बई, नं. २, द्वारा मुद्रि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

3383

श्रीमहेन्द्रसूरि-विरचिता

[प्राकृतभाषा-निबद्धा]

नम्मयासुन्दरी कहा

[देवचन्द्रसूरिकृत संक्षिप्त प्राकृत कथा, जिनप्रभसूरिकृत अपभ्रंशभाषामय नमयासुन्दरी सन्धि, तथा मेरुसुन्दरकृत गूर्जरभाषागद्यमय बालावबोधसमन्वित]

❀

संपादनकर्त्री

कुमारी प्रतिभा त्रिवेदी, एम्. ए.

प्राध्यापिका भा. वि. भवन कोलेज, बम्बई

प्रकाशनकर्ता

सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ

भारतीय विद्या भवन, बम्बई

❀

विक्रमाब्द २०१६] प्रथमावृत्ति – पंचशतप्रति [१९६० खिस्ताब्द

ग्रन्थांक ४८] [मूल्य रु. ४/४०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किंचित् प्रास्ताविक

महेन्द्रसूरि रचित 'नम्मयासुन्दरी कहा' (सं० नर्मदासुन्दरी कथा)नी मूळ प्रति, मने सन् १९४२-४३ मां जैसलमेरना ज्ञानभंडारोनुं अवलोकन अने संशोधन करती वखते दृष्टिगोचर थई हती। कागळ पर लखेली ए प्रति कोई ५०० वर्ष जेटली प्राचीन जणाती हती। में ते वखते तेना परथी प्रतिलिपि करावी लीधी। सिंघी जैन ग्रन्थमालामां विशिष्ट रचनावाळी प्राकृत कृतिओ प्रकट करवानो जे उपक्रम में कर्यो हतो, तेमां आ कथाने पण प्रकट करी देवानो मारो विचार थयो अने तदनुसार प्रेस माटे कोपी तैयार करवा मांडी।

ए दरम्यान, विदुषी कुमारी प्रतिभा त्रिवेदी एम्. ए. ए, मारा मार्गदर्शन नीचे, बम्बई युनिवर्सिटीमां पीएच्. डी. माटे पोतानुं रजीस्ट्रेशन नोंधाव्युं अने भारतीय विद्याभवनमां प्रविष्ट थई अध्ययन करवानी इच्छा व्यक्त करी। में ए बहेनने पोताना थिसीझ माटे प्रस्तुत कथानुं विशिष्ट परीक्षणात्मक संपादन करवानुं कार्य सूचव्युं, जे एमणे बहु उत्साहथी स्वीकार्युं अने मारा मार्गदर्शन प्रमाणे, एमणे बहु ज खंतथी पोतानुं अध्ययन चालु कर्युं।

जूना हस्तलिखित ग्रन्थोनी लिपि वांचवा-उकेलवामां अने शास्त्रीय संपादननी दृष्टिए प्राचीन ग्रन्थोना पाठो विगेरेनी अशुद्धि-शुद्धि आदि माटे केवी दृष्टिए काम लेवुं विगरे विषयमां, ए बहेने सारो श्रम उठाव्यो अने तेमां योग्य प्रावीण्य मेळव्युं।

प्रस्तुत कथानी मूळ वाचना बराबर तैयार थई गया पछी में एने प्रेसमां छापवा आपी दीधी अने धीरे धीरे एनुं मुद्रण कार्य थतुं रह्युं। बीजी बाजू कुमारी त्रिवेदीए, एना अंगेना परीक्षणात्मक विवेचननी संकलना करवानुं काम चालु राख्युं।

केटलोक समय व्यतीत थतां एमनी शारीरिक स्थिति जरा अस्वस्थताजनक रहेवा लागी अने तेथी एमनुं अध्ययनात्मक कार्य अटकी पड्युं। ए दरम्यान मारो पण बम्बईनो निवास अस्थिर बन्यो अने हुं राजस्थाननी नूतन 'राजधानी जयपुरमां, मारा निर्देशन नीचे' स्थापवामां आवेल 'राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर'नी रचना अने व्यवस्था माटे वारंवार त्यां जवा-आववामां व्यस्त रहेवा लाग्यो। वच्चे वच्चे, ज्यारे ज्यारे, बम्बई आववानो प्रसंग आवतो त्यारे ए बहेनने पोताना थिसीझनुं काम पूर्ण करवा सूचना करतो रहेतो।

परंतु समयनुं व्यवधान थई जवाथी तेम ज ते पछी भारतीय विद्याभवनमां संस्कृत भाषाना अध्यापननुं कार्य पण स्वीकारी लेवाथी, एमने पोताना थिसीझनुं कार्य हाल तरत पूर्ण करवा जेटलो अवकाश अने उत्साह बंने न जणावाने लीधे, में आ कथाने अत्यारे आम मूळ रूपे ज प्रकट करी देवानुं उचित धार्युं छे।

जो ए बहेन नजीकना भविष्यमां पोतानुं थीसीझ पूर्ण करशे तो ते, एना परिशिष्ट रूपे बीजा भागमां प्रकट करवानी व्यवस्था थशे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आ पुस्तकमां, सर्वप्रथम महेन्द्रसूरिरचित प्राकृत 'नम्मयासुन्दरीकहा' मुद्रित करवामां आवी छे। एनी कुल ११९७ गाथा छे। वच्चे वच्चे केटलोक गद्यभाग पण छे। तेथी एकंदर एनो ग्रन्थाग्र परिमाण १७५० श्लोकप्रमाण छे—एम एनी मूळ प्रतिना अन्ते ज लखेलुं मळे छे। एनी रचना महेन्द्रसूरि नामना आचार्ये विक्रम संवत् ११८७ मां करेली छे। महेन्द्रसूरिए करेला उल्लेख प्रमाणे मूळ ए कथा एमणे शान्तिसूरि नामना आचार्यना मुखथी सांभळी हती।

महेन्द्रसूरिनी आ रचना बहु ज सरल, प्रासादिक अने सुबोधात्मक छे। कथानी घटना आबाल जनने हृदयंगम थाय तेवी सरस रीते कहेवामां आवी छे। वच्चे वच्चे लोकोक्तिओ अने सुभाषितात्मक वचनोनी पण छटा आपवामां आवी छे। प्राकृत भाषाना अभ्यासिओ माटे आ एक सुन्दर अध्ययनने योग्य रचना छे।

ए मुख्य कथाना परिशिष्ट रूपे, एना पछी श्रीदेवचन्द्र सूरिनी रचेली पण एक कथा आपवामां आवी छे। देवचन्द्र सूरि ते सुप्रसिद्ध कलिकालसर्वज्ञ गणाता आचार्य हेमचन्द्रना गुरु छे। तेमणे पोताना पूर्वगुरु, आचार्य प्रद्युम्नसूरिरचित 'मूलशुद्धि-प्रकरण' नामना प्राकृत ग्रन्थ उपर विस्तृत टीकानी रचना करी छे। ए टीकामां उदाहरण रूपे, अनेक प्राचीन कथाओनी संकलना करी छे, तेमां प्रस्तुत 'नम्मयासुन्दरी' अर्थात् नर्मदासुन्दरीनी कथा पण, प्रसंगवश, संक्षेपमां आलेखी छे। देवचन्द्र सूरिनी आ रचना लगभग २५० जेटली गाथामां ज पूरी थाय छे। पण कथागत मूळ वस्तुनुं परिज्ञान मेळववा माटे आ रचना पण बहु उपयोगी छे। खरी रीते महेन्द्रसूरि वाळी कथानो मूला-धार आ देवचन्द्र सूरिनी ज रचना होवानो संभव छे। देवचन्द्र सूरिना अन्तिम उल्लेख प्रमाणे नर्मदासुन्दरीनी मूळ कथा वसुदेवहिंडी नामना प्राचीन कथाग्रन्थमां गूंथेली छे अने तेना ज आधारे देवचन्द्र सूरिए पोतानी रचना करेली छे।

देवचन्द्र सूरिनी कृति पछी जिनप्रभ सूरिए अपभ्रंश भाषामां रचेली 'नमयासुन्दरि-सन्धि' नामनी कृति मुद्रित करवामां आवी छे। आ कृति अपभ्रंश भाषाना अभ्यासनी दृष्टिए तेम ज नर्मदासुन्दरीकथागत वस्तुनुं तुलनात्मक अध्ययन करवानी दृष्टिए उपयोगी थाय तेम छे।

ए ज रीते, ते पछी मेरुसुन्दर गणिए प्राचीन गुजराती गद्यमां लखेली 'नर्मदासुन्दरी कथा' पण मुद्रित करवामां आवी छे। मेरुसुन्दर गणिए 'शीलोपदेशमाला' नामना प्राचीन प्राकृत ग्रन्थ उपर, प्राचीन गुजराती भाषामां बहु ज विस्तृत बालावबोध नामनुं विवरण लख्युं छे, जेमां आवी अनेकानेक प्राचीन कथाओ आलेखित करवामां आवी छे। प्राकृत मूल कथाना अध्ययन अने विवेचनमां उपयोगी होवाथी आ रचना पण अहीं संकलित करवामां आवी छे।

एम, २ प्राकृत रचना, १ अपभ्रंश भाषारचना, अने १ प्राचीन गुजराती गद्य रचना—मळीने ४ कृतिओनो आ सुन्दर संग्रह 'सिंघी जैन ग्रन्थमाला'ना ४८ मा मणिना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रूपमां अभ्यासिओना करकमलमां उपस्थित करवामां आवे छे। आशा छे के ग्रन्थमालाना अन्यान्य ग्रन्थरत्नोनी माफक आ संग्रह पण आदरणीय थशे ज।

अन्तमां विदुषी कुमारी प्रतिभा त्रिवेदिए प्रस्तुत संग्रहना संपादन माटे जे परिश्रम उठाव्यो छे ते माटे एमने मारा हार्दिक अभिनन्दन आपुं छुं अने साथे शुभाशीर्वाद पण आपुं छुं के ए पोतानुं थिसीझ पूर्ण करी तेने प्रकट करवा जेटलुं स्वास्थ्य अने समुत्साह प्राप्त करे।

भारतीय विद्याभवन बम्बई

—[ता. ५·३·६०]— —मुनि जिनविजय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषयानुक्रम

१. महिंदसूरिरइया नम्मयासुन्दरी कहा

प्रसंग		पृष्ठ
१	पत्थावणा	१
२	महेसरदत्तमाया-रिसिदत्ताजम्मवण्णणा	२
३	रुद्ददत्तस्स रिसिदत्तोवरि रागाणुभावो	३
४	रुद्ददत्तस्स कवडसावगधम्मांगीकरणं	४
५	रुद्ददत्तस्स रिसिदत्ताए सह परिणयणं	५
६	रिसिदत्ताए सस्सुरगिहगमणं	६
७	पीइगिहाओ रिसिदत्ताए संबंधविच्छेओ	७
८	नम्मयासुन्दरीजम्मवण्णणा	१४
९	नम्मयानईतीरे नम्मयपुरनिवेसो	१६
१०	नम्मयासुन्दरीरूववण्णणा	१८
११	रिसिदत्ताए सपुत्तकए नम्मयासुन्दरीमग्गणा	१९
१२	महेसरदत्तस्स मायामहगिहगमणं	२१
१३	महेसरदत्तस्स नम्मयासुन्दरीपरिचयो	२२
१४	महेसरदत्तस्स नम्मयासुन्दरीअत्थे पत्थणा	२४
१५	नम्मयासुन्दरीवीवाहोसवो	२६
१६	मुणिपदत्तसावप्पसंगो	२९
१७	जवणदीवं पइ पयाणं	३०
१८	महेसरदत्तस्स कुसंका	३१
१९	नम्मयासुन्दरीपरिच्चाओ	३२
२०	नम्मयासुन्दरीए सुन्नदीवे पलावो	३४
२१	धम्मज्झाणेण कालगमणं	३६
२२	चुल्लपिउणा सह मिलणं बब्बरकूलगमणं च	३८
२३	वीरदासस्स हरिणीवेसागिहगमणं	४२
२४	हरिणीचेडीहिं नम्मयासुन्दरीए हरणं	४६
२५	वीरदासकया गवेसणा गिहं पइ पयाणं च	४८
२६	हरिणीए कवडसंभासणं	५०
२७	हरिणीकयोवएसो	५२
२८	हरिणीकया कयत्थणा	५४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२९	करिणीकयं दुक्खमोयणं	५५
३०	हरिणीमरणं नम्मयासुन्दरीए सामिणीकरणं	५७
३१	धणेसरकहाणयं	६०
३२	नम्मयासुन्दरीए राइणो निमंतणं	६२
३३	जिणदेवेण सह मिलणं	६५
३४	नम्मयासुन्दरीए मोयणं	६८
३५	सयणाण सह मिलणं	७१
३६	सुहत्थिसूरिणो नम्मयपुरे आगमणं	७४
३७	पुव्वभववण्णणा	७७
३८	दिक्खागहणं	८२
३९	पवत्तिणीपयठवणा	८५
४०	कूवचन्द्रगामं पइ गमणं	८५
४१	महेसरदत्तकयो पच्छायावो	८८
४२	सुहत्थिसूरिकया धम्मदेसणा	९१
४३	महेसरदत्त-तज्जणणी-चरणपडिवत्ती	९३
४४	नम्मयासुन्दरीए सग्गगमणं	९५

२. दवेचंदसूरिकया नम्मयासुन्दरीकहा ९७–११७

३. जिणप्पहसूरिविरइया नमयासुन्दरी सन्धि ११८–१२२

४. मेरुसुन्दरगणिकृता प्राचीनगूर्जरभाषाग्रथित गद्यमय-बालावबोधरूपा **नर्मदासुन्दरी कथा** १२३–१२८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

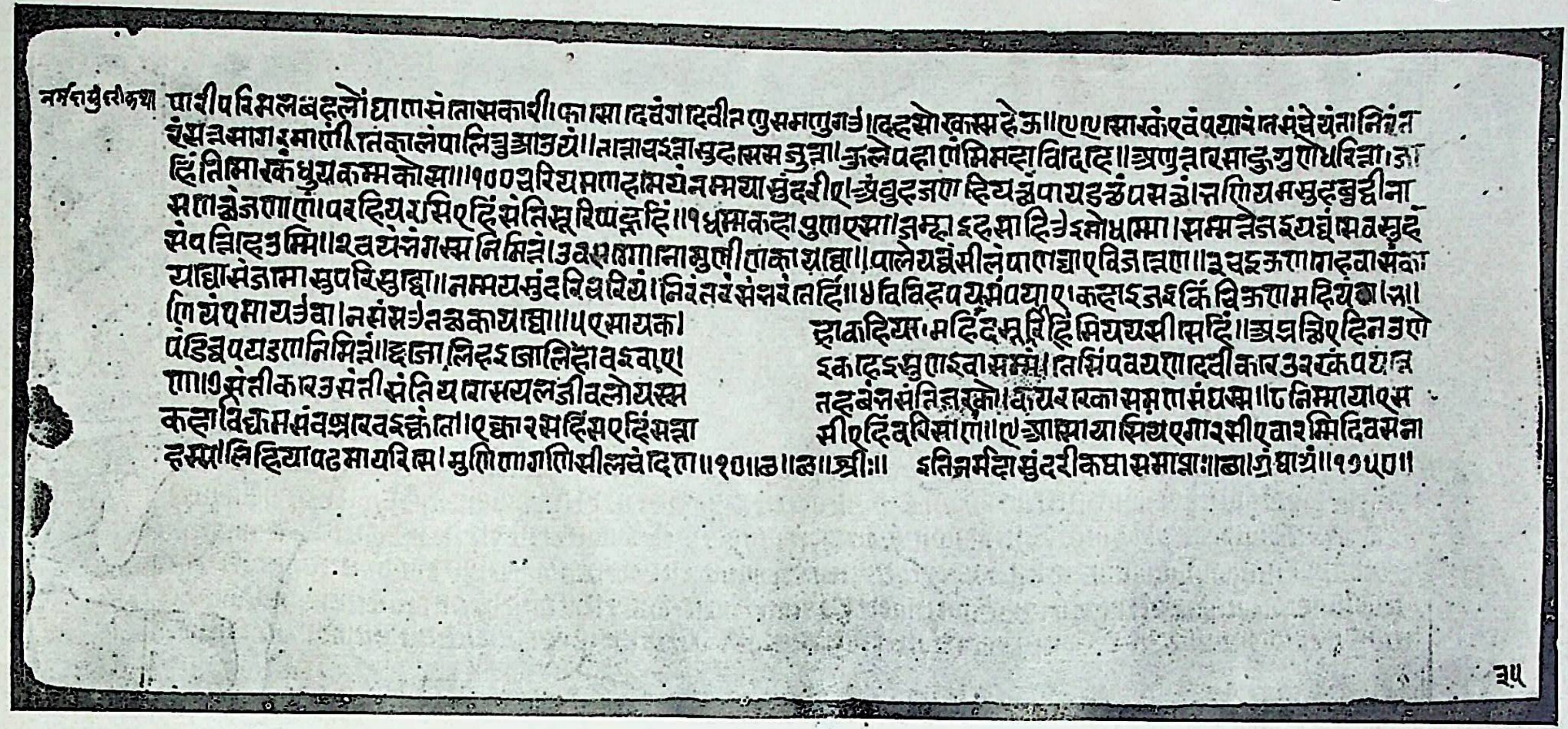

महेन्द्रसूरीकृत 'नम्मयासुन्दरीकहा' की प्राचीन प्रतिका अन्तिम पत्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

3383

सिरिमहिंदसूरिकहिया

नम्मयासुंदरीकहा

[पत्थावणा]

†जयइ भुवणप्पईवो[1] सव्वन्नू जस्स नाणजुन्हाए ।
लक्खिज्जइ भवभवणे कालत्तयसंभवं वत्थुं[2] ॥ १
अविरयनमंतसुरवरमणिरयणकिरीडकोडिकोडीहिं ।
मसिणीकयपयवीढा जयंति तित्थेसरा सव्वे ॥ २
उवसग्गपरीसहसत्तुवाहिणी वाहिणी तिहुअणस्स ।
एगेण जेण विजिया[3] सो जयउ जिणो महावीरो ॥ ३
निम्महियमयणकरिणो कुमयकुरंगप्पयारनिट्ठवणा ।
सव्वे मुणिवरसीहा हुंति सहाया सया मज्झ ॥ ४
काउं सरस्सईए सरणं हरणं समत्थविग्घाणं ।
वोच्छामि नम्मयासुंदरीएँ चरियं मणभिरामं ॥ ५
भणियं चिय फुडमेयं विसुद्धबुद्धीएँ पुव्वपुरिसेहिं ।
तह वि य गुणाणुराया ममावि भणणुज्जमो जाओ ॥ ६
बहुसो वि भन्नमाणं सुणिज्जमाणं पि धम्मियजणस्स ।
कन्नरसायणमेयं एगंतसुहावहं होइ ॥ ७
गुणवन्नणेण उत्तमजणस्स झिज्झंति असुहकम्माइं ।
उवसमइ दाहसंगे लग्गंतो चंदकिरणोहो ॥ ८
सुयपुव्वं पि सुणिज्जउ सुहयरमेयं महासईचरियं ।
होइ च्चिय विसहरणो मंतो कन्नेसु पविसंतो ॥ ९
उत्तमकुलप्पसूया निम्मलसम्मत्तनिच्चलसुसीला ।
अणुचिन्नसमणधम्मा[4] न वन्नणिज्जा कह णु एसा ॥ १०
ता होऊण पसन्ना सभावमज्झत्थमाणसा सुयणा ।
निसुणेह पावहरणं चरियमिणं मे भणिज्जंतं ॥ ११
जह जाया उव्वूढा चत्ता य समुद्दमज्झदीवम्मि ।
चुल्लपिउणो य मिलिया पुणो वि चुक्का जहा तत्तो ॥ १२

---

† The Ms. begins with ॥ ६० ॥ ॐ नमो वीतरागाय ॥

Wherever the text is corrected the original readings of the Ms. are noted in the foot-note:— १ °पईवो. २ वत्थं. ३ विजया. ४ अणुचिन्न°.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अकलंकियधम्मगुणा बब्बरदीवम्मि जह चिरं वुत्था ।
मोयाविया य पिउणो मित्तेण गया य कुलगेहं ॥ १३

सोऊण भवं पुरिमं सुहत्थिसूरिस्स पायमूलम्मि ।
निक्खंता संपत्ता कमेण तह देवलोगम्मि ॥ १४

सयलं कहंगमेयं वत्तवं इत्थ पत्थुयपबंधे ।
संखेव-वित्थरेणं पडुक्खरं तं निसामेह ॥ १५

*

[महेसरदत्तमाया-रिसिदत्ताजम्मवण्णणा]

अत्थि सरिसेलकाणणगामागरनगरनिवहरमणीओ ।
नामेण मज्झदेसो महिमंडलमं [प. 1A] डणो देसो ॥ १६

जत्थ –

गामा नगरायंते नगराणि य[1] देवलोगभूयाणि ।
दट्ठूण व संतोसा लच्छी सयमेव अवयरिया ॥ १७

आवासिएहिँ निच्चं पए पए सत्थवाहसत्थेहिं ।
एयं विसममरन्नं एयं ति न नज्जइ विसेसो ॥ १८

तत्थऽत्थि पुरं पयडं धणधन्नसमिद्धलोयसंपुन्नं ।
नामेण वड्ढमाणं पवड्ढमाणं[2] जणधणेहिं ॥ १९

जिणमंदिरेसु जम्मी अणवरयपयट्टगीयनट्टेसु ।
पत्तो पिच्छइ लोओ तणं व भावेइ सुरलोयं ॥ २०

सालो जत्थ विसालो सुयणो व्व समुन्नओ परागम्मो ।
दीसंतो दूराओ भयंकरो वेरिवग्गस्स ॥ २१

निसिपडिबिंबियतारा नीलायणवज्जियं च दिवसम्मि ।
गयणंगणं[3] व रेहइ समंतओ खाइया जस्स ॥ २२

कयधम्म[4]जणपसाया[5] पासाया गयणमणु[6]गया जत्थ ।
रेहंति सुरघरा इव अच्छरसारिच्छपुत्तलिया ॥ २३

सुयणो सरलसहावो परोवयारी कयत्थओ[7] धीरो ।
निवसइ जत्थ सुसीलो सज्जणलोओ सया मुइओ[8] ॥ २४

ससिनिम्मलसीलाओ लज्जाविन्नाणविणयकलियाओ ।
जत्थ वरअंगणाओ[9] घरंगणाइँ[10] वि न पासंति[11] ॥ २५

---

१ ग. २ °माणं माणं प्रव्वड्ढजण°. ३ गयणगणं. ४ °धम्मा°. ५ °प्पसाया. ६ °णमुणु°. ७ °यत्तुओ. ८ सुइओ. ९ वरंगणाओ. १० घरगणाइं. ११ पसंति.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तं नत्थि जं न दीसइ तम्मि पुरे वत्थु सुंदरसहावं ।
संपुन्नवन्नओ तो कह कीरइ तस्स विउसेहिं ॥ २६

अवि य—

दट्ठूण अ[न]न्नसमं निययसिरिं हरिसमज्झमत्तं व ।
नन्नच्चइ व्व निच्चं पवणुद्धुयधयवडकरेहिं ॥ २७
तं पुण पालेइ तया असोगसिरिनत्तुओ कुणालसुओ ।
मोरियवंसपसूओ विक्खाओ संपई राया ॥ २८
पडिवन्नो जिणधम्मो जेण सुहत्थिस्स पायमूलम्मि ।
संबोहिओ य पायं भरहद्धे[1]ऽणारियजणो वि ॥ २९
काराविया य पुहवी अणेगजिणभवणमंडिया जेण ।
जिणमयबहुमाणाओ अकरभरा सावया य कया ॥ ३०
तत्थेव पुरे निवसइ सिट्ठी नामेण उसभदत्तु त्ति ।
जीवाइतत्तवेई निच्चलचित्तो जिणमयम्मि ॥ ३१
जिणधम्मे धीरमई वीरमई नाम गेहिणी तस्स ।
कुंदेंदु[2]ज्जलसीला पिया हिया बंधुवग्गस्स ॥ ३२
तेसिं पि दुवे पुत्ता[3] कमेण जाया गुणेहिं संजुत्ता ।
कुलन[प. १ B]हयलससि-रविणो सहदेवो वीरदासो य ॥ ३३
एगा य वरा कन्ना पहसियरइलच्छिरूवलावन्ना ।
गुणसयभूसियगत्ता जाया नामेण रिसिदत्ता[4] ॥ ३४
उत्तमकुलुब्भवाणं कन्नाणं रूवकंतिकलियाणं ।
सहदेव-वीरदासा पिउणा गिन्हाविया पाणी ॥ ३५

एवं[5] च तेसिं सव्वेसिं कुलकमागयजिणधम्माणुपालणरयाणं इह-परलोयविरुद्धकिरियाविरयाणं जिणमुणिपूयासक्कारकरणुज्जयाणं परमयपयंडपासंडिवाइदुज्जयाणं विसुद्धववहारोवज्जियपहाणपसिद्धीणं पुव्वभवोवज्जियपुन्नाणुभावपवड्ढमाणधण[6]समिद्धीणं सुहेण वच्चंति दीहा । इत्थंतरे रिसिदत्ता संपत्ता तरुणजणमणमयकोवणं जोव्वणं—जायाइं तसियकुरंगिलोअणसरिच्छाइं चंचलाइं लोयणाइं, पाउब्भूओ पओहरुग्गमो, खामीभूओ मज्झभागो पसाहिओ य तीहिं वलयरेहाहिं, समुट्ठिया य नाभिपउमस्स नालायमाणा रोमराई,

१ भरहद्धे°. २ कुंदेंदु°. ३ पत्ता. ४ सिरिदत्ता. ५ एकं. ६ °माणवण°.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पवित्थरियं नियंबफलयं[1], अलंकियाओ[2] जंघाओ हंसगमणलीलाए। किं बहुणा ? उक्कंठियाए व सव्वंगमालिंगिया एसा जोव्वणलच्छीए।

तओ–

जत्तो जत्तो वच्चइ दंसणतण्हालुया नयरतरुणा[3]।
तत्तो घोलिरमालइलयं व फुल्लंधुया जंति ॥ ३६
विहवमयाओ केई रूवमयाओ बहुत्तंग[4]व्वाओ।
जायंति तं अणेगे कयविणया उसभदत्तस्स ॥ ३७
पडिभणइ उसभदत्तो–'तुब्भे सव्वे वि सुंदरा चेव।
किंतुं मम एस नियमो समाणधम्मस्स दायव्वा ॥ ३८
जं विसरिसधम्माणं न होइ परिणामसुंदरो नेहो।
नेहं विणा विवाहो आजम्मं कुणइ परिदाहं ॥' ३९
जो जो वणेई[6] कन्नं तं तं इब्भो निवारए एवं।
नँ[7] य कोइ नियं धम्मं कन्नाकज्जे परिच्चयइ ॥ ४०

[रुद्ददत्तस्स रिसिदत्तोवरि रागाणुभावो]

अन्नया समागओ तत्थ कूवचंद्राभिहाण[नयर]वासी महेसरधम्माणुरत्तचित्तो महग्घभंडभरियजाणवाहणेहिं रुद्ददत्तो सत्थवाहपुत्तो। आवासिओ समाणगुणधम्मस्स कुबेरदत्तस्स मित्तस्स भंडागारसालासु। तया य [प. २A] तम्मि नयरे लोइओ कोइ महामहो वट्टइ। तत्थ य सविसेसुज्जलभूसणनेवत्थो सव्वलोओ समंतओ संचरइ। कोऊहललोयणलोलयाए रुद्ददत्त-कुबेरदत्ता एगत्थ हट्टे निविट्ठा नायरजणचिट्ठियाइं निहालिउं पवत्ता।

अवि य–

कत्थइ नच्चंति नडा कत्थइ कुद्दंति रासयं तरुणा।
गायंति चच्चरीओ खिल्लावियंविविहकरणेहिं ॥ ४१
तह वट्टंते रंगे पिक्खणवक्खित्तं[10]माणसा लोया।
अन्नोन्नपेल्लणेणं इओ तओ तत्थ वियरंति ॥ ४२

एत्थंतरे मणिरयणकिरणुज्जोइयभूरिभूसणाडंबरा सुचंगं[11]देवंगवसणंसुयनेवच्छा समाणं[12]वयवेसाहिं सहियाहिं किंकरीहिं य परिवुडा[13] समागया तमुद्देसं रिसिदत्ता। सा य तम्मि जणसंवाहे पलोयणोगासमलहमाणी समारूढा

---

१ नियंनियबफलयं. २ अकलं°. ३ °तरुणो. ४ बहूत्त°. ५ कुंतु. ६ वणेइ. ७ नि. ८ पुयहत्थ. ९ °ल्लाविय°. १० °यक्खेत्त°. ११ सुवंगं°. १२ समाणं°. १३ परिवुडा.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पच्चासन्नहट्टोवरिं, निच्चलनयणा पेच्छणाइ पलोइउं पवत्ता । तं दट्ठूण विम्हिय-हियएण भणियं रुद्ददत्तेण–'अहो छणपेच्छणयाणं वयंस! रम्मया, जेण गयणंगणागयाउ अच्छराओ नियच्छंति ।' तओ हसिऊण भणियं कुबेरदत्तेण–'किं दिट्ठाओ तए कहिंचि अच्छराओ जेण पच्चभियाणसि ।' इयरो भणइ–'न दिट्ठाओ, किंतु अत्थि जणप्पवाओ जहा "ता[ओ] अणमिसनयणाओ हवंति" । अणमिसनयणाओ एयाओ समासन्नहट्टोवरिं चिट्ठंति, तेण भणामि अच्छराओ । न एरिसं रूवं माणुसीए संभवइ ।' पुणो पवुत्तं कुबेरदत्तेण–

'गामिल्लओ कलिज्जसि अदिट्ठकल्लाणओ य तं मित्त! ।
जो माणुसि[1]-देवीणं रूवविसेसं न लक्खेसि[2] ॥ ४३
एसा इब्भस्स सुया नयरपहाणस्स उसभदत्तस्स ।
जा देवीसंकप्पं संपायइ माणसे तुज्झ ॥ ४४
एसा य विसालच्छी लच्छी व सुदुल्लहा अहन्नाणं ।
जम्हा न चेव लब्भइ कुलेण रूवेण विहवेण ॥ ४५
जो जिणसासणभत्तो रंजइ चित्तं इमीइ जणयस्स ।
सो सधणो अधणो वा लहइ इमं नन्नहा कहवि ॥ ४६
वत्थेहिँ भूसणेहि य कीरइ न गुणो इमीएँ देहस्स ।
भुवणं उज्जोयंती छाइज्जइ केवलं कंती ॥' ४७
एयं निसामयंतो तं चेव पुणो पुणो पलोयंतो ।
सहस त्ति रुद्ददत्तो विद्धो मयणस्स बाणेहिं ॥ ४८
परिभाविउं पवत्तो 'को णु उवाओ इमीए ला[प. २ B]भम्मि ? ।
न हु धारेउं तीरइ जीयं विरहम्मि[3] एयाए ॥ ४९
घेत्तुं बला न तीरइ एसा भडचडयरेण महया वि ।
सावगजणस्स भत्ते संपइरायम्मि[4] जीवंते ॥ ५०
जइ मग्गिऊण पुव्वं अलहंतो सावयत्तणं काहं ।
तो डंभिउ त्ति काउं नियमा इच्छं नं[5] साहिस्सं[6] ॥' ५१

[रुद्ददत्तस्स कवडसावगधम्मांगीकरणं]

एवमणेगहा परिचिंतिऊण नत्थि उवायांतरँ[7]मन्नं ति कयनिच्छओ गओ धम्मदेवसूरिसमीवं । कयप्पणामेण पुच्छिओ धम्मं । साहिओ तेहिं साहुधम्मो । पसंसिओ तेण, भणियं च–'अहो दुक्करकारया भगवंतो जेहिं एवंविहो कायर-

---

१ माणुस°. २ लक्खंसि. ३ विहरंगि. ४ तुला. ५ स. ६ साहिस्स. ७ उवायंतेरं°.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जणहिययउक्कंपकारओ दुरणुचरो[1] अंगीकओ समणधम्मो । कया पुण होही सो अवसरो जया अम्हे वि एरिसं धम्ममणुचरिस्सामो ? संपयं पुण करेह मे गिहत्थोचियधम्मोवएसेणाणुग्गहो' त्ति । साहूहिं भणियं –

'जिणपूया मुणिभत्ती जीवाइपयत्थ[2]सद्दहाणं च ।
पालणमणुव्वयाणं वाया(सावय ?) गहिधम्मतत्तमिणं ॥' ५२
सोउं सवित्थरमिणं दंसियसंवेगसाहसो – 'भंते ! ।
लद्धं जं लहियव्वं पत्तं मे अज्ज जम्मफलं ॥ ५३
माया[3] पिया य तुब्भे बाढं परमोवयारिणो मज्झ ।
जेहिँ इमो अइदुलहो[4] मोक्खपहो दंसिओ मज्झ ॥' ५४

तमेवं जाणिऊण संविग्गं, सिक्खावियं साहूहिं देवगुरुवंदणविहाणं, पच्चक्खाणपुव्वं सयलं सावयसमायारं । तओ सो सविसेस[5]दंसियसंवेगो विसिट्ठयरदेवपूयाइकिच्चं तहा काउमारद्धो जहा सव्वेसिं सावयाणं पहाणबहुमाणभायणं[6] संवुत्तो ।

अवि य –

'धन्नो महाणुभावो नूणं आसन्नसिद्धिगामि त्ति ।
जस्सेरिसो दुरप्पो (उदग्गो ?) समुज्जमो धम्मकिरियासु ॥' ५५
जणमणजणियच्छेरा उदारया सुट्ठु दाणधम्मम्मि ।
जिणसंघपूयण[7]इसु धणं तणाओऽवमं गणइ ॥ ५६
एवं पत्तपसंसो सगोरवं सावएहिँ दीसंतो ।
सो रुद्ददत्तसड्ढो जाओ सुवियक्खणो धम्मे ॥ ५७
पव्वेसु सयलसंघं पूयइ वत्थाइएहिँ वत्थूहिं ।
पडिलाभेइ सुविहिए दिणे दिणे पत्तभरणेण ॥ ५८
जिणसाहुसावयाणं चरियाइं विम्हिओ निसामेइ ।
सिंगारकहा[8]सु पुणो न देइ कन्नं खणद्धं पि ॥ ५९
अवि पाविज्जइ खलियं सुसंजयाणं सुसावयाणं पि ।
निउणेहिँ पंडिएहिँ[9] वि न तस्स मायापहाणस्स ॥ ६०

एवमाराहियइब्भपमुहसावयहिययस्स रुद्ददत्तस्स वोलिया गिम्ह [प. ३ A] पाउसा । समागओ निप्पन्नसयलसस्सासासियासेसकासयजणो वियसियकमलसंडमंडियमहिमंडलो पफुल्लमल्लियामालईपमुहपसत्थकुसुमुज्जलुज्जाणमणोहरो सर-

१ दुस्णुचारो. २ °पइत्थ°. ३ मायो. ४ °दुल्लहो. ५ सविसेसविसेसदं°. ६ °भावणं. ७ °पूइण°. ८ °कहास. ९ पडिएहिं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यसमओ । तमां[1]लोइऊण पुच्छिओ रुद्दत्तेण उसभदत्तो—'समागओ मम जणयं[2]एसो । तुम्हाणुन्नाए गच्छामि संपयं सट्ठाणं ।' इब्भेण भणियं—'जणय-समीवं[3] पट्ठियस्स को विग्घं करेइ ? तहा वि अम्ह धम्मे चेत्ता-ऽऽसोएसु चेइय-भवणेसु समब्भुयं[4]भूयाओ अट्ठाहियामहिमाओ कीरंति । ताओ[5] ताव पेच्छाहि, तओ जहिच्छमणुचेट्ठेज्जासि ।' तेण भणियं—'जमाइसह । एअमाइसं-तेहिं[6] भवंतेहिं कओ महंतो ममाणुग्गहो । कहमन्नहा अम्हारिसाणमेरिसमहूसव-दंसणं ति ।

धन्नो धन्नयरो हं साहम्मियसीह ! अज्ज मह तुमए ।
जं भवणनाहमहिमा निवेइया धम्मतिसियस्स ॥ ६१
जइ कहवि न साहिंतो गमणाभिप्पायमप्पणो तुज्झ ।
मन्ने कल्लाणाणं अहो अहं वंचिओ होंतो ॥ ६२
सा सा पभवइ बुद्धी हुंति सहाया वि तारिसा नूणं ।
जारिसया संपत्ती उवट्ठिया होइ पुरिसस्स ॥' ६३

इच्चाइणा कन्नसुहावहेण वयणविन्नासेणोसभदत्तस्स हिययमाणंदिऊण अच्छिउं पवत्तो रुद्दत्तो जाव अट्ठाहियामहिमा संपत्ता ।

तत्थ य ता पढमं चिय उक्कंठियमाणसेहिँ सव्वेहिं ।
पउणीकयं समग्गं जिणिंदं[10]भवणं तुरंतेहिं ॥ ६४
पढमं जिणबिंबाइं विहिणा विमलीकयाइँ सयलाइं ।
पवरेहिँ भूसणेहिं पसाहियाइं[11] जहो[12]जोगं ॥ ६५
ससहरपंडरकोट्टं बहुवन्नविचित्तचित्तरमणिज्जं ।
मणितारियाभिरामं पडिलंबिरमोत्तिओऊलं ॥ ६६
नाणाविहवत्थेहिं पट्टंसुयदेवदूसपमुहेहिं ।
कयउल्लोयं लोयं विम्हाविंतं समंतेण ॥ ६७
एयारिसमइरम्मं अमरविमाणं व कयजणपमोअं ।
इय विहियं जिणभवणं सहावरम्मं पि अहरम्मं ॥ ६८
तो रइया वरपूया जिणाण कुसुमेहिँ[13] पंचवन्नेहिं ।
बहुविह[14]वभत्तिसारा महुयरझंकार[15]सोहिल्ला ॥ ६९
तत्तो कुसुम[16]कुडीओ पडिमाण कयाउ परिमलड्ढाओ ।
कप्पूरागरुसाराउ धूवघडियाउ ठवियाओ ॥ ७०

---

१ तामा°. २ जाणया°. ३ °समीयं. ४ समभूय°. ५ तीओ. ६ पमाइअसंतेहिं. ७ °मप्पमाणो. ८ इवाणा. ९ पवन्नो. १० जिणिंदं°. ११ पमाहियाइं. १२ जया°. १३ कुसमेहिं. १४ °विहवु°. १५ °मंकार. १६ कुसम°.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सव्वत्थ विरइयाइं[1] फुल्लघराइं विचित्तरूवाइं ।
उड्डीकयपेच्छयजणमुहाइँ[2] भमरोलिमुहलाइं ॥ ७१
बहुवन्नएहिँ बहुभत्तिएहिँ बहुसत्थि [प. ३ B]एहिँ कयचोज्जं ।
रइयं जिणाण पुरओ सुट्ठु पहाणं वलिविहाणं ॥ ७२
खज्जगमोयगपमुहेहिँ[3] विविहभक्खेहिँ रइयसिहराइं ।
थालाइँ विसालाइं पुरओ णेगाइँ दिन्नाइं ॥ ७३
तह नालिकेरखज्जूरमुद्दियाअंबजंबपमुहाइं ।
विविहाइँ वणफलाइं पुरओ दिन्नाइँ धन्नेहिँ ॥ ७४
इय निम्माणे[4] रम्मे पूयाबलि[5]वित्थरे महत्थम्मि ।
हरिसुद्धुसियसरीरो मिलिओ लोओ तओ बहुओ ॥ ७५

गुमुँगुमिंतगहिरमद्दलं, वासंतकुसुमवद्दलं;
कीरंतकरडरडरडं, पयट्टपड्डुपडहपट्ट(ड ?)प्पडं;
वज्जंतसंखकाहलं, समुच्छलंतकंसालकोलाहलं;
भवियजणपावरयपमज्जणं, पारद्धं[7] भुवणनाहस्स मज्जणं;
चित्तेहिँ विचित्तेहिँ, उद्दामथुत्तेहिँ[8];
संजायतोसेहिं, गंभीरघोसेहिँ;
पच्छा वियड्ढेहिँ, त[······]सड्ढेहिँ;
पम्हुट्ठसोएहिं, साहम्मियलोएहिँ ।

जणजणियमहातोसो पए पए नच्चमाणवरगेज्जो ।
मज्जणमहो पयट्टो तिलोयनाहस्स वीरस्स ॥ ७६

कत्थइ विविहभूसणभासिणीओ नच्चंति विलासिणीओ;
कत्थइ गायंति[9] मंगलगीयाइं सोवासिणीओ;
कत्थइ लीलाए दिंति तालियाओ कुद्दंति रासयं कुलबालियाओ[10];
कत्थइ मंदमंदप्पणच्चिरीओ सुहवाओ दिंति चच्चरीओ ।

एवं वड्ढियकुड्डो बहुविच्छड्डो जणस्स सुहजणओ ।
विहिविहियसयलकिच्चो जिणनाह[11]महूसवो वत्तो ॥ ७७
कयसयलदिवसकिच्चो काऊण य जागरं महापूयं ।
पढमट्ठाहियकारी परितुट्ठो वासरे बीए ॥ ७८
साहम्मियाण पूयं करेइ तोसेइ[12] गायणाईए ।
समण-समणीण विहिणा विहेइ पडिलाहणं हिट्ठो ॥ ७९

---

१ विरइयाउ. २ °सुहाइं. ३ °पसुहेहिं. ४ निम्माण. ५ °वलि°. ६ गुमु°. ७ पारद्दं. ८ °थुत्तेहिं. ९ गाइंति. १० °बालिओ. ११ जिणनाण°. १२ तोसेय.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एवं सत्त तिहीओ विहियाओ अट्ठमे दिणे इब्भं ।
विन्नवइ रुद्दत्तो भालयलनिहित्तकरमउलो ॥ ८०
'तुब्भे धन्नसउन्ना महाफलं जम्मजीवियं तुम्ह ।
जे वीयरायमहिमं करेह एवं महासत्ता ॥ ८१
ता मह कुणसु[1] पसायं अट्ठममहिमं करेमि जहसत्ती ।
तुम्हाण पसाएणं करेमि नियजीवियं सहलं ॥' ८२
परिवड्ढियपरितोसो इब्भो पडिभणइ–'होउ एवं ति ।
गोरवठाणं अम्हं तुमाउ नऽन्नो मणे होइ ॥ ८३

किंतु–

अट्ठसयं दअ[......]लग्गं मोल्लेण पढमपूयाए ।
तत्तो सयसयवुड्ढी जाया सव्वासु[2] पूयासु ॥ ८४
तं कुणसु जहासत्तिं सेसं अम्हाण वच्छ ! साहेज्जं ।
तं चिय सफलं वित्तं जं वच्चइ तुम्ह[3] साहेज्जे ॥' [प. ४ A] ८५
इय वुत्तो सो[4] धुत्तो ईसि हसंतो भणेइ तं इब्भं ।
'तं होसु सुप्पसन्नो तो सव्वं सुंदरं होही ॥' ८६
इय भणिय गए तम्मी 'तओ वि अन्नो सुसावगो कत्तो ?' ।
इब्भस्स मणे फुरियं 'दिज्जउ एयस्स रिसिदत्ता[5] ॥' ८७
इय चिंतिऊण तुरियं पुच्छइ सूरिं परेण विणएण ।
'भयवं ! अहिणवसड्ढो पडिहासइ केरिसो तुम्ह ? ॥' ८८
इय पुट्ठो भणइ गुरू–'छउमत्था किं वयं वियाणामो ।
जत्तियमेत्तं तुब्भे जाणामो तत्तियं अम्हे ॥ ८९
दीसइ अणन्नसरिसो सव्वो एयस्स धम्मववहारो ।
परमत्थं पुण सावय ! मुणंति सवन्नुणो च्चेव ॥' ९०
अह अट्ठमम्मि दिवसे पूया सव्वायरेण तेण कया ।
तीयचउविहा[6] जाओ सत्तसु पूयासु जावइओ ॥ ९१
दीणारकयसिहाइं थालाइं सत्थिएसु ठवियाइं ।
जाइं दट्ठूण पुणो सव्वो वि हु विम्हयं पत्तो ॥ ९२

[रुद्दत्तस्स रिसिदत्ताए सह परिणयणं]

अइविम्हिएण तत्तो इब्भेण सुसावया समाहूया ।
भणिया य–'एस तुम्हं नवसड्ढो केरिसो भाइ ? ॥' ९३

---

१ कुणस. २ सव्वीसु. ३ तम्ह. ४ सा. ५ रिसिदत्तौ. ६ °चउविह.

नम० २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एगेण तत्थ भणियं–'अम्हे पुव्वं पमाइणो आसि ।
एयस्स सन्निहाणा संपइ सुस्सावया[1] जाया ॥' ९४
अन्नेण पुणो भन्नइ–'धणवइ ! सब्भावसावओ एसो ।
किं जंपि[ए]ण बहुणा न हु दुद्धे[2] पूअरा[3] हुंति ॥ ९५
कवडेण किं कयाई इत्तियदव्वस्स कीरए चाओ ? ।
पज्जालिऊण भुवणं को किर उज्जालयं कुणइ ? ॥' ९६
इच्चाइ जंपियाइं निसुणंतो सावयाण सव्वेसिं ।
जाओ कन्नादाणे निच्छियचित्तो इमो इब्भो ॥ ९७
निप्पाइया य तत्तो चरिमा अट्ठाहिया[4] महामहिमा ।
इब्भेण तो तयंते निमंतिया सावया सव्वे ॥ ९८
सम्माणिऊण बहुहा सपुत्तसयणेण उसभदत्तेण ।
सो रुद्दत्तसड्ढो एवं भणिओ सबहुमाणं ॥ ९९
'उत्तमकुलप्पसूओ कलाकलावम्मि सुट्ठु कुसलो त्ति ।
जिणसासणभत्तीए अम्हं साहम्मिओ[5] जाओ ॥ १००
जा जा कीरइ पूया उत्तमसाहम्मियस्स तुह अम्हे ।
सा सव्वा वि हु तुच्छा पडिहायइ अम्ह चित्तम्मि ॥ १०१
ता परिगिन्हसु इन्हिं कन्नारयणं इमं अणग्घेयं ।
जीवियसव्वस्स इमं अम्हाणं तह य सयणाणं ॥' १०२
पडिभणइ रुद्दत्तो–'को वयणं[6] तुम्ह अन्नहा कुणइ ? ।
किं पुण मायावित्ते पुच्छिय जुत्तं[7] इमं काउं ॥' १०३
इब्भेण पुणो भणियं–'मा गिण्हालंबणं इमं अलियं ।
जणएण लाभकज्जे जम्हा इह पेसिओ तेसिं ॥ १०४
एसो परमो लाभो एयं दट्ठुं न रूसिही[8] जणओ ।
घरमायंती लच्छी सुहावहा कस्स नो होइ ? ॥' [प. ४B] १०५
'एवं' ति तेण वुत्ते[9] कारियमिब्भेण हट्ठतुट्ठेण ।
लग्गे गणयविदिन्ने विवाहकिच्चं निरवसेसं ॥ १०६
आणंदियसयलजणो वित्ते वीवाहमंगले तुट्ठो ।
हिययम्मि रुद्दत्तो संपुन्नमणोरहो[10] जाओ ॥ १०७
ठाऊण केइ दियहे सबुद्धिकोसल्लरंजिओ धणियं ।
तं रिसिदत्तालाभं मन्नंतो रज्जलाभं व ॥ १०८

१ सुसावया. २ दुद्धे. ३ पुंअरा. ४ अडाहिया. ५ साहम्मिम्मिओ. ६ वणयणं. ७ सुत्तं. ८ रसिही. ९ वुत्तो. १० °मणोहरो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्तो पसत्थदिवसे संभासियसयणपरियणं सयलं ।
ससुरकुलाणुन्नाओ संचल्लो नियपुराभिमुहो[1] ॥ १०९
संभासिया य पिउणा रिसिदत्ता नेहनिब्भरमणेण ।
'सयलसुहमूलभूए सम्मत्ते निच्छिया होज्ज ॥ ११०
चियवंदणसज्झाए पच्चक्खाणम्मि उज्जुया होज्ज ।
सुद्धे[2] सुसीलविणीया दयालुया सव्वजीवेसु ॥ १११

जह सायरमज्झगओ पोयं मोत्तूण मंदबुद्धिल्लो ।
जलहिम्मि दिन्नझंपो होइ नरो दुहसयाभागी ॥ ११२
तह भवसायरमज्झे जिणमयपोयं सुदुल्लहं मुद्धे ! ।
मा मुंचसु जेण न होसि भायणं दुक्खलक्खाणं ॥' ११३
एवं बहुप्पयारमणुसासिऊण [................] ।
भडवंचिया(?) सपरियणेणोसभदत्तेण रिसिदत्ता ॥ ११४
जामाउगो वि भणिओ – 'चिंतामणिकप्पसालसारिच्छं ।
जिणधम्मं मा मुंचसु कल्लाणपरंपराहेऊ ॥ ११५
साहम्मिणि तुह एसा धम्मसहाओ इमीइ तं होज्ज ।
मुद्धजणोहसणाओ मा मुंचसु धम्मबोहित्थं ॥' ११६
इयरेण सो पवुत्तो – 'भरियं उयरं गुरूवएसेणं[3] ।
दिट्ठं निसुणेसु पुणो अहयं काहं जमेत्ताहे ॥ ११७
मा कुण इमीएँ चिंतं नासीभूँया[4] इमा ममेयाणिं ।
तह काहामि जहेसा न सरइ करिणी[5] व विंझस्स ॥' ११८
एवं कयसंभासो सहायसहिओ इमो[6] समुच्चलिओ ।
उचियसमएण तत्तो संपत्तो कूवचंद्रम्मिँ[7] ॥ ११९

[रिसिदत्ताए ससुरगिहे गमणं, सधम्मा परिब्भंसो य]

चिरकालाओ मिलिओ उक्कंठियमाणसाण सयणाण ।
लज्जाएँ नेय गेण्हइ नामं पि जिणिंदधम्मस्स ॥ १२०
रिसिदत्ता वि हसिज्जइ कुणमाणी पूयवंदणाईयं ।
जणएण विदिन्नाणं मणिकंचणघडियपडिमाणं ॥ १२१
सासूयं पिव भणिया सासु-नणंदाहिँ सा वि पुणरुत्तं ।
'जइ चिट्ठसि अम्ह गिहे ता मुंचसु अप्पणो धम्मं ॥ १२२

---

१ °राभिसहो. २ सुब्बु. ३ °एसण. ४ नासइ°. ५ करणी. ६ इमी. ७ °चंद्रम्मि.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भत्तारदेवयाओ नारीओ होंति जीवलोगम्मि ।
जं किं पि कुणइ भत्ता ताओ वि कुणंति तं धम्मं ॥ १२३
अम्हाण वि धूयाओ णेगाओ संति सावयकुलेसु ।
ताओ सावयधम्मं कुणंति अम्हे न रूसामो ॥' १२४
एसो पुण वुत्तंतो रिसिदत्ताए वि भत्तुणो सिट्ठो ।
तेणावि तओ भणियं दंसियनेहं इमं वयणं ॥ १२५
'इट्ठा सि मज्झ सुंदरि! जीवियभूया सि सुणसु म[ह] वयणं ।
सयणाणं लज्जाए[1] न हु तीरइ पालिउं धम्मो ॥ [प. ५ A] १२६
तुह कज्जे मइँ धम्मो परिचत्तो ताव तित्तियं कालं ।
मम कज्जेण पुणो तं न चयसि किं दिट्ठचेट्ठा[2] वि ॥ १२७
एयं घरसवस्सं सवं पि समप्पियं मए तुज्झ ।
को जाणेइ किसोअरि! को धम्मो सुंदरो नो वा[3] ॥' १२८

तओ सा किंचि तस्सँ[4] नेहाओ, किंचि सासुय-नणंदा[ण] भयाओ, किंचि उवहासलज्जाए, किंचि अप्पसत्तयाए पम्हुसिऊण जणयवयणं परिचत्तजिणसासणकिच्चा[5] तेसिं चेव अणुट्ठाणं काउमारद्धा ।

अवि य –

किच्छेण [ए]स जीवो ठाविज्जइ उत्तमे गुणट्ठाणे ।
लीलाए च्चिय निवडइ किच्छे मिच्छत्तपंकम्मि ॥ १२९
जिणधम्ममयंभूयं काउं को रमइ तुच्छमिच्छत्ते ।
जइ ता पुवकयाइं न होंति कम्माइँ गरुयाइं ॥ १३०
पुवज्जियपाववसा अमयं वमिऊण तेहिँ दोहिं पि ।
हालाहलं महाविसमापीयं मूढचित्तेहिं ॥ १३१

[पीइगिहाओ रिसिदत्ताए संबंधविच्छेओ, पुत्तजम्मं च]

मग्गंतेण पउत्तिं विन्नायं सवमेवमि[6]भेण ।
सिट्ठं च बंधवाणं – 'मुट्ठा भो! तेण धुत्तेण ॥ १३२
कन्नालाभनिमित्तं सुसावगत्तं पयासियं तेणं ।
पेच्छ कह सयलसंघो वि मोहिओ गूढहियएण ॥ १३३
धम्मच्छलेण छलिया अम्हे निउणा वि तेण पावेण ।
ता सच्चमिणं जायं धुत्ताण वि होंति पडिधुत्ता ॥ १३४

---

१ महाए. २ दिट्ठवेहा. ३ नेव. ४ त्तस्स. ५ °किंचा. ६ सव्वमि°.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निद्धम्मकुलप्पसुओ[1] पावो सो ताव तारिसो होउ ।
बालत्तगहियधम्मा चुक्का[2] कह पिच्छ रिसिदत्ता ॥ १३५
सच्च[3]मिणं सा वरई[4] दिन्ना अम्हेहिँ तस्स पावस्स ।
तहवि कुलागयधम्मो तीए न हु आसि मोत्तव्वो ॥ १३६
ता इत्थ इमं जुत्तं तीए तत्ती न काइ कायव्वा ।
सा पुव्वं पि न जाया मया य सव्वेहिँ दट्ठव्वा ॥ १३७
जो पुण तीसे तत्तिं[5] काही अम्हाण सो वि तत्तुल्लो ।
इय साहियम्मि तत्ते मा अम्हं को वि कुप्पिज्जा ॥' १३८

किं बहुणा ?–

तह सा चत्ता तेहिं जह किर नगराणमंतरं तेसिं ।
जोयणदुगमेत्तं पि हु संजायं जोअणसयं च ॥ १३९

तओ 'जो पुव्विं गहियपाहुडे पइँ[6]दियहं मम पउत्तिनिमित्तं पुरिसे पेसंतो सो संपइ मासाओ वासाओ वि न पेसइ' त्ति मुणियजणयकोवाइसया किंकायव्व[7]मूढा कालं गमेउमारद्धा रिसिदत्ता, जाया य कालेण आवन्नसत्ता । तओ दूय[8]पेसणेण भणिओ तीए ताओ–'कीसाहं तुब्भेहिं परिचत्ता ? । तुब्भेहिं चेव अहमत्थ मिच्छत्तपंके पक्खित्ता । ता खमसु मम एगमवराहं । नेहि ताव गिहं । तत्थ-ट्ठिया आएसकारिणी चिट्ठिस्सामि । अन्नं च सव्वाओ विलयाओ पढमं पिइगि-हेसु पसवंति, ता कह लोयावन्नवायाओ न बीहेसि ? ।' इच्चाइ बहुहा भणिए-[प. ५ B]ण पडिभणियमिब्भेण–

'जप्पभिइ च्चिय तुमए धम्मो चत्तो जिणिंदपन्नत्तो ।
तप्पभिइ च्चिय अम्हं मया तुमं किमिह बहुएण ॥' १४०
सोऊण जणयवयणं सुइरं परिझूरिऊण हिययम्मि ।
जाया मणे निरासा संठवइ पुणो वि अप्पाणं ॥ १४१
जाओ कमेण पुत्तो[9] बहुलक्खणसंगओ कणयगोरो ।
नियकुलजणियाणंदो तुट्ठा दट्ठूण तं माया ॥ १४२
सोऊण सुयं जायं कयाइ तूसेज्ज[10] मज्झ[11] जइ जणओ ।
इय पेसेइ तुरंती वद्धावयमाणवं पिउणो ॥ १४३
इब्भेण सो पवुत्तो–'ऽवरस्स वद्धावओ तुमं होसु ।
अम्हाण नत्थि धूया रिसिदत्तानामिया कावि ॥' १४४

१ °प्पसूओ. २ चुड्डा. ३ सव्वमि°. ४ विरई. ५ तत्ती. ६ पयदि°. ७ °काइव्व°. ८ दूया°. ९ पत्तो. १० त्तसेज्ज. ११ मस.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एवं च नामकरणे बुद्धावण-मुंडणाइपव्वेसु ।
आहूओ वि न पत्तो कुलगेहाओ मणूसो वि ॥ १४५
तं चेव बालयं तो हियए आलंबणं दढं काउं ।
परिवालिउं पवत्ता एसा एगग्गचित्तेण ॥ १४६

[नम्मयासुंदरीजम्मवण्णणा]

अह वड्ढमाणनयरे जिट्ठाए उसभदत्तसुण्हाए ।
नामेण गुणेहिँ य सुंदरीएँ[1] सहदेवभज्जाए ॥ १४७
उववन्नो कयपुन्नो को वि जिओ सुंदरो [······] गब्भे[2] ।
धणियं धम्मज्झाणे यँ[3] उज्जमा(या ?) जेण संजाया ॥ १४८
परिवड्ढियलायन्ना इट्ठा पइणो सपरियणस्सावि ।
ससुरस्स सासुयाए सा जाया तो विसेसेण ॥ १४९
नवरं पंचममासे संजाओ तीएँ दोहलो एसो ।
नम्मयँ[4]महानईए गंतूण करेमि मज्जणयं ॥ १५०
सा पुण पगिट्ठदेसे गंतुं तीरइ सुहेण नो तत्थ ।
कज्जमसज्झं नाउं द[इ]यस्स वि सा न साहेइ ॥ १५१
झिज्झइ[5] अपुज्जमाणे डोहलएँ सयलमंगमेईए ।
तत्तो तं सहदेवो दट्ठूणं पुच्छए एवं ॥ १५२
'किं सुयणु ! तुह मणिट्ठं संपज्जइ नऽम्ह मंदिरे किंचि ।
किं केणइ परिभूआ बाहइ किं कोइ तुह रोगो ? ॥ १५३
जेणेवं छउयंगी दरिद्दघरिणि व्व नज्जसि सचिंता ।
साहेहि फुडं मुद्धे ! जेण पणासेमि ते दुक्खं ॥' १५४
तीए भणियं – 'पियमय ! असज्झमेयं न साहिमो तेण ।
वरमेगा हं झीणा[6] किं तुह उव्वेयकरणेण ? ॥' १५५
सहदेवेण पवुत्तं – 'नासज्झं मज्झ विज्जइ जयम्मि ।
ता कहसु फुडं अग्घं को जाणइ थवि(गि?)यरयणाई(णं ?)' ॥ १५६
इय वुत्ताए ताए सब्भावो साहिओ तओ तेण ।
भणियं – 'कित्तिय[7]मेत्तं निव्वुयहियया दढं होसु ॥' १५७
आपुच्छिऊण जणयं भणिया सव्वे वयंसया[8] तेण ।
'तुरियं करेह कडयं गच्छामो नम्मयं दट्ठुं ॥' १५८

१ °ए वि सह°. २ गब्भो. ३ °णे जाय उ°. ४ नम्मइ°. ५ सिज्झइ. ६ पीणा. ७ कित्तेय°. ८ वियंसया.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भणियाणंतरमेव य पमोयभरनिब्भरेहिं तेहिं पउणीकयाइं जाणवत्ताइं, गहियाइं अणेगाइं कयाणगाइं, सहाईकओ नाणाविहपहरणविहत्थो सुहडसत्थो । चालियाओ बहुविहाओ [प. ६ A] पयईओ । समुच्छाहिया गंधव्वनट्टकारया चारणगणा । पयट्टा कोउगावलोयणलालसा सयमेव पभूया लोया । तओ पसत्थवासरे कयकोउयमंगला परिवारपरिवारिया पवड्ढंतपमोयउद्धुरेहिं[1] बंधवेहिं सपुत्तकलत्तेहिं मेत्तेहिं सहिया चलिया दो वि सहदेव-वीरदासा[2] । कहं ?

गंभीरतूरघोसपडिसद्दपूरियनहंगणा, बहलधूलीपडलधूसरियपेच्छयजणा;
वज्जंतसंखकाहला, वणे वणे पलायमाणपुलिंदनाहला;
गामे गामे पलोएज्जमाणा गामिएहिं, गोरविज्जमाणा गामसामिएहिं;
कुणमाणा महब्भुयभूयाओ पूयाओ जिणिंदाणं गामनगरेसु, अट्टया(?)–

विलंविएहिं पयाणएहिं सुत्थीकयसमत्थसत्थिया सुहंसुहेण संपत्थिया । पत्ता कमेण नाणावणराइरमणीयं रेवासन्न[3]भूमिभागं । परितुट्ठा[4] य सुंदरी दट्ठूण बहल[5]तरंगरंगंतकुंचकारंडव[6]हंससारसाइविहंगसंगसंपत्तरम्मयं महा[नइं ?] नम्मयं ।

आवासिओ य सव्वो कडयजणो हरिसनिब्भरो तत्थ ।
सहदेवसमाएसा भूभाए सग्ग[7]रमणीए ॥ १५९

वीयदिणम्मि सदारा कयसिंगारा मणोहरायारा ।
मज्जणकीलाहेउं रेवातीरं गया सव्वे ॥ १६०

पेच्छंति तयं सरियं महल्लकल्लोलभीसणायारं ।
कत्थइ अन्नत्थ तरंगभंगुरं सुप्पसन्नं च ॥ १६१

कत्थइ गहिरावत्तं कत्थइ कीलंततारुयनरोहं ।
कत्थइ मज्जंतमहागयंदमयसुरहिजलवाहं ॥ १६२

विंझगिरिपायपायवपगलियघणकुसुमगोच्छचिंचइयं ।
अवियण्हलोयणाओ थिरोदयं तं दहं दट्ठुं ॥ १६३

हरिसेण तं पविट्ठा उब्बुडनिब्बुड्डणेण कयहासा ।
विलसंति ते सहेलं सम्मं महिलाहिँ परितुट्ठा ॥ १६४

सिंगियजलेण केई[8] पहणंति परोप्परं पहासिल्ला ।
अन्ने हरियंदणपंडियाहिँ हम्मंति महिलाणं ॥ १६५

परिकीलिऊण सुइरं संपत्तपरिस्समा समुत्तिन्ना ।
तत्तो महद्दहाओ करिंति जिणबिंबपूयाइं ॥ १६६

---

१ °उद्धरेहिं. २ °दसो. ३ °सवन्न°. ४ पडितुट्ठा. ५ छहल°. ६ °कारंज्झव°.
७ मग्ग°. ८ कीइ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अइसयपमोयपडिहत्थमाणसा सुंदरी विसेसेण ।
कुणइ पडिमाण पूयं पडिपुन्नमणोरहा जाया ॥ १६७

एवं दियहे दियहे कीलंताणं अतित्तचित्ताणं ।
पोसदिवसो व्व सहसा मासो समइच्छिओ तेसिं ॥ १६८

[नम्मयानईतीरे नम्मयपुरनिवेसो]

नाणादेसाहिंतो कडयं आवासियं निएऊण ।
विविहकयाणगकलिया पत्ता णेगे तहिं वणिया ॥ १६९

कयविक्कओ[1] पवत्तो दिणे दिणे सयलकडयलोयस्स ।
कयपरिओसो लाभो मणोरहागोयरो जाओ ॥ १७०

संलवियं च जणेहिं—'कयउन्नो को वि सुंदरीगब्भे ।
जस्स कएणऽम्हाणं[2] पवड्डिया[3] संपया एसा ॥' १७१

अन्ने भणंति—'बलियं[4] वत्थू एयस्स भूमिभाग[प. ६ B]स्स ।
नयरनिवेसं काउं चिट्ठह भो किं न[5] एत्थेव ? ॥ १७२

किं तत्थ वड्डमाणे[6] मुंडा(?) अम्हाण रोविया वाडा ।
चिट्ठंति जेण गम्मइ[7] सुरलोयसमं इमं मोत्तुं ॥' १७३

उवलद्धजणाकूओ सहदेवो सुंदरिं[8] तओ भणइ ।
'चिट्ठामो किं भद्दे ! रम्मम्मि इहेव ठाणम्मि ॥' १७४

तीए भन्नइ—'पिययम ! रेल्लंतमहंतलोलकल्लोलं ।
पिच्छंतीए एयं ममावि मणनिव्वुई जाया ॥ १७५

ता जइ रोचइ तुम्हे कुणह निवेसं इहेव ठाणम्मि ।
किर सव्वन्न लोओ जुत्ताजुत्तं फुडं मुणइ ॥' १७६

तओ सहदेवेण वीरदासेण सद्धिं[9] समच्छिऊण पसत्थवासरे पारद्धो नयरनिवेसो—ठावियाइं वत्थुविज्जावियक्खणेहिं सुत्तहारेहिं तियचउक्कचच्चराइं, संठावियाओ जहाजोगं पासायभवणपंतीओ, आहूओ सव्वेहिं पि नियनियकुडंबपरिगरो, कारियं च सुरिंदमंदिरसुंदरं जिणमंदिरं, दिन्नं च नामं नयरस्स नमयपुरं ति । किं बहुणा ?—

विन्नायसयलवत्तो संजुत्तो सयलसयणवग्गेणं[10] ।
सेट्ठी वि उसभदत्तो तुरियं तत्थेव संपत्तो ॥ १७७

---

१ °विक्कए. २ न्हाणं. ३ पवड्डिया. ४ वलियं. ५ किन्न. ६ वड्डमाणा. ७ गम्मई. ८ सुंदरी. ९ सिद्धि. १० °वग्गेण.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain, Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करभरविवज्जियाणं[1] अपीडियाणं परेण केणावि।
वच्चइ सुहेण कालो जणाण सग्गे सुराणं व॥ १७८

अह वट्टंते चंदे गहबलजुत्तम्मि सुंदरे लग्गे।
सा सुंदरी पसूया धूयारयणं कमलनयणं॥ १७९

पढमो अवच्चलाभो पुत्तऽब्भहिया य वालिया एसा।
इय पुत्तजम्मणम्मिव वद्धावणयं कयं पिउणो[2]॥ १८०

सयलो वि नगरलोगो जंपइ आणंदपुलइयसरीरो।
'धन्नाण इमा वाला लच्छि व्व [घ]रे समोइन्ना॥' १८१

छट्ठीजागरणाई किच्चं सयलं पमोयकलिएहिं।
जणएहिँ तीएँ विहियं पढमम्मिव पुत्तजम्मम्मि॥ १८२

वत्तम्मि वारसाहे सयणसमक्खं [च?] सुहमुहुत्तम्मि।
गेज्जंतगीयमंगलमविरयवज्जंतवरतूरं॥ १८३

जं नम्मयसरियामज्जणम्मि जणणीएँ डोहलो जाओ।
तं होउ नम्मयासुंदरि त्ति नामं वरमिमीएँ[3]॥ १८४

अइसुंदरनाममिमं पस्सइ सव्वो वि पुरजणो मुइओ।
पुन्नब्भहिओ जीवो किर कस्स न वल्लहो होइ॥ १८५

हत्थाहत्थं घिप्पइ जणेण अन्नोन्नपेल्लणपरेण।
वड्ढइ वड्ढियकंती सियपक्खे चंदलेह व्व॥ १८६

वोल्लाविज्जइ पिउणा पंचनमोक्कारभणणकुड्डेण।
देवगुरूण पणामं सिक्खाविज्जइ हसिरवयणा॥ १८७

सव्वस्स चेव इट्ठा विसेसओ वीरदासलहुपिउणो।
चीवंदणाइकिच्चं पढमं सिक्खाविया तेण॥ १८८

नारीजणोच्चियाइं विन्नाणाइं तओ वि चउसट्ठी।
तओ [य] समप्पिया साहुणीण सम्मत्त[5][प. ७ A]नाणट्ठा॥ १८९

जीवाइनवपयत्था नाया तीए विसुद्धपन्नाए।
पढियाइँ पगरणाइं वेरग्गकराइँ णेगाइं॥ १९०

सरमंडलाभिहाणं तीए कुड्डेण पगरणं पढियं।
नर-नारीण सरूवं गुणागुणे जेण नज्जंति॥ १९१

गिण्हइ सुहेण जं जं सुणेइ पाएण एगसंघातं।
पम्हुसइ नेव गहियं तहावि पढणुज्जमो तीसे॥ १९२

---

१ °भरतिविजियाणं. २ पिउणो. ३ वरममीए. ४ चढिय°. ५ समत्थ°.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सो वि महेसरदत्तो रिसिदत्तानंदणो निययपिउणा।
बावत्तरीकलाओ पढाविओ लोगपयडाओ॥ १९३

[नम्मयासुंदरीरूववण्णणा]

अह नम्मयापुराओ केई वणिया कयाणगमपुव्वं।
घेत्तूण लाहहेउं संपत्ता कूवचंद्रम्मि॥ १९४
रिसिदत्ताए पुट्ठा–'नम्मयपुरवासिणो फुडं तुब्भे।
तो उसभदासमिब्भं परियाणह निच्छयं नो वा?॥ १९५
सहदेव-वीरदासा तस्स सुया विस्सुया पुहइवीढे।
ते परियाणह तुब्भे तह तेसिं पुत्तभंडाइं?॥' १९६
हसिऊण तेहिँ भणियं–'चंदं गुरुसुक्कसंगयगयाणं।
को न वियाणइ सुंदरि! जं भणियव्वं तयं भणसु॥' १९७

तीए भणियं–

'नम्मयं[1]सुंदरिनामा सुवइ सहदेववल्लहा धूया।
वयरूवाइं तीसे जइ जाणह तो फुडं कहह॥' १९८

वणिएहिं वुत्तं[2]–

'तारुन्नयकयसोहं तीसे रूवं न वन्निउं सक्का।
वन्नंताणं नियमा अलियपलावत्तणं होइ॥ १९९
जइ सुंदरि! भासेमो[3] छत्तं पिव मेहडंबरं सीसं।
ता सीमंतयसोहा तीसे वि निवारिया होइ॥ २००
छणचंदसमं वयणं तीसे जइ साहिमो सुय[णु!] तुज्झ।
तो तक्कलंकपंको तम्मि समारोविओ होइ॥ २०१
संबुक[4]समं गीवं रेहातिगसंजुयं[5] त्ति जइ भणिमो।
वंकत्तणेणं[6] सा दूसिय त्ति मन्नइ जणो सव्वो॥ २०२
करिकुंभविब्भमं जइँ[7] तीसे वच्छत्थलं च जंपामो।
तो चम्मथोरयाफाससफरुसया ठाविया होइ॥ २०३
विल्लहलकमलनालोवमाउ बाहाउ तीएँ जो कहइ।
सो तिक्खकंटयाहिट्ठियत्तदोसं पयासेइ॥ २०४
किंकिल्लिपल्लवेहिं तुल्ला[8] करपल्लवि त्ति बितेहिं[9]।
नियमा निम्मलनहमणिमंडणयं होइ अंतरियं॥ २०५

---

१ नम्मइ°. २ °व्वुत्तं. ३ भासेसो. ४ संवुक्क°. ५ °इगमंजुय. ६ पंकत्तणेण. ७ नइ. ८ तुज्झ. ९ वितेहिं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जइ भासिज्जइ तीसे रंभाथंभोवमाउ जंघाओ ।
ता किर तासिमवस्सं असारया होइ वज्जरिया ॥ २०६
कीरंते चलणाणं कुम्मुवमाणम्मि वुहजणो[1] भणिही ।
निम्मंसकक्खडाणं नणु तेसिं केरिसी सोहा ? ॥ २०७
जं जं तीसे अंगं वन्नेमो तस्स तस्स भुवणम्मि ।
नत्थि समं उवमाणं कह तीए वन्निमो रूवं ॥ २०८
सग्गम्मि अच्छरा जइ तीए तुल्ला इमं न वत्तव्वं ।
जं सा विलोलनयणा इयरीओ[2] थद्धं[3]दिट्ठीओ ॥' २०९

[रिसिदत्ताए सपुत्तकये नम्मयासुंदरीमग्गणा]

[ए]वं वणिएहिं वन्निज्जमाणं नम्मयाए निरुवमरूवं[4]संपयं निसामयं[प. ७B]ती चिंतिउं पवत्ता रिसिदत्ता 'कह नाम तं कन्नारयणं महेसरदत्तस्स करे विलग्गिही[5] ? न ताव ताओ असाहम्मियस्स दाही । पडिवन्नसावगधम्मस्सावि दिट्ठजणयचरिया ते न पत्तियंति । एगवारमेव कट्ठमयथालीए रज्झइ । को दिट्ठतक्करेहिं अप्पा मोसेइ ? न चाहं[6] तत्थ गया दंसणमवि लहिस्सं । ताव पेसेमि पडिवत्तिवयणकुसलं कं पि दूयं ति । मा कया[इ] समागयकारुन्नभावा ते पसीयंति' एवं संपहारिऊण पेसिओ तीए पडिवत्तिवयणकुसलो विसिट्ठ-पुरिसो । संपत्तउचियसम्माणेण य भणिओ तेण इब्भो–'ताय ! अबलाओ अबलाओ चेव हुंति, विसेसओ ससुरकुलगयाओ । जओ–

एगत्तो रडइ पई एगत्तो सासुया य परिसवइ ।
दूमंति नणंदाओ रूसइ सेसो वि कुललोगो ॥ २१०
परऽहीणाणं ताणं नियधम्मो तह य कह णु निव्वहइ ।
को किर रिसिदत्ताए दोसो सम्मं विभावेह ॥ २११
अणुतावग्गिपलित्ता अवराहं अप्पणो खमावेइ ।
मग्गइ धम्मसहायं सा नम्मयसुंदरीकन्नं ॥ २१२
काही जिणवरधम्मं तीए संगेण नत्थि संदेहो ।
एस महेसरदत्तो कुणह इमं पत्थणं तीए ॥' २१३
इब्भेण तओ भन्नइ–'पत्तिज्जामो न तस्स धुत्तस्स ।
जेण तया डंभाओ सव्वजणो[9] विम्हयं नीओ ॥ २१४
जारिसओ सो जणओ तणएण वि तारिसेणं होयव्वं ।
न कयावि अंबगुलिया निवडइ पासम्मि निंबस्स ॥ २१५

१ पुहजणो. २ इइयरीओ. ३ घट्टदि°. ४ °रूवंसं°. ५ विलग्गाही. ६ याहं. ७ °भाता. ८ स. ९ °जणं. १० भारिसेण.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एगं ता रिसिदत्ता अणवरयं दहइ माणसं अम्ह ।
ता जाणंता वीयं न पक्खिवामो तहिं अम्हे ॥' २१६

एवं बहुप्पयारं भणिओ रुद्देण सत्थवाहेण ।
दूओ[1] विलक्खहियओ गओ निरासो नियं ठाणं ॥ २१७

सोउं दूयमुहाओ सयणुल्लावं सिणेहनिरविक्खं ।
'हा सव्वहा वि चत्ता[2] नियपिउणा पावकम्मा हं ॥' २१८

इय सा विमुक्ककंठं रिसिदत्ता रोविउं तह पवत्ता ।
कारुन्नपुन्नहियओ अन्नो वि जणो जह परुन्नो ॥ २१९

आसासिऊण बहुसो भणिया सा नंदणेण-'किं अम्मो ! ।
किं रुअसि अणाहा इव कहेहि दुहकारणं मज्झ ॥' २२०

तीए भणियं-'पुत्तय ! तुह पिउणा[3] डंभिएण होऊण ।
परिणित्तु इहाणीया चयाविया तह य जिणधम्मं ॥ २२१

उज्झियजिणधम्माए चत्ता वत्ता वि मज्झ सयणेहिं ।
आसानडियाएँ ममावि वोलिओ एत्तिओ कालो ॥ २२२

अत्थी उत्तमरूवा दुहिया तुह माउलस्स मे णिसुयं ।
सा दूयपेसणेणं तुह कज्जे जाइ[या] वच्छ ! ॥' २२३

सा ताव न लद्ध च्चिय मह पिउणा निट्ठुरं तहा भणिओ ।
पुत्तऽसहिएण दूओ जहा निरासा अहं जाया ॥ २२४

अणुरूवा तुह पुत्तय ! जइ सा हत्थे न लग्ग[प. ८ A]ई बाला ।
किं जीविएण ता मह इय दुक्खाओ मए रुन्नं ॥' २२५

तेण पवुत्तं-'अम्मो ! कयावराहाण किमिह रुन्नेण ।
कुवियसयणेहिँ विहिओ[4] सहियव्वो परिभवो[5] सव्वो ॥ २२६

अन्नं च-

कारणवसेण कुविया वि सज्जणा मंगुलं न चिंतंति ।
विहडंति[6] नेव वसणे जो उ परो सो परो चेव ॥ २२७

जइ तुज्झ इमं दुक्खं ता हं गंतूण तं विवाहेमि ।
अवराहविरहिओ हं न कोवहेऊ जओ तेसिं ॥ २२८

कुविओ वि दढं ताओ विणीयवयणस्स तूसिही मज्झ ।
पज्जलइ नेव जलणो सिच्चंतो वारिधाराहि ॥' २२९

---

१ हूओ. २ चित्ता. ३ पिउणो. ४ वहिओ. ५ परिभावो. ६ विहडुंति.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीए वुत्तं–'पुत्तय! माइण्हियमोहिओ जणो पायं।
परिहरइ दूरउ च्चिय महासरं नीरपडिपुन्नं॥ २३०

विणएण य चाएण य तुह पिउणा रंजिओ जणो तइया।
सब्भावविणीयस्सं[1] वि पत्तियइ कहं तओ ताओ?॥' २३१

भणियमियरेण–'अम्मो! पेच्छाहि ममावि ताव कोसल्लं।
आइससु जेण तुरियं पूरेमि मणोरहा तुज्झ॥' २३२

पडिभणइ तो हसंती रिसिदत्ता–'पुत्त! होउ तुह सिद्धी।
समणुन्नाओ सि मए होउ सिवं मंगलं तुज्झ॥' २३३

[महेसरदत्तस्स मायामहगिहगमणं]

आपुच्छिऊण जणयं महया सत्थेण सो तओ चलिओ।
पत्तो कमेण तत्तो अइरम्मं नम्मयानयरं॥ २३४

तओ नयररम्मयाविम्हियमणेण वहिरुज्जाणे संठिएणेवं[2] पेसिओ जाणावणत्थं मायामहस्स समीवं पुरिसो। तेणावि सपुत्तपरियणो सुहनिसन्नो[3] पणमिऊण भणिओ सत्थवाहो–'एस तुम्ह नंदणीनंदणो मायामहस्स दंसणुक्कंठिओ विविहभंडभरियजाणवाहणो समागओ महेसरदत्तो, विन्नवेइ[4] य–"दंसेह कं पि भंडनिक्खेवणट्ठाणं ति"। तमायन्निऊणं[5] तिवलीतरंगभंगभालवट्टेण[6] सकोवं भणिओ सत्थवाहेण–'न किंचि अम्ह तेण पओयणं। चिट्ठउ जत्थ अन्ने वि देसंतरवणिया चिट्ठंति।' तओ कयकरंजलिमउलिणा विन्नत्तं सहदेवेण–'ताय! मा एवमाणवेह। सो[7] बालो अदिट्ठदोसो[8] तुम्ह दंसणुक्कंठिओ समागओ। अन्नस्स वि घरमागयस्स उचियउवयारो कीरइ। जेण भणियं–

जेण न किंचि वि कज्जं तस्स वि घरमागयस्स जे सुयणा।
नूणं पहट्ठवयणा नियसीसं आसणं दिंति॥ २३५

ता सव्वहा तस्सावमाणकरणं न जुत्तं। सम्माणिओ समुप्पन्नसिणेहो मा कयाइ जिणधम्मं पडिवज्जेज्जा।' 'एवं होउ त्ति।'

तओ भणिओ पगंतु [.........] सहदेव-वीरदासेहिं।
दंसियगरुयसणेहो पवेसिओ नयरमज्झम्मिं[9]॥ २३६

उत्तारियं च भंडं भंडागारेसु निरुवसग्गेसु।
तओ [य] विणयमहग्घं पणओ माया[प. ८ B]महो तेण॥ २३७

---

1 इब्भाविवणीयस्स. 2 संठिपणव. 3 °निसन्ना. 4 विन्नवेई. 5 तमाइन्निऊण. 6 तिवल्ली°. 7 तो. 8 °दोसा. 9 °मग्गम्मि.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आलिंगिऊण गाढं मायामहिगाइ चुंबिओ सीसे ।
दिन्ना पवराऽऽसीसा – 'अक्खयअजरामरो होसु ।।' २३८

तो मायामहघरणीओ उ(ताओ ?) सव्वायरेण पणमेइ ।
लद्धासीसो तत्तो पणमइ सव्वं सयणवग्गं ।। २३९

वच्चइ चेइयभवणं तेहिँ समं नमइ मुणिवरे विहिणा ।
जिणबिंबदंसणाओ वहइ पमोयं हिययमज्झे ।। २४०

सुविणीओ सुहचरियो[1] पियंवओ वल्लहो गुरुजणस्स ।
जं पुण मिच्छद्दिट्ठी [त्ति] मणागमरुइकरं एयं ।। २४१

भणिही सव्वो लोगो पारद्धं जणयचेट्ठियं[2]मणेण ।
तेण न सिक्खइ धम्मं मामयभणिओ वि पुणरुत्तं ।। २४२

[महेसरदत्तस्स नम्मयासुंदरीए सह परिचओ]

पेच्छंतो रूवं सुंदरीएँ चिंतेइ माणसे धणियं ।
'कह नाम समुल्लावो होही एयाएँ सह मज्झ ।।' २४३

अन्नदिणे वच्चंती दिट्ठा अज्जाउवस्सए तेण ।
तो सो वि तयणुमग्गं गओ तहिं दंसणसुहत्थी ।। २४४

[ल]ज्जोणयाएँ तीए ईसिं हसिऊण सो इमं भणिओ ।
'पाहुणय ! किं न वंदसि अज्जा अम्हाण गुरुणीओ ? ।।' २४५

'जइ तुम्हं गुरुणीओ तुम्हे वंदेह अम्ह किं इत्थ ? ।'
'होही तुहावि धम्मो गुरुभत्तीए नमंतस्स ।।' २४६

काऊण पणामं अज्जियाण इयरेण सा इमं भणिया ।
'तुह वयणाओ सुंदरि ! पणमामि न धम्मबुद्धीए ।। २४७

कुलधम्मं मोत्तूणं सुंदरि ! अन्नोन्नधम्मनिरयाणं ।
नासंति दो वि धम्मा को गच्छइ दोहिँ मग्गेहिं ? ।।' २४८

दाऊण आसणं तो भणिओ – 'निवसाहि एत्थ ख[ण]मेक्कं ।
मज्झत्थचित्तयाए धम्मसरूवं वियारेमो ।।' २४९

उवविट्ठस्स य भणियं – 'विक्कंति कयाणगाइँ[3] हट्टेसु ।
मंगुलमणोरमाइं नियनियविभवाणुसारेण ।। २५०

निच्छंति विक्कणंता मंगुलवयणं[4] ति मंगुलं वोत्तुं ।
कइएण उ घेत्तव्वं सुंदर ! सुपरिक्खियं[5] काउं ।। २५१

१ °चरियं २ °वेट्ठय°. ३ कयाणगाइं. ४ °पयणं. ५ °क्खिउं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धम्मकयाणगमेवं परलोगसुहत्थिणा वि घेत्तव्वं।
जो तत्थ वंचिओ किर सो चुक्कइ सव्वसोक्खाणं॥ २५२
अम्हाणं[1] ताव धम्मे अट्ठारसदोसवज्जिओ देवो।
ते पुण बुहेहिँ[2] सुंदर! दोसा एवं पढिज्जंति॥ २५३
अन्नाणकोहमयमाणलोहमाया रई य अरई य।
निद्दासोयअलियवयणचोरिया मच्छरभया य॥ २५४
पाणिवहपेमकीडापसंगहासा य जस्सऽमी दोसा।
अट्ठारस य पणट्ठा नमामि देवाधिदेवं[3] तं॥ २५५
जीवदय सच्चवयणं परधणपरिवज्जणं च बंभं च।
पंचिंदियनिग्गहणं आरंभपरिग्गहच्चाओ॥ २५६
[ए]स विसिट्ठो धम्मो उवइट्ठोऽणुट्ठिओ सयं जेण।
सो अम्ह वीयराओ देवो देविंदकयपूओ॥ [प. ९ A] २५७
एसो न चेव तूसइ न य रूसइ दुट्ठचिट्ठियस्सावि।
सावाणुग्गहरहिओ तारेइ भवन्नवं नियमा॥ २५८

तहा–

अवगयधम्मसरूवो सुधम्मकरणुज्जुओ य जो निच्चं।
धम्मोवएसदाया निरीहचित्तो गुरू अम्ह॥ २५९
एयारिसगुणहीणो देवो गुरुणो वि नऽम्ह रोयंति।
जइ अत्थि पहाणयरा अन्ने साहेहि तो अम्ह॥' २६०
इय देवाइसरूवे सवित्थरं[4] नम्मयाएँ परिकहिए।
कम्माण खओवसमा महेसरो मणसि पडिबुद्धो॥ २६१
तह वि परिहाससारं पुणो वि सो नम्मयं[5] इमं भणइ।
'अम्हाण वि देवाणं सुणसु सरूवं तुमं भद्दे!॥ २६२

सुयणु! अम्ह संतिया देवा अप्पडिमल्ला इच्छाए हसंति, इच्छाए कीलंति गायंति नच्चंति। जइ रूसंति सावे य पयच्छंति, जइ तूसंति वरे [य]वियरंति। तेण जुत्ता तेसिं पूयाविहाणेणाराहणा। तुम्ह संतिओ वीयरागदेवो न रुट्ठो निग्गहसमत्थो, न तुट्ठो कस्स वि पसिज्जइँ[6]। ता किं तस्साराहणेण?' तो नम्मयासुंदरीए भणियं–'एए हासतोससावाणुग्गहपयाणभावा सव्वजणसामन्ना, ता देवाण जणस्स य को विसेसो? जं च भणसि "सावाणुग्गहपयाणविगलस्स किमाराहणेण?" तत्थ सुण। मणिमंताइणो अचेयणा वि विहिसेवगस्स समी-

१ अम्हाणं. २ पुहेहिं. ३ °विदेवं. ४ सवित्थुरं. ५ नम्मय. ६ पसज्जइ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हियफलदाइणो भवंति, अविहिसेवगस्स अवयारकारिणो भवंति। एवं वीयरागा वि विहिअविहिसेवगाण कल्लाणाकल्लाणकारणं संपज्जंति।’ पुणो भणियं महेसरदत्तेण–‘जइ न रूससि ता अन्नं पि किं पि पुच्छामि।’ तीए भणियं–‘पुच्छाहि को धम्मवियारे[1] रूसणस्सावगासो ?’ इयरेण भणियं–‘जइ तुम्ह देवो वीयरागो ता कीस न्हाइ कीस गंधपुप्फाइनट्टगीयाइं वा पडिच्छइ।’ तओ ईसि हसिऊण भणियं नम्मयाए–‘अहो निउणबुद्धीओ तुमं अओ चेव अरिहो सि धम्मवियारस्स, ता निसामेह परमत्थं। अरहंता भगवंतो मुत्तिपयं संपत्ता। न तेसिं भोगुवभोगेहिं पओयणं। जं पुण तप्पडिमाणं ण्हाणाइ कीरइ एस सव्वो वि ववहारो सुहभावनिमित्तं धम्मियजणेण कीरइ, तओ चेव सुहसंपत्ती भवइ’ त्ति। तओ महेसरदत्तो भणइ–‘सुलहाइं इत्थियाणं पडिउत्तराइं। जओ पढिज्जइ विउसेहिं–

दो चेव असिक्खियपंडियाइँ दीसंति जीवलोगम्मि।
कुकुडयाण य जुद्धं तत्थुप्पवं(?) च महिलाण॥ २६३

सुंदरि ! विजिओ वाए अहं तुमए।’ सुंदरीए भणियं–‘मा एवं भणह। न मए वायबुद्धीए किं पि भणियं। किंतु तायाईण [प. ९ B] [2]अईवल्लहो तुमं, तेण इहागयस्स मए पाणेहिंतो वि पियं घरसारभूयमेयं नियधम्मपाहुडं तुहोवणीयं।’ इयरेण भणियं–‘ममावि मामय[3]धूया तुमं ति गोरवट्ठाणं वट्टसि,[4] ता पडिच्छियं मए तुह संतियं पाहुडं’ ति भणंतो उट्ठिओ महेसरदत्तो।

तप्पभिइमेव धम्मं नाउं काउं च सो समारद्धो।
मूढजणोहसणाणं कन्नमदेंतो सुथिरचित्तो॥ २६४

[महेसरदत्तस्स मायामहसमीवे नम्मयासुंदरीअत्थे पत्थणा]

गहिओ सावगधम्मो भणइ य मायामहं अह कयाइ।
‘कीरउ एक पसाओ दिज्जउ मम नम्मयं ताय !॥’ २६५

सो याऽऽह–‘को न इच्छइ संजोगं नागवल्लिपूगाणं।
नवरं तुह परिणामं अम्हे सम्मं न याणामो॥ २६६

अम्ह कुले एस कमो घेत्तुं जो चयइ वीरजिणधम्मं।
जाईकुलपंतीणं वज्झो सोऽवस्स कायव्वो॥ २६७

एत्तो चिय तुह माया चत्ताऽम्हेहिं न कोवदोसेण।
को सक्को[5] नियदुहियं विसुद्धसीलं जए मोत्तुं ?॥ २६८

---

१ °वयारे. २ गइ°. ३ समाय°. ४ वट्टइसि. ५ सक्का.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुत्त ! पिओ सयणाणं गेहं गंतूण चयसि जइ धम्मं ।
दिन्ना वि इमा कन्ना तुमं च ता दूरओ होसि ॥' २६९
भणइ महेसरदत्तो – 'न मए कवडेण एस पडिवन्नो ।
जिणपन्नत्तो धम्मो ता मा एवं विगप्पेह ॥' २७०
'परिभाविऊण सम्मं जं जुत्तं वच्छ ! तं करिस्सामो ।
मा होसु उच्छुगो[1] तं पुच्छामो मामए तुज्झ ॥' २७१
'एवं'ति तेण वुत्ते सिट्ठं गंतूण तेण एगंते ।
इब्भेण सपुत्ताणं भणियं – 'तो किमिह जुत्तं'ति ॥ २७२
आह तओ सहदेवो – 'धुत्ताणं ताय ! को णु पत्तियइ ।
किंतु निसुणेह एगं मह वयणं एगचित्तेण ॥ २७३
बहुजणरंजणकज्जे उब्भडवेसाउ[2] होंति वेसाओ ।
न तहा कुलंगणाओ नियसणपरिओसरसियाओ ॥ २७४
धम्मरया वि हु पुरिसा कित्तिमसाभाविया कलिज्जंति ।
अच्चुब्भडसाहावियकिरियाकरणेहिँ निउणेहिं ॥ २७५
जह चेव जणसमक्खं तहेव एगागिणो जइ कुणंति ।
ता नज्जइ सुस्समणो सुसावओ वा सुबुद्धीहिं ॥ २७६
एस महेसरदत्तो जणरंजण[3]कारि उब्भडं किं पि ।
न कुणइ न चेव जंपइ कुणइ विसुद्धं अणुट्ठाणं ॥ २७७
सच्चविओ सो य मए एगागी चेइयाइँ वंदंतो ।
रोमंचंचियगत्तो संपुन्नविहिं[4] अणुट्ठिंतो[5] ॥ २७८
सब्भावसावगो खलु तम्हा एसो न इत्थ संदेहो ।
एसा वि अम्ह धूया निच्चलचित्ता जिणमयम्मि ॥ २७९
ता कीरउ संजोगो एयाण न किं चि अणुचियं मुणिमो ।
अहवा जं पडिहासइ तायस्स तमेव अम्हाणं ॥ २८०
सुंदर ! अमोहबुद्धी सुदीहदंसी तमाउ को अन्नो ।
ता की[र]उ एवमिणं' इय भणिए उसभदत्ते[प. १० A.]ण ॥ २८१
जे नयरम्मि[6] पहाणा गणया सव्वे वि ते समाहूया ।
संपूइऊण भणिया 'विवाहलग्गं गणह सारं[7] ॥' २८२
नाउं रविगुरुसुद्धिं सुमीलियं[8] तह[9] य जम्म[10]रिक्खाणं ।
तिहिनक्खत्तपवित्ते ससिबलजुत्तम्मि दिवसम्मि ॥ २८३

---

१ उच्छगो. २ °वेसाउ. ३ °रंसण°. ४ °विही. ५ अणुट्ठंतो. ६ नरयम्मि. ७ गणसहारं. ८ सुसीलियं. ९ वह. १० जस्स°.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संपुन्नगहबलं सव्वसुंदरं सोहियं तहा लग्गं ।
सयलसुहसिद्धिजणयं एगग्गमणेहिँ गणएहिं ॥ २८४

[नम्मयासुंदरीविवाहोसवो]

तमायन्निऊण नम्मयासुंदरीए विवाहो त्ति हरिसिओ नयरलोगो । उब्भियाइं[1] घरे घरे तोरणाइं, ठाणे ठाणे पिणद्धाओ[2] वंदणमालाओ, मंदिरे मंदिरे पवज्जियाइं मंगलतूराइं, पणच्चियाओ सुहवनारीओ, जाओ परमाणंदसमुद्दनिबुड्डो[3] इव सुहियओ पुरिसवग्गो । सहदेवेणावि तिय-चउक्कचच्चराईसु पवत्तियाइं अवारियसत्ताइं, निमंतिओ सयलनायरलोगो, सम्माणिओ वत्थतंबोलाइएहिं । किं बहुणा ? –

वज्जंततूरमणहरं, नच्चंतलोयसुहयरं;
पढंतभट्टचट्टयं, पए पए पयट्टयं;
पमोइयासेसमग्गणं, जणसंवाहविसट्टहारखंडमंडियघरंगणं;
कीरंतको[उ]यमंगलसोहणं, सयलपेच्छयजणमणमोहणं;
पिईमाइ[4]चित्तभारनिम्महणं[5], संजायं नम्मयासुंदरी-[6]महेस[र]दत्ताणं पाणिग्गहणं ।

अवि य –

दाणेण य माणेण य पिउणा तह तोसिओ जणो सव्वो ।
आसीवायसयाइं अन्नत्थगओ वि जह देइ ॥ २८५
भणइ जणो – 'भो सुंदर ! केहि तुमं आगओ सि सउणेहिं ।
जं एसा संपत्ता घरणी लच्छि व्व पच्चक्खा ॥' २८६
अन्नाओ वुड्ढाओ अक्खयमुट्ठिं[7] सिरम्मि मोत्तूण ।
जंपंति – 'नंद मिहुणय ! णहंगणे जाव ससि-सूरा ॥' २८७
'अणुरूवो संजोगो विहिणा घडिओ' भणंति अन्नाओ ।
'कोमुई-गहनाहाण य मा विरहो होज्ज कइया वि ॥' २८८
इय नयरजणासीसे[9] पडिच्छमाणो[10] गुरूण कयतोसो ।
उप्पाइयनेहो नम्मयाएँ सो[11] संठिओ तत्थ ॥ २८९
आपुच्छिय सुहिसयणो महेसरो पत्थिओ नियं नयरं ।
जणएण दिन्नसिक्खा विसज्जिया नम्मया चलिया ॥ २९०
केहि वि दिणेहिँ पत्तो भडेहिँ वद्धाविया य रिसिदत्ता ।
कयमंगलोवयारा पच्चोणिं निग्गया सयणा ॥ २९१

---

१ उब्भियांइं. २ पिणट्ठाओ. ३ °निवुड्डो. ४ पीइ°. ५ °चित्ताभारिमिम्महणं. ६ °सुंदरीए महे°. ७ °सुट्ठि. ८ कोइमुइ°. ९ °सीसो. १० °माणा. ११ से.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तओ पढमाणेहिं मंगलपाढगेहिं अग्घिज्जमाणो पायमूले[1], पलोइज्जमाणो नयरलोएहिं, रोलंतवंदणमालं दुवारोभयपासपइट्ठियकणयकलसं पविट्ठो समं वहूए[2] महेसरदत्तो नियमंदिरं ति । निवडिओ चलणेसु जणयस्स जणणीए सेसगुरुजणस्स य । नम्मयासुंदरी वि चलणेसु निवडमा[प. १० B]णी चिरकालुक्कंठियाए रिसिदत्ताए समालिंगिऊण दिन्नासीसा पवेसिया निहोलम्मि ।

परितोसियसुहिसयणं वद्धावणयं सवित्थरं काउं ।
रिसिदत्ता परितुट्ठा कालं गमिउं समारद्धा ॥ २९२
चियवंदणसज्झायं कुणमाणिं[3] नम्मयं सुणंतीओ ।
गोयरिमिव हरिणीओ सासुरयाओ न तिप्पंति ॥ २९३
उवसंतं सयलकुलं [ती]य समीवे सुणेइ जिणधम्मं ।
परियाणियपरमत्थं जायं धम्मुज्जुयं[4] सव्वं ॥ २९४
अह अन्नयाँ[5] कयाई [··········]यणो ।
भणइ महेसरदत्तो जणयं महुराएँ वाणीए ॥ २९५
'ताय! इमो जिणधम्मो चिंतारयणं व दुल्लहो सुट्ठु ।
लद्धूण कीस तुमए बालेण व उज्झिओ ज्झ त्ति ॥ २९६
जइ कीरइ जीवदया अलियं चोरिक्कया य मुच्चंति ।
पालिज्जइ बंभवयं कीरइ न परिग्गहारंभो ॥ २९७
किं इत्थ ता न जुत्तं भणियमिणं सासणेसु सव्वेसु ।
पागयनरा वि एए पंच वि वाढं[6] विबुज्झंति[7] ॥ २९८
एए जो परिवज्जइ सो देवो सो गुरु त्ति किमजुत्तं ।
समदोसाणं दोण्हं तारेइ तरेइ को भणसु ॥ २९९
विन्नायमिणं सव्वं तुमए तइया गुरुप्पसाएण ।
न य धरियं नियहियए चोज्जमिणं अम्ह पडिहाइ ॥ ३००
आसाइयअमयरसो पिचुमंदरसस्स को नरो सरइ ।
पत्तम्मि पुहइरज्जे हलियत्ते को मइं कुणइ ? ॥' ३०१
इय महुरगिरा भणिओ[8] लग्गो[9] मग्गम्मि जिणवरुद्दिट्ठे ।
पच्छायावपरद्धो संविग्गो रुद्ददत्तो वि ॥ ३०२
इय मुणियधम्मतत्तं सासुरयं सव्वमेव संपत्तं ।
संगेण नम्मयासुंदरीएँ गुणरयणखाणीए ॥ ३०३

---

१ °मूलेहिं. २ विहूए. ३ कुणमाणी. ४ चस्सुज्झुयं. ५ अजया. ६ पाठं. ७ विपुस्संति. ८ भरणिओ. ९ लग्गो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[मुणिपदत्तसावप्पसंगो]

अन्नदिणे भुत्तुत्तरकालं एगागिणी गवक्खम्मि ।
तंबोलपुन्नवयणा चिट्ठइ नयरं नियच्छंति ॥ ३०४
मुक्कोऽणाभोगाओ तंबोलावीलबहलगंडूसो[1] ।
सहस त्ति पमायाओ हेट्ठा[2]हुत्तं अपेहित्ता ॥ ३०५
सो खल्लिवल्लिनाया इरियाउत्तस्स[3] खवगसाहुस्स ।
सहस त्ति सिरे पडिओ तुरियं पि हु वच्चमाणस्स ॥ ३०६
आलिंगियं च अंगं सहसा साहुस्स सोणबिंदूहिं ।
अवलोइओ न कोई नियच्छमाणेणुवरिहुत्तं ॥ ३०७

जाहे न कोइ उवलद्धो ताहे कोवानलपरद्धमाणसेण भणियमुच्चसद्दं – 'जेण केणावि पक्खित्तमेसो इहेव जम्मे घोरवसणमणुभविस्सइ ।' ताहे को एसो त्ति संभंताए पलोयमाणीए सच्चविओ[4] महारिसी । तयणु 'हद्धि कयं मए महापावं' ति संभंती ओतिन्ना पासायाओ, गहियफासुयसलिला गया मुणिसमीवं तुरियं । पक्खालि[प. ११ A.]ऊण मुणिअंगाइं लूहिऊण य चोक्खवत्थेहिं कयपंचंगपणामा रोयमाणी भणिउं पवत्ता – 'भयवं महापावा हं जीए तुह सयलसत्तवच्छलस्स देवासुरमणुयपूयणेज्जस्स एयारिसं समायरियं ति । पमायमहागहमोहियाए न निज्झाइओ भूमिभागो, ता खमाहि मे महंतमेगमवराहं ति । तुब्भे चेव खमिउं जाणह, तुब्भे चेव खमासीला, तुब्भे चेव सव्वजीवहिया[6]णुपेहिणो ।' एवं पुणो पुणो पलवमाणिं[7] पेच्छमाणस्स य रिसिणो विज्झाओ हिययकुंडे कोवग्गी । सोमदिट्ठीए पलोयमाणस्स नमयासुंदरी एयं[8] त्ति जायं पच्चभिन्नाणं । तओ साणुत्तावं[9] भणिया एसा – 'महाणुभावे ! नमयासुंदरि ! न मए वियाणिया तुमं कोवानलपलित्तचित्तेण । संपयं पुण अदुट्ठभावा तुमं ति निच्छियं मए, ता नत्थि तुहोवरि रोसलेसो वि । ता धम्मसीले ! मा रुयाहि । कुणसु वीसत्था धम्माणुट्ठाणपालणं ति ।' तीए भणियं – 'भयवं ! जहा आणवेह तुब्भे । किंतु बीहेमि दढं घोरवसणसावाओ, ता देहि मे अभयं' ति । साहुणा भणियं – 'भद्दे ! ठिई[10] एसा सावो अन्नहा काउं न तीरइ त्ति, ता होसु तुमं देवच्चणदाणसीलतवाणुट्ठाणपरायणा । तओ सव्वं सुंदरं भविस्सइ' त्ति दिन्नपडिवयणो गओ सट्ठाणं रिसी । इयरी वि सावसल्लियमाणसा विसेसओ पवत्ता धम्मकज्जेसु ।

---

१ °गंदूसो. २ हट्ठा°. ३ °उः तस्स. ४ मच्चविओ. ५ लि. ६ सव्वे जीवदिया°. ७ पलवमाणी. ८ एज्झ. ९ °णुन्नावं. १० ठिई.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[महेसरदत्तनम्मयासुंदरीण जवणदीवं पइ पयाणं]

अन्नया महेसरदत्तो उज्जाणे कीलंतो भणिओ सिणिद्धमित्तेहिं[1] — 'किमम्हे[2] कूपदद्दुरेणेवादिट्ठदेसंतराण जीविएण? किं वा जणणिसमाए जणयविढत्ताए लच्छीए परिच्चाएण कीरमाणेहिं चाय[3]भोगाइविलासेहिं? अवि य—

नियभुयविढत्तदव्वो मणोरहे मग्गणाण पूरिंतो ।
विलसइ जो न जहिच्छं चलंतथाणू[4] न सो पुरिसो ॥ ३०८
जे च्चिय भमंति भमरा ति च्चिय पावंति वहलमयरंदं ।
मंदपरिसक्किराणं होइ रई निंबकुसुमेसु ॥ ३०९
अइपंडिओ वि पुरिसो अदिट्ठदेसंतरो हवइ अवुहो ।
देसंतरनीईओ भासाओ वा अयाणंतो ॥ ३१०
पुन्नापुन्नपरिच्छा कीरइ दढमप्पणो मणुस्सेहिं ।
हिंडंतेहिँ धणज्जणकज्जे नाणाविहे देसे ॥ ३११

किं बहुणा? —

होसु तुमं अम्हाणं [सव्वाणं] अग्गणी जवणदीवं ।
वच्चामो नाणाविहमणिमोत्तियरयणपडिहत्था ॥' ३१२
एवं वहुप्पयारं[5] वयंसयाणं सुणेत्तु विन्नत्तिं ।
आह महेसरदत्तो — 'किमजुत्तं होउ एवं ति ॥' ३१३

तओ आपुच्छिऊण नियनियजणए पारद्धा संजत्ती — गहियाइं तद्दीवपाउग्गाइं भंडाइं, पउणीकयाइं जाणवत्ताइं, सज्जिया निज्जामया, निरूवियं[6] पत्थाणदिवसं । एत्थंतरे पुच्छिया भत्तुणा नम्मयासुंदरी — 'पिए! वच्चामो वयं जवणदीवं ।' नम्मयाए भन्नइ — 'हो[प. ११ B]उ एवं, ममावि सायरदंसणकुड्डं संपु[रि]ज्जँ[7]' त्ति । इयरेण भणियं — 'तुमं ताव अंब-तायपायसुस्सूसणपरा इहेव चिट्ठाहि जाव वयमागच्छामो ।'

पडिभणइ सुंदरी तं— 'मा एरिसमाणवेसि कइया वि ।
न तरामि तुह विओए पाणा धरिउं मुहुत्तं पि ॥ ३१४
अवि जीवइ कुंथुरिया नीरविउत्ता वि कित्तियं कालं ।
तुह विरहे पुण नियमा सहसा पाणेहिँ मोच्चामो ॥ ३१५
एक्कपए च्चिय पिययम! किं एवं निट्ठुरो तुमं जाओ ।
किं नु[8] सुया चेव तए लोगपसिद्धा इमा गाहा ॥ ३१६
भत्ता महिलाण गई भत्ता सरणं च जीवियं भत्ता ।
भत्तारविरहियाओ वसणसहस्साइँ पावंति ॥' ३१७

---

१ °मेत्तेहिं. २ किमिम्ह. ३ चाइ°. ४ °चाणु. ५ °वयारं. ६ निरवयं. ७ संपुज्जंति. ८ तु.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भणइ महेसरदत्तो–'सुंदरि[1]! अच्चंतभीसणो जलही ।
तेण तुमए समाणं गमणं न हु [जु]ज्जए काउं ॥ ३१८
मा कुण बालग्गाहं मह भणियं सुयणु! सव्वहा कुणसु ।
आणाकारि कलत्तं सलहिज्जइ[2] लोयमज्झम्मि ॥' ३१९
निच्छयनिवारणत्थं आयन्निय[3] नम्मया तह परुन्ना ।
जह निट्ठुरो वि भत्ता जाओ करुणापरो धणियं ॥ ३२०
भणइ य पुणो वि–'सुंदरि! रोयसि तं कीस तुह दुहभएणं[4] ।
अहमाइसामि एवं मा मन्नसु कारणं अन्नं ॥' ३२१
सा साहुसावभीया विरहं दइएण सह अणिच्छंती ।
भणइ–'सुहं दुक्खं वा तुमए सहिया सहिस्सामि ॥ ३२२
अहवा चिट्ठ गिहे चिय[5] अहवा मं नेहि अप्पणा सद्धिं ।
जइ ता जीवंतीए पुणो वि मिलियाइ तुह कज्जं ॥' ३२३
विन्नायनिच्छयं तो अणुणेत्ता नम्मयं महुरवयणं ।
भणइ महेसरदत्तो–'तं काहं जंपियं तुज्झ ॥' ३२४
सो नम्मयाइ सहिओ सहिओ मेत्तेहिं एगचित्तेहिं ।
भडचडयरेण गुरुणा[6] पत्तो सरिनम्मयाकूलं ॥ ३२५

तत्थ य पत्तेहिं संजत्तियाइं पव[ह]णाइं आयामेण वित्थरेणावि पावंचासहत्थ[7]पमाणाइं, मुणिकुलाइं व परिहरियलोहाइं पहाणगुणसंजमपगिट्ठकट्ठाहिट्ठियाइं च, चित्तकम्माइं पिव सुनिम्मायविचित्तभूमिभागाइं बहुवन्नरूवयसंगयाइं च । कओ तेसु बहुकालजोग्गजलधणधन्नाइसंगहो, निबद्धा चउसुं पि दिसासु नंगरा, पवेसियाइं च पसत्थवासरे गंभीरनीरे पोयपवेसठाणे । आरूढा नियनियजाणवत्तेसु संजत्तिया । महेसरदत्तो वि समारूढो सह पिययमाए विसेसरमणिज्जे[8] उवरिमभूमिविरइए वासमंदिरे । तो कुसलनिज्जामगकन्नधारेहिं पाविय ऽणुकूलपवणप्पयारेहिं विमज्जियाइं पवेसियाइं च महासमुद्दं जाणवत्ताइं । कत्थइ गिरिसिहरायमाणमहल्ल[9]कल्लोलेहिं गयणाभिमुहं निज्जमाणाइं, अन्नत्थ विलीयमाणेहिं तेहिं चेव पायालं पिव पवेसिज्ज[प. १२ A]माणाइं, खलिज्जमाणाइं महामच्छेहिं, पेल्लिज्जमाणाइं जलहत्थिमत्थएहिं, आहम्ममाणाइं मगरनक्कपुच्छच्छडाहिं, विलग्गं[10]माणाइं विडुम[11]वणगहणेसु, उप्पयमाणाइं पिव पवणुद्धुयसेयवडेहिं गयाइं अणेगाइं जोयणसयाइं । तओ नम्मयासुंदरी[ए] भणियं–'सामि! अच्चंतभीसणो एस समुद्दो तेण जिणसासणे संसारउवमाणं

---

१ सुदरि. २ सलहेज्जइ. ३ आइन्निय. ४ दुट्ठभाएण. ५ विय. ६ गुरुणो.
७ °चाहसत्थ°. ८ °रमणेजे. ९ °महल्लि°. १० विलिग्ग°. ११ विड्डम°.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कीरइ । अन्नं च कत्थ गया नगरकाणणासया मेइणी, रविससिगहाइणो वि ? एए किं जलयरा जेण जले उग्गमंति जले चेव अत्थमंति?' इयरेण भणियं–'सुंदरि ! मा भाहि पभूयमज्जं[1] वि अपुव्वं दट्ठव्वं ।' तीए भणियं–'तए सन्निहिए कयंताओ वि न वीहेमि।' इच्चाइ समुल्लावपवत्ताणं वोलिया णेगे दियहा ।

[महेसरदत्तस्स नम्मयासुंदरीचरियम्मि कुसंका]

अन्नया मज्झरत्तसमए कोइ पुरिसो सुइसुहयं किंपि गाइउं पवत्तो । तस्स सरं सुणमाणीए नम्मयासुंदरीए सरियं सरमंडलं पगरणं[2] विन्नायं च तस्स सरूवं । तओ अइपरिओसाओ भणिओ भत्ता–'जो एस पुरिसो गायइ तस्स[3] रूवमहमिहट्ठिया चेव जाणामि ।' 'केरिसं ?' ति वुत्ते साहिउं पवत्ता–'पिययम ! एस ताव[4] वन्नेण सामो पंसुलो पंसुलजुवइवल्लहो य । अन्नं च एयस्स गुज्झदेसे पवालसमवन्नो मसो अत्थि ।' तं सोऊण विम्हिएण भणियं भत्तुणा–'कहं पुण तुममिहट्ठिया जाणासि[5] ?' तीए भणियं–'सवन्नुवयणाओ ।' तओ 'सच्चमेयं न व ?' त्ति गंतूण बीयदिवसे एगंते पुच्छिओ सो तेणावि 'एवमेयं' ति भणिए समुप्पन्नविलीओ समालिंगिओ ईसापिसाईए असंभावणिज्जं[6] इमं भाविउं पयत्तो । अवि य–

ईसावसेण पुरिसा हवंति धुत्तूरिय व्व विवरीया ।
न नियंति गुणं संतं दोसमसंतं पि पेच्छंति ॥ ३२६

चिंतेइ कहं जाणइ गुज्झपएसट्ठियं[7] मसं[8] एसा ।
जइ ताव न परिमिलिओ पंसुलपुरिसो इमो बहुहा[9] ॥ ३२७

नूण निरंतरमेसो एयाए हिययमंदिरे वसइ ।
अन्नह किह देइ मणो एसा[10] एयस्स गीयम्मि ॥ ३२८

एसो वि महा[11] धुत्तो गायइ उच्चं निसीहसमयम्मि ।
जेण निसामेइ इमा संकेओ वा इमो दुन्हं ॥ ३२९

मोत्तूण चंदणं मच्छियाउ[12] लग्गंति असुइदव्वेसु ।
पयई इह महिलाणं विलीणपुरिसेसु रज्जंति ॥ ३३०

भणियं च–

अइरूवयाण लज्जं कुणंति वीहंति पंडियजणस्स ।
महिलाण एस पयई काणय[13] कुंटेसु रच्चंति ॥ ३३१

---

१ °मज्झ. २ पयगरणं. ३ यस्स°. ४ ताच. ५ जाणासि. ६ असंभावणेज्जा. ७ °पएसं ठियं. ८ मस. ९ बहुहण. १० एसो. ११ मुहा°. १२ सिच्छियाउ. १३ काणइ°.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्नं चिंतिंति[1] मणे पेसलवयणाइँ दिंति अन्नस्स ।
[अन्नस्स] निद्धदिट्ठिं खिवंति रामंति पुण अन्नं ॥ ३३२
तह दंसिओ सिणेहो तहा तहा रंजियं मणं मज्झ ।
एया एरिसचरियं[2] अहो महेलाण निउणत्तं ॥ [प. १२ B] ३३३
एयस्स विरहभीया[3] नूणं एसा ठिया न गेहम्मि ।
बहुकूडकवडभरिया नज्जइ पुण उज्जुया एसा ॥ ३३४
का होज्ज एत्थ दूई किं नामं केयठाणमेएसिं ।
कह नाम वंचिओ हं एयाए गूढचरियाए ॥ ३३५
मिज्जइ जलहिस्स जलं तोलिज्जइ मंदरो य धीरेहिं ।
कूडकवडाण भरियं दुन्नेयं महिलियाचरियं ॥ ३३६
कुवियप्पसप्पग[सि]ओ पणट्ठसन्नो इमो दढं जाओ ।
पम्हट्ठधम्मकम्मो परलोयभएण वि विमुक्को ॥ ३३७

[महेसरदत्तस्स नम्मयासुंदरीपरिच्चाओ]

विम्हारिऊण सव्वे गुरूवएसे पयत्तपत्ते वि ।
तम्मारणेक्कचित्तो चिंतइ कोहाउलो एवं ॥ ३३८
को होज्ज मे पयारो जेण इमा दिट्ठिगोयरे मज्झ ।
चिट्ठइ न खणं पि खला मलिणियनिम्मलकुला पावा[4] ॥ ३३९
जइ ता घाएमि सयं[5] अवन्नवाओ तओ दढं होइ ।
जम्हा जणो न याणइ दुच्चरियं को वि पावाए ॥' ३४०
छणमग्गणत्थमच्छइ[6] गोवियकोवो विसेसियपवाओ ।
जइ कह वि निसातिमिरे छुभेज्ज एयं[7] समुद्दम्मि ॥ ३४१
सम[इ]क्कंते दियहे वट्टंते रयणिपढमजामम्मि ।
निज्जामएण केणइ घुट्ठं उद्दामसद्देण ॥ ३४२
'भो अत्थि जलहिमज्झे दीवं निम्माणुसं अइपमाणं[8] ।
नामेण भूयरमणं तम्मि पहायम्मि[9] गंतव्वं ॥ ३४३
तत्थऽत्थि महाहरओ गंभीरो महुरनीरपडिपुन्नो ।
घेत्तव्वं तत्थ जलं सुणंतु संजत्तिया सव्वे ॥' ३४४
सोऊण घोसणं तं महेसरो पमुइओ विचिंतेइ ।
'होही सुंदरमेयं छड्डिस्सं तत्थ दीवम्मि ॥' ३४५

---

१ चिंतिंति. २ एरिसं चरियं. ३ °भीहा. ४ पाया. ५ संयं. ६ मत्थइ. ७ पयं, ८ °मपाणं, ९ पहाइम्मि.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्तो पहायसमए पोयं धरिऊण दीवनियडम्मि ।
जलगहणत्थं चलिओ पवहणलोगो तहिं बहुओ ॥ ३४६
भणइ महेसरदत्तो–'पेच्छामो ता वयं इमं दीवं ।
जइ रोचइ तुह सुंदरि!' तीए भणियं–'हवउ एवं ॥' ३४७
चलियाइँ तओ दुन्नि वि सलिलं पाऊण तम्मि हरयम्मि ।
'अइरमणिज्जो दीवो पेच्छामो ताव एयं पि ॥' ३४८
इय एवं जंपंतो हियए दुट्ठो मुहम्मि पियवाई ।
परिसक्किउं पवत्तो दंसिंतो तीएँ वणराई ॥ ३४९
कत्थइ असोगतरुणो निरंतरं मेहवंदसारिच्छा[1] ।
कोइलकलरवमुहला[2] कत्थइ सहयारतरुनिवहा ॥ ३५०
फलरससित्तधराओ निरंतराओ कहिंचि सिंदीओ ।
नालीरीओ कत्थइ अविरललुंबंतलुंबीओ ॥ ३५१
कत्थइ दाडिमरुक्खा कत्थइ जंबीरगहिरगुम्माइं ।
कत्थइ दक्खामंडवछायापरिसुत्तसारंगे ॥ ३५२
दाइंतो दइयाए सुंदरवणराइराइयं दीवं ।
पत्तो हरयासन्नं पेच्छइ व[प. १३ A]णगहणमइसुविलं ॥ ३५३
मालइजाईकलियं साहावियकयलिगेहकयसोहं ।
दट्ठूण भणइ–'सुंदरि! संता परिसक्कणेण तुमं ॥ ३५४
ता माणेमो[3] एयं कयलीहरयं मणोहरच्छायं ।
तरुपल्लवेहिँ सेज्जं काऊण खणं पि वज्जामो ॥' ३५५
तीए 'तह' त्ति भणिए रइयाए सुहयरीएँ सिज्जाए ।
सुत्ता पसन्नचित्ता सुविसत्था नम्मया तहियं ॥ ३५६
चेत्तस्स सच्छयाए परिस्समाओ सुसीयपवणाओ ।
भयसंभमरहियमणा वसीकया झँ[4] त्ति निद्दाए ॥ ३५७
इयरो वि कूरचित्तो दट्ठुं निद्दापरवसं एयं ।
सणियं ऊसरिऊणं पहाविओ वहणजणसमुहो ॥ ३५८
दोहिँ वि करेहिँ सीसं निबिडं[5] वच्छ[त्थ]लं च ताडिंतो ।
लल्लक्कमुक्कपुक्को 'हा हा! मुट्ठो' त्ति पलवितो ॥ ३५९
सहस त्ति तओ भणिओ रोवंतो वारिऊण मित्तेहिं ।
'सत्थवइ! केण मुट्ठो कहिं च[6] सा वल्लहा तुज्झ? ॥' ३६०

---

१ मेहचंद°. २ °सुहला. ३ त मोणेमो. ४ ज्झ. ५ निविडं. ६ व्वि.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सो आह–'इत्थ गहणे अत्थि महारक्खसो अइपमाणो ।
पेच्छंतस्स य दइया खणेण कवलीकया तेण ॥ ३६१

अहमवि देवनिओआ पलायमाणो इहं समायाओ ।
संचलह ताव तुरियं खज्जामो तेण मा सव्वे ॥' ३६२

इय भेसिएहिँ[1] तेहिं सहसा परिपिल्लियाइँ वहणाइं ।
संठाविओ य एसो रुयमाणो कह वि किच्छेण ॥ ३६३

तो सो वि सुट्ठु तुट्ठो चिंतइ 'सिद्धं[2] समीहियं मज्झ ।
निच्छूढा सा पावा निवारिओऽवन्नवाओ वि ॥' ३६४

[नम्मयासुंदरीए सुन्नदीवम्मि पलावो]

नमयासुंदरी वि सुइरमच्छिऊण निद्दावगमे विउद्धा, उट्ठावणबुद्धीए भत्ताराभिमुहं भुयं पसारेइ । तत्थापेच्छंती तं दुइयपासं निरूवेइ 'नूणं सरीरचिंताइकज्जे कत्थइ गओ । मा निद्दाविग्घं ति नाहं विवोहिया, तुरियमेवेहेहि[3]' त्ति ठिया मुहुत्तं । जाव नागच्छइ ता 'मम धीरियं परिच्छइ' त्ति भाविंती भणइ–'पाणवल्लह! कओ अबलाणं धीरिमा? तुरियमेहि बीहेमि एगागिणी । किं वा ल्हि(निलु?)क्कणखेड्डयमारद्धं? दिट्ठो सि मालइडालंतरिओ, कयलीवणे चिट्ठसि । इत्तिओ चेव परिहासो सुंदरो होइ, एहि तुरियं, वाहराहिं[4] वा जेणाहमागच्छामि ।' बहुं पि भणिए न कोइ जंपइ 'नूणं सत्थाभिमुहो गओ भविस्सइ त्ति । सत्थरोलो[5] वि [न?] सुव्वइ [त्ति?]' संभवा संठविओवरिल्लकडिल्ला पहाविया, पत्ता वासट्ठाणं । तं पोयट्ठाणं पि सुन्नं दट्ठूण दढमाउलीहूया चिंतइ 'सव्वमेयँ[6]मसंभावणिज्जं, नूणं सुमिणय[प. १२ B]महं पेच्छामि । भूयपेयाइणा वा केणावि विमोहिय म्हि' त्ति भीयहियया रोयमाणी विलविउं पवत्ता । कहं?–'हा कंत! नाथ! दइय! नाहं पेच्छामि मोहिय म्हि केणावि, देहि देहि दंसणं निग्घिणो सि[7]' एवं कहि जाओ ।

वीसरिया कीस अहं बहुजणवावारमाउलमणस्स ।
अहवा न घडइ एयं कहेहि ता कारणं अन्नं ॥ ३६५

काऊण मज्झ रूवं वेलविओ किमसि [भूय]रूवेण ।
भूयरमणु त्ति नामं सुव्वइ एयस्स दीवस्स ॥' ३६६

मुच्छिज्जइ खणमेक्कं खणमेक्कं लद्धचेयणा रुयइ ।
कुणइ पलावे विविहे खणं खणं किं पि झाएइ ॥ ३६७

---

१ भेमेसिएर्हिं. २ सिट्ठं. ३ °वेहेहे. ४ वाहिराहि. ५ सत्थाराको. ६ °मेवम°. ७ मि.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एमेव सुन्नपु(वु)न्ना वणंतराइं खणं निहालेइ ।
'एएहि दइय ! दइयय !' वाहरइ पुणो पुणो मूढा ॥ ३६८

सोऊण य पडिसद्दं तत्तोहुत्तं पहावए तुरियं ।
पुणरवि अपेच्छमाणी कुणइ पलावे बहुपयारे ॥ ३६९

भणइ वणदेवयाओ– 'तुब्भे जाणह फुडं कहह मज्झ ।
मोत्तूण मं पसुत्तं कत्थ पलाणो पिओ सो मे[1] ? ॥' ३७०

सोऊण सउणविरवं एसो मं कोक्कई[2] त्ति पहसंती ।
धावइ तत्तोहुत्तं अपिच्छमाणी पुणो रुयइ ॥ ३७१

एवं जाव दिणंते[3] रुयमाणिं[4] तं तहा करुणसद्दं ।
दट्ठुमचाइंतो इव सूरो बुड्डो जलहि[मज्झे] ॥ ३७२

दट्ठूण पजंपइ– 'किं नं[5] नियसि अंधारियं [तुमं ?] भुवणं ? ।
"एगागिणी वराई कह होही सा पिया मज्झ ॥" ३७३

भुज्जो वि करुणसद्दं तह रुन्नं तत्थ भीयहिययाए ।
जह दीवदेवयाओ समं परुन्नाउ णेगाओ ॥ ३७४

अलहंती निद्दसुहं ताडंती नियउरं पुणो भणइ ।
'किं हियय ! वज्जघडिय न फुट्टसि जं एरिसे वसणे ॥' ३७५

उद्दहिरवं अइभीमं निसुणंती विविहसावयसरे य ।
कंपंतसयलगत्ता कह [वि] गमेई तयं रयणिं[6] ॥ ३७६

ताव [य] उइओ सूरो विहुणेत्ता रयणितिमिरपब्भारं ।
किं जियइ सा वराई किं वा वि मय त्ति नाउं वा ॥ ३७७

उच्चत्थँलमारूढा निज्झायंती दिसाउ सव्वाओ ।
भणइ– 'कहिं[8] नाह ! गओ इक्कसि मे देहि पडिवयणं ॥ ३७८

वच्चामि कत्थ संपइ कं सरणमुवेमि कस्स साहेमि ? ।
पिययम ! सुन्नारन्ने कत्तो ठाणं लहिस्सामि ? ॥ ३७९

कन्ने जणे[ण] केणइ मन्ने तं नाह ! मज्झ रूसविओ[9] ।
तह वि[10] पडिवन्नवच्छल ! काउं न हु एरिसं जुत्तं ॥ ३८०

क्किर जीवदयासारो उवइट्ठो मुणिवरेहिँ तुह धम्मो ।
सो वीसरिओ किं मं सुन्नारन्ने चयंतस्स ॥ ३८१

---

१ मो. २ कोकइ. ३ दिणंतं ४ रुयमाणी. ५ किन्न. ६ रयणी. ७ तो उच्चत्थ°. ८ कहि. ९ रूसविओ. १० वि न पडि°.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust / eGangotri

जह परिचत्ता अहयं[1] दुज्जणवयणेहिँ मोहियमणेण ।
तह मा जिणवरधम्मं एगंतसुहावहं चयसु ॥ ३८२
मं मोत्तुमणो[2] जइ ता आसि तुमं कीस जणणिजणयाणं ।
पासे नाहं मुक्का जम्मंतरवेरिओ किं मे[3] ? ॥' ३८३

[नम्मयासुंदरीए धम्मज्झाणेण कालगमणं]

करुणं रुयमाणीए तीए उव्वेविएण मू(भू ?)एण ।
नहयलगएण दिन्ना फुडक्खरं एरिसा वाया ॥ ३८४
'नट्ठो सो पावपई मुद्धे ! किं रुयसि कारणे तस्स ? ।
किं पलविएण सुंदरि ! सुन्नारन्नम्मि एयम्मि ? ॥' ३८५

तं सोऊण नम्मयाए चिंतियं –

'आगासगया वाया एसा सुरजाइयस्स कस्सा[प. १४ A]वि ।
नूणं न होइ अलियं गओ पिओ मं पमोत्तूण ॥ ३८६
न कयं किं पि अजुत्तं आणा वि न खंडिया मए तस्स ।
तह दंसिऊण नेहं परिचत्ता कीस सुन्नम्मि ? ॥ ३८७
सुयणा सरलसहावा असमिक्खियकारिणो न खलु हुंति ।
एमेव अहं चत्ता अहयं कह तेण विउसेण ॥ ३८८
मुणिसावाओ भीया पडिया कह इत्थ दारुणे वसणे ।
कूयमिवाओ(?) तत्था खित्तों[4] रुद्दे समुद्दम्मि ॥ ३८९
धी धी अहो ! अकज्जं कयं अणज्जेण विगयलज्जेण ।
संचालिऊण गेहा एत्थाहं पाडिया दुक्खे ॥ ३९०
अहवा न तस्स दोसो पुव्वकयं दारुणं समोइन्नं ।
तह सुद्धिएण मुणिणा दिन्नो कहमन्नहा सावो ? ॥ ३९१
मु[णि]णो वि नत्थि दोसो महावराहेण चोइयमणस्स ।
उच्छलइ जेण अग्गी चंदणकट्ठे वि अइमहिए ॥ ३९२
किं झूरिएण[5] संपइ आयहियं सव्वहा विचिंतेमि ।
धीरेहिँ कायरेहिँ वि सोढव्वं जेण सुहदुक्खं ॥ ३९३
होऊण कायरा जइ करेमि मरणं न दुक्करं तं तु ।
किं तु अविहाणमरणं निवारियं वीरनाहेण ॥ ३९४
मन्ने ता धन्नाओ कुमारसवणीओ जीव[6]लोगम्मि ।
पियविप्पओगदुक्खं जाओ सुमिणे वि न मुणंति ॥ ३९५

1 अहइं. 2 °मणं. 3 मो. 4 खेत्ता. 5 झूरिएण. 6 जव°.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहयं पि बालभावे जइ ता गेण्हेज्ज जिणमए दिक्खं ।
एयारिसदुक्खाणं नामं पि न ताव जाणंती ॥ ३९६
अज्ज वि जइ जीवंती जंबुद्दीवं कहं पि पाविज्जा ।
गेण्हेस्सं[1] पवज्जं सुहत्थिसूरिस्स पामूले ॥ ३९७
एसो इहेव नियमो पारिस्सं छट्ठभत्तपज्जंते ।
नियमेण एगवारं फासुयफलपत्तपुप्फेहिं ॥' ३९८
संठाविऊण हिययं घेत्तूण अभिग्गहं[2] इमं घोरं ।
निहणई[3] उदयस्स तडे संकेयपटं[4] चिरपसिद्धं ॥ ३९९
'जिणधम्मो बोहित्थं साहू संजत्तिया सहाया मे ।
निज्जामओ जिणिंदो भवजलही दुत्तरो कह णु ॥ ४००
चत्तारि मंगलं मे अरहंता तह य सबसिद्धा य ।
सबो वि साहुवग्गो धम्मो सबन्नुपन्नत्तो ॥ ४०१
धन्ना हं जीय मए सामग्गी एरिसा समणुपत्ता ।
भवसयसहस्सदुलहं निबंधणं सग्गमोक्खाणं ॥ ४०२
ता संपइ मम देवो वीरजिणो विगयरागमयमोहो ।
सयलसुरासुरमहिओ सहिओ अइसयसमूहेण ॥ ४०३
संसारभउविग्गा एगग्गा गुरुवएसु जा लग्गा ।
सेवंति सुद्धचरणं ते गुरुणो साहुणो मज्झ ॥ ४०४
जीवाइए पयत्थे जिणभणिए सद्दहामि सबे वि ।
न रमइ एक्कं पि खणं कुतित्थसत्थे मणं[5] मज्झ ॥ ४०५
इय दढसम्मत्ताए पत्ताए दारुणम्मि वसणम्मि ।
सा होज्ज मज्झ चिंता जीवामि मरामि वा झं[6] त्ति ॥ ४०६
कित्तियमेयं वसणं महाणुभावेहिँ धीरचित्तेहिं ।
सहियाइं[7] मुणिवरेहिं सुबंति जिणागमे जाइं ॥ ४०७
निप्फोडियाणि दोन्नि वि सीसावेढेण जस्स अच्छीणि ।
नं[8] य संजमाउ[9] चलिओ मेयज्जो मं[प. १४ B]दरगिरि व ॥ ४०८
कस्स न करेइ चोज्जं असमोपसमो चिलाइपुत्तस्स ।
दुक्करकरणं पि तहा अवंतिसुकुमाल[10]महरिसिणो ॥ ४०९
धन्नो गयसुकुमालो[11] मत्थयजलिएण जस्स जलणेण ।
दड्ढ[12]मसेसं सहसा कम्मवणं[13] चिरपरूढं[14] पि ॥ ४१०

---

१ गेण्हेस्सा. २ अभिग्घहं ३ निनिहणइ. ४ संकेयवयं ५ खणं. ६ जस. ७ साहियाइं. ८ नि. ९ संजमाओ. १० °सुकमाल°. ११ °सुकमालो. १२ दढम°. १३ कम्मावणं. १४ °परढं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धन्नो मुणिवइसाहू धम्मज्झाणम्मि निच्चलो घणियं ।
दड्ढो[1] ससीसपाओ जलिएण वणे हुयासेण ॥ ४११

रिसिदत्ता-सीयाहिं अन्नाहि वि अंजणापमुक्खाहिं ।
सुव्वइ महासईहिं दुस्सहदुक्खाइँ[2] सोढाइं ॥ ४१२

ता जीव ! मा किलम्मसु उव्वेयं नियमणम्मि मा कुणसु ।
साहससहायसहिया कल्लाणसयाइँ पावंति ॥' ४१३

इय बहुविहमप्पाणं अणुसासिंती गमेइ सा कालं ।
वच्चइ य पोयठाणं दिणे दिणे उभयकालं पि ॥ ४१४

'जइ ता लहामि कत्थइ जंबुद्दीवाणुगामियं सत्थं ।
मिलिऊण सज्जणाणं करेमि ता उत्तमं चरणं ॥' ४१५

एवं चिंतंतीए वोलीणं माससत्तगं तत्थ ।
अमुयंतीए सत्तं सद्धिं सम्मत्तरयणेण ॥ ४१६

सक्काराभावाओ सीयायवपवणसोसियसरीरा[3] ।
तीए तणुयंगीए[4] संजाया केरिसी छाया ? ॥ ४१७

अवि य—

उत्तत्तकणयवन्नो देहो जो आसि पुव्वकालम्मि ।
सो लक्खिज्जइ इण्हिं पडियं नवमेहखंडं व[5] ॥ ४१८

कोहंडस्स व[6] बिंटं कंठो तणुयत्तणेण संवुत्तो ।
तावससिरं व सीसं केसेहिँ जडत्तपत्तेहिं ॥ ४१९

परिसुसियनीलपंकयनालिं पिव सहइ बाहिया[7]जुयलं ।
पक्का मा[स]फली इव हत्थंगुलियाउ सुक्काओ ॥ ४२०

चुच्चुगमेत्तुवलक्खियपओहरं पयडपंसुलं वच्छं[8] ।
चामुंडोयरतुल्लं उदरं खामत्तमुव्वहइ ॥ ४२१

कट्ठमयं पिव घडियं नियंबफलयं अमंसलं जायं ।
अइथूलगुंफियाओ[9] जंघाओ कागजंघ व्व ॥ ४२२

तं तारिसयं तीसे अंगं दट्ठूण नूणमुव्विग्गो ।
आसालग्गो जीवो न मुयइ वोढुं असत्तो वि ॥ ४२३

[नम्मयासुंदरीए चुल्लपिउणा सह मिलणं बब्बरकूलगमणं च]

एत्थंतरे नमयासुंदरीए पुन्नोदयरज्जुसंदाणिओ व्व बब्बरकूलं[10] उद्दिस्स चलिओ नम्मयापुराओ वीरदासो । कहाणयविसेसेण संपत्तो भूयरमणदीवासन्नं । दट्ठूणं

१ दड्ढा. २ °दुक्खाइं. ३ °सरीरो. ४ °यगीए. ५ च. ६ य. ७ बाहिया°. ८ वत्थं.
९ अइथूलगुफियं जायं अइथूलगुंफियाओ जंघाओ. १० बब्बर.°

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नम्मयासुंदरीसमुब्भियं चिंधं भणिउमाढत्तो–'भो भो! अत्थि इह दीवे कोइ भिन्नवाहणिओ[1]। समओ एस पोयवणियाणं, एयं मोत्तूण न गंतव्वं। ता ठवेह एयस्स समीवे पवहणाइं।' ठवियाइं च तेहिं। तओ समुत्तिन्नो[2] समागओ हरयतीरे। दिट्ठाइं च मसिणधूलीए अचिरागयाए नमयासुंदरीए पयाइं। ताइं च सपुव्वाइं पिव मन्नंतो सविसेसं[3] पलोइऊण भणिउमाढत्तो–'भो भो वाणियगा! एह एह, दंसेमि किं पि कोउगं।' समागयाणं च दंसियाइं, भणियं च वीरदासे[प.१५A]ण–'न ताव एयाइं पुरिसपयाइं, जओ एएसिं पच्छिमभागो भारिओ इव लक्खिज्जइ। किं बहुणा? एयाइं नम्मयासुंदरीए संतियाइं पयाइं।' तेहिं भणियं–'अहो अच्छेरयं। कत्थ नम्मयासुंदरी?' वीरदासेण भणियं–'जइ अहमन्नो भवामि ता एयाइं पि अन्नाइं भवंति। एगागिणी य एसा, जओ पुरिसपयाइं नत्थि। चिरआगया यँ[4] नज्जइ जओ पहओ[5] दंडओ एस। ता एह ताव सम्मं निरिक्खिमो' त्ति भणंतो चलिओ दंडएण। नाइदूरगएण निसुओ[6] जिणगुणपडिबद्धाइं[7] थुइथोत्ताइं पढंतीए सद्दो। पच्चभिन्नाया, 'मा संखोहं गच्छिही' [त्ति?] महया सद्देण भणियं–'निसीही'। सा वि कहिं इत्थ चुल्लबप्पो[8] त्ति विम्हिया अप्पाणं संठविउं सम्मुही समुट्ठिया[9]। तओ दट्ठूण वीरदासं पम्हुट्ठं[10] पि दुक्खं सयणजण-दंसणे पुणन्नवं[11] होइ त्ति दुक्खभरभारिया चलणेसु निवडिऊण विमुक्ककंठं रोविउं पवत्ता। तओ–

खणमेक्कं रुयमाणी पडिसिद्धा [सा न] वीरदासेण।
उग्गिलियहिययदुक्खा जेण सुहं कहइ नियवुत्तं॥ ४२४
दोहि वि करेहिँ सीसं गहिऊणुद्धीकया खणद्धेण।
आलिंगिऊण गाढं निवेसिया निययअंकम्मि॥ ४२५
भणिया–'पुत्ति! कहिज्जउ काऽवत्था एरिसी इमा तुज्झ।
साहिज्जउ वुत्तंतो असंभवो तुह कहं जाओ?॥' ४२६
आसमरिसिसावाओ[12] सिट्ठो तीए असेसवुत्तंतो।
'इह ठाणम्मि पसुत्तं मोत्तूण गओ पिओ जाव॥ ४२७
अहमवि [चि]रस्स बुद्धा सुन्नमणा एत्थ घणवणे दीवे।
अमुणियतण्हुण्हछुहा अवियाणियजामिणीदियहा॥ ४२८
गहगहिया इव भमिया "हा पिययम! हा पिय!" त्ति पलवंती।
भीमम्मि एत्थ दीवे केइ दिणे तं न याणामि॥ ४२९

---

१ वाहणीओ. २ समुत्तिन्ने. ३ मविसेसं. ४ इ. ५ पहउ. ६ मिसुओ. ७. °बद्धाइं. ८ °वप्पो. ९ सासुट्ठिया. १० पम्हुट्ठ. ११ पुणुन्नवं. १२ °सावाउ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कइवयं[1]दिणपेरंते आगासगएण केणइ सुरेण ।
भणियं "न एत्थ भत्ता कस्स कए रुयसि तं मुद्धे[2] ! ॥" ४३०
मुणियं च मए सव्वं नूणं अवउज्झिया अहं तेण ।
कत्तो अवराहाओ एयं पुण नेव जाणामि ॥ ४३१
परिमुक्कजीवियासा भाविय संसारविलसियं विसमं ।
जिणवरभणियं धम्मं करेमि ता ताय ! एगग्गा ॥ ४३२
अणवरयमेव सुव्वइ अइघोरो एस जलहिनिग्घोसो ।
सावयजणा अणेगे भमंति पासेसु भयजणगा ॥ ४३३
कोंकंति[3] कोल्हुयं[4]गणा निसासु फेक्कंति भसुयसंघाया ।
घुरुग्घुरंति[5] वग्घा उप्पज्जइ नो भयं मज्झ ॥ ४३४
ताव च्चिय होइ भयं निवसइ हिययम्मि जाव जीवासा ।
सा वि मए परिचत्ता तत्तो कत्तो भउप्पत्ती ॥ ४३५
झायंती[6] वीरजिणं भाविंती विविहभावणाजालं ।
दूरियअट्टदुहट्टा तायाहं[7] एत्थ चिट्ठामि ॥ ४३६
ताय ! मसावि कहिज्जउ कहं [प. १५ B] तए जाणिया अहं इत्थ ।
अच्चब्भुयं महंतं ताय ! इमं भासए मज्झ ॥' ४३७
तो[8] भणइ चुल्लबप्पो[9]–'पुत्ति ! तुहावड्ढिई[10] इह पएसे ।
तह सुहियाए जाया किं न हु अच्चब्भुयं एयं ॥ ४३८
सा संपज्जइ बुद्धी हुंति सहाया वि तारिसा चेव ।
जारिसया जियलोए नरस्स भवियव्वया होइ ॥ ४३९
न कयाइ मज्झ सुंदरि ! मणोरहो आसि पोयवाणिज्जे ।
अत्थि घरे च्चिय विहवो सुहाइँ संतोससाराइं ॥ ४४०
तुह पुन्नचोइयस्स व जाया एयारिसी मई कह वि ।
गंतुं बब्बरकूलं करेमि अत्थज्जणं इण्हिं ॥ ४४१
चलिओ मित्तेहिँ समं संपत्तो जाव इह पएसम्मि ।
दिट्ठा सायरतीरे ताव पडाया पवणविहुया ॥ ४४२
तं दट्ठुं[11] ओइन्नो सुंदरि ! एयम्मि भूयरमणम्मि ।
दिट्ठाइँ तुह पयाइं नायाइं परिचयगुणेणं[12] ॥ ४४३
तेसिं अणु[13]सारेणं संपत्तो सुयणु ! तुह समीवम्मि ।
दिट्ठा सि तुमं संपइ निहि व्व दारिद्दतविएण ॥ ४४४

१ कयवय°. २ मुज्झइ. ३ कोकंति. ४ कोल्हय°. ५ घुरुघुरंति. ६ ज्झायंत्ति. ७ नायाहं. ८ नो. ९ °वप्पो. १० तुहाचट्ठिइ. ११ दट्ठं. १२ °गुणाण. १३ आणु°.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चिंतेमि तओ हद्धी सा तारिसरूपकंतिगुणकलिया ।
केण इमा मह धूया उवणीया एरिसमवत्थं ॥ ४४५
हा हा ! खलो अणज्जो निल्लज्जो निग्घिणो[1] महापावो ।
को नाम हुज्ज पुरिसो जेण इमा पाडिया दुक्खे ॥ ४४६
नूणं न अत्थि ठाणं नरयं मोत्तूण तस्स पावस्स ।
जेण जणवल्लहगुणा एसा दुहसंकडे छूढा ॥ ४४७
कह से चलिया चलणा कह वा हिययं झडे[2] त्ति न हु फुट्टं[3] ।
कह सो जीवइ लोए जेण कयं एरिसं पावं ? ॥ ४४८
हा बाले ! हा वच्छे ! सुलक्खणे ! सरलसुंदरसहावे ! ।
संपत्तं कह णु तए सुंदरि ! एवंविहं दुक्खं ? ॥ ४४९
अज्जेव तुमं जाया जाओ परमूसवो इमो अम्ह ।
दिट्ठा सि तुमं वच्छे ! जीवंती कह वि तं अज्ज ॥' ४५०
भणियं च सुंदरीए–'सीईभूयाइँ मज्झ अंगाइं ।
जाया य जीवियासा तुह मुहकमलम्मि दिट्ठम्मि ॥ ४५१
वसइ मम जीवलोओ विमलीभूयाइँ दिसिवँहुमुहाइं ।
अमएण व सेत्ता हं तुह मुहकमलम्मि दिट्ठम्मि ॥' ४५२

तओ महुरवयणोदएणं निव्वावियदुक्खानलो[5] नीया वीरदासेण महद्दहासन्नलयाभवणे । अब्भंगिया कल्लाणतिल्लेण, उवट्टिया सुरहिसोमालेहिं उवट्टणेहिं, मज्जाविया तिहिं उदएहिं, अलंकिया पहाणवत्थाइएहिं, भोइया विविहोसहसणाहं सरीरसुहकारिणीमहापेज्जं । किं बहुणा[4] ? महाविज्जेणेव विसिट्ठपत्थाइएहिं तहा तहा पडियरिया जहा थेवेहिं चेव वासरेहिं जाया साहावियसरीरा । तओ भणिया तेण सहायमणुस्सा–'भो ! संपन्नो अम्ह मणोरहाइरित्तो महालाभो नम्मयासुंदरिलंभेण, ता देह पच्छाहुत्तं पयाणयं ।' तेहिं भणियं–'मा एवं भणाहि । जओ आगया बहूणि जोयणसयाणि पच्चासन्नं बब्बरँकूलं वट्टइ । अन्नं च एस नम्मयालाभो उत्तमो [प. १६ A] सउणो । अओ चेव तत्थ गयाणं विसिट्ठो लाभो भविस्सइ त्ति । अओ सवहा जुत्ता बब्बरकूलजत्ता ।' एवं भणिओ दक्खिन्नसारयाए तहाविहभवियव्वयानिओगओ पयट्टो वीरदासो ।

थेवदिवसेहिं पत्तो पेल्लिज्जंतोऽणुकूलपवणेण ।
पत्तो बब्बरकूले पोयट्ठाणं मणभिरामं ॥ ४५३

---

१ निघिणो. २ झड. ३ फुट्टमा. ४ बहु°. ५ °दुक्खानल. ६ डुबणा. ७ बब्बर°.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तारिऊण भंडं संजंत्तिय[1]वाडयस्स मज्झम्मि।
निम्माविया य सहसा गुणलयणी भियगपुरिसेहिं ॥ ४५४

तीसे मज्झे सिज्ञा निम्मविया नम्मयाइ पाओगा।
चिट्ठइ य सुहासीणा[2] सुत्ता वा नम्मया तत्थ ॥ ४५५

अह अत्थि तत्थ दीवे नयरं नामेण बब्बरं रम्मं।
मणिकणगरयणपुन्नं बब्बरलोयस्स कयतोसं ॥ ४५६

तत्थऽत्थि हरिणलंछणलंछणकिरणुंज[3]लो जसपयासो।
नामेण इंदसेणो सुपयासो पुहइवीढम्मि ॥ ४५७

सो पुण हिओ पयाणं जणओ इव निययमंडलगयाणं।
दीवंतरागयाणं विसेसओ पोयवणियाणं ॥ ४५८

पोयट्ठाणपुराणं अंतो दोन्हं[4] पि नाइदूरम्मि।
बहुजणकयपरिओसं वेसाण निवेसणं अत्थि ॥ ४५९

विज्जइ य तत्थ गणिया हरिणीनामेण नयरसुपसिद्धा।
नरवइकयसामित्ता गणियाण सयाण सत्तण्हं ॥ ४६०

गिन्हइ सा वि विढत्तं तासिं सव्वासिमेव दासीणं।
सा वि पयच्छइ रन्नो भागं तइयं चउत्थं[5] वा ॥ ४६१

अत्थि यँ[6] रायपसाओ तीए सव्वेहिं पोयनाहेहिं।
अट्ठसयं दम्माणं दायव्वं रायभाडीए ॥ ४६२

नरवइकयप्पसाओ गव्वं सव्वो जणो वहइ पायं।
पयँई[7]तुच्छसहावो किं पुण पन्नंगणावग्गो ॥ ४६३

सोहग्गरूवगव्वं समुव्वहंती[8] तओ विसेसेण।
उम्मत्ता इव हिंडइ हीलंति[9] न[य]रजणं सव्वं ॥ ४६४

[वीरदासस्स हरिणीवेसागिहे गमणं]

निसुयं च तओ तीए जंबुद्दीवाउ आगयं वहणं।
सामी उ वीरदासो तस्स त्ति जणप्पवायाओ ॥ ४६५

गोससमयम्मि ताहे महग्घवत्थाण जुवलयं घेत्तुं।
पहियं चेडीजुयलं निमंतयं पोयसामिस्स ॥ ४६६

भणिओ य सप्पणामं कोसल्लियमप्पिऊण सो तेण।
'विन्नवइ अज्ज ! हरिणी अम्हाणं सामिणी एवं ॥ ४६७

१ संजत्ति°. २ सुहा°. ३ °करिणु°. ४ दोन्नं. ५ चउट्ठं. ६ से. ७ पयइ°.
८ °व्वहंता. ९ हीलंती.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होयव्वमज्झ[1] सामिय ! अम्हाणं पाहुणेहिँ तुब्भेहिं ।
अम्हं रायाएसो कायव्वं तुम्ह पाहुन्नं ॥' ४६८
ता भणइ वीरदासो – 'कहियव्वं सामिणीय तुह वयणं ।
मवि(दी?)यमेयं सव्वं कयं च तुब्भेहिँ दट्ठव्वं ॥ ४६९
अम्ह वि रायाएसो पडिवज्जेयव्वं[2] इमं तुमं भद्दे ! ।'
भणिऊण तासिमप्पइ अट्ठसयं रूढ(व?)दम्माणं ॥ ४७०
गंतूण चेडियाहिँ[3] कहियं हरिणीएँ वीरसंलवियं ।
उवणीयं अट्ठसयं दम्माणं पाहुडं ताहिं ॥ ४७१
जाणियहियियाकूया[4] कुविया हरिणी विचिंतई 'नूणं ।
आगंतु[5] सो नेच्छइ करेइ मम माणपरिहाणिं[6] ॥ ४७२
दोहग्गिणि त्ति लोए मज्झ पसिद्धी अणागए होही ।
ता पेसिऊण दव्वं कोक्केमि[7] तमेव गेहम्मि ॥' ४७३
पेसेइ तओ चेडिं[8] – 'भणिज्ज धणमप्पिऊण तं वणियं ।
न हि मह धणेण कज्जं तुमम्मि गेहे [प. १६ B] अणिंतम्मि ॥ ४७४
नो खलु रायाएसो "मुहाइ गेण्हेज्ज तं तओ वित्तं ।
किंतु विणएण भामिणि ! आराहित्ता मणं तस्स ॥" ४७५
पडिभणइ वीरदासो – 'आराहियमेव मह मणं तुमए ।
सब्भावसारमेयं निमंतणं कारयंतीए ॥ ४७६

भणियं च –

वाया[9] सहस्समइया सिणेहनिज्झाइयं सयसहस्सं ।
सब्भावो सज्जणमाणुसस्सं[10] कोडिं विसेसेइ ॥ ४७७
ता मा काहिसि भद्दे[11] ! अम्होवरि अन्नहा मणं किंपि ।'
इय भणिऊण सदव्वा विसज्जिया सा गया तुरियं ॥ ४७८
किं पुण सो नागच्छइ ताओ[12] अन्नाउ वयणकुसलाओ ।
खुज्जो वि पेसियाओ णेगाओ छेयं[13]चेडीओ ॥ ४७९
तम्मि समयम्मि दिट्ठा आसन्ना नम्मया जणयवयणं ।
मुहु मुहु निज्झायंती सिणिद्धलोलेहिँ नयणेहिं ॥ ४८०
तीए सरीरसोहं दट्ठूण सविम्हियाउ सव्वाओ ।
अन्नोन्नं वयणाइं पलोइउं झ[14] त्ति लग्गाओ ॥ ४८१

---

१ °सज्झ. २ °वज्जेयव्वं. ३ चोडियाहिंइं. ४ °याकूवा. ५ आगंतु. ६ °हाणी. ७ कोकेमि. ८ चेडी. ९ वाया. १० °माणुमस्स. ११ भिद्दे. १२ नाओ. १३ च्छेयं°. १४ झ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri.

भणंति य–

'ता रूववई नारी आसन्नं जा न होइ एयाए ।
सहइ गहनाहजुण्हा सूरपहा[1] जा न अल्लियइ ॥' ४८२

पुणरवि सविणयमेवं भणिओ पोयस्स नायगो ताहिं ।
'अज्ज ! पसीयसु[2] हरिणिं[3] हरिणीवयणं कुणसु कन्ने ॥ ४८३

नयणेहिँ को न दीसइ केण समाणं न हुंति उल्लावा ।
हिययाणंदं जं पुणु जणेइ[4] तं माणुसं विरलं ॥ ४८४

दिट्ठो सि न तं सुंदर ! निसामिया तुह गुणा अणन्नसमा ।
तुह दंसणूसुयमणा[5] तेणाहं सुट्ठु संजाया ॥ ४८५

न धणेण मज्झ कज्जं किं पुण नासेइ मज्झ गुणमाणो ।
जइ न कुणसि नियचलणुप्पलेहिँ गेहं मम पवित्तं ॥ ४८६

नासइ तुज्झ वि नियमा गरुयत्तं मह गिहं अणितस्स ।
जं संलविही लोगो विहुणो(?) तिट्ठावरो एस ॥' ४८७

एवं बहुप्पयारं भणियं सोऊण तासि दासीणं ।
'जणरंजणत्थगमणे धणवइ ! को नाम दोसो त्ति ॥' ४८८

इय मित्तवयणसवणा काममकामो वि पुरिसदुगसहिओ ।
सहस त्ति वीरदासो पत्तो गेहम्मि हरिणीए ॥ ४८९

अब्भुट्ठिऊण तीए पारद्धा आसणाइपडिवत्ती ।
एत्थंतरम्मि निहुयं[6] पढियं एगाएँ चेडीए ॥ ४९०

'अन्नस्स बंधभोइणि ! नवपव्वईसेल्ल[7][क]यबइल्लस्स ।
आयारमेत्तवसिओ[8] न कज्जकरणक्खमो[9] एस ॥' ४९१

अमुणियतब्भावाए हरिणीए पुच्छिया रहे[10] चेडी ।
'साहेहि फुडं भद्दे ! भावत्थमिमस्स पढियस्स ॥' ४९२

तीए भणियं–

'एय समीवे रमणी[11] दिट्ठा अम्हाहिँ तत्थ पत्ताहिं ।
उव्वसिरंभतिलोत्तम[12]गोरीणं[............] ॥ ४९३

तरुणजणमोहकारणभुवणब्भुयभूयदेहसोहाए ।
तीसे पासम्मि धुवं न सहसि तं हरिणि ! हरिणि व्व ॥ ४९४

तं मोत्तूण न कत्थइ मणभमरो रमइ नूणमेयस्स ।
ता किं उवयारपरिस्समेण बज्झेण एयस्स ॥ ४९५

---

१ °प्पहा. २ पसीयस. ३ हरिणी. ४ जाणइ. ५ °मणो. ६ तिहुयं. ७ °पव्वय°. ८ आयर°. ९ °क्खमो. १० दट्ठे. ११ रमणीहिं. १२ °त्तिलोत्तिम°.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावत्थो तुह कहिओ सामिणि! एयस्स निययपढियस्स।
नाऊण इमं तत्थं जं रोयइ तं करिज्जासु॥' ४९६
हरिणी भणइ – 'हला जइ न करिस्स[प. १७ A]इ मज्झ इच्छियं एसो
ता एयनाममुद्दं तुह अप्पिस्सं कह वि घेत्तुं॥ ४९७
चिंधेण तेणं हरिउं आणेज्जह एयवल्लहं तरुणिं।
पच्छिमदारेण पवेसिऊण भूमीगिहं निज्ज॥ ४९८
कायव्वं पडिकूलं दक्खिन्नविवज्जियस्स एयस्स।'
सामच्छिऊण एवं अल्लीणा सत्थवाहस्स॥ ४९९
अवउज्झियनेहाण वि विन्नाणं किंपि होइ वेसाणं।
पयडंतीओ नेहं जेण जणं पत्तियावंति॥ ५००
अब्भंगिओ तओ सो सुगंधनेहेण नेहरहियाए।
संवाहिय उव्वट्टिय ण्हविओ[१] ण्हाणेहिँ विविहेहिं॥ ५०१
परिहाविओ[४] य तत्तो सोमालाइं महग्घवत्थाइं[५]।
आलिंपियं च अंगं गंधुक्कडचंदणाईहिं॥ ५०२
काऊण कोउयाइं कप्पूरागरु[६]तुरुक्कमाईहिं।
विहिया से धूवणिया तस्स मणोरंजणपराए॥ ५०३
बहुहावभावसारं नाणाविहचाडुकम्मकुसलाए।
तह तह भणिओ वि घणं न पवत्तो तीय वयणम्मि॥ ५०४
भाणीय सुंचमइंहरि (भणिया च सुंदरि अहं?) संपइ वच्चामि अप्पणो ठाणं।'
अंसुजलल्लियवयणा[७] पुणो वि धुत्ती इमं भणइ॥ ५०५
'[......] अभग्गमाणा नयरपहाणा बहुं पि झक्खंती।
तुमए नाहं गणिया उद्दारूढेण सुणिय व्व॥ ५०६
तह वि हु मे नयणाइं निम्माणाइं न चेव तिप्पंति।
तुह दंसणस्स ता कुण खणमेक्कं जूयगोट्ठिं पि॥' ५०७
हरिणिपरिओसहेउं पडिवन्नं तेण उज्जुहियएण।
कंजियजलेण छलिओ धुत्तीए जुम्भमज्जारो॥ ५०८
विस्संभभावियाणं पवंचणे किमिह नाम पंडिच्चं।
अंकपसुत्ते हणिए[९] संसिज्जइ केण सूरत्तं॥ ५०९
अह सा पहट्ठवयणा सारीपट्टं ठवित्तु तस्सग्गे।
परिकीलिउमारद्धा चिंचियगयदंतसारेहिं॥ ५१०

---

१ नेण. २ भूमि°. ३ ण्हविउ. ४ परिहारिओ. ५ °वत्थाहिं. ६ °रागर°. ७ °वयणो.
८ जुत्त°. ९ हणिओ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लद्धावसरा घेत्तुं दाहिणपाणिं[1] भणेइ – 'ते सुहय ! ।
मुद्दारयणमपुव्वं कुऊहलं एरिसे मज्झ ॥' ५११

भणइ य निय[2]चेडिं तो – 'दंसेहि इमं सुवन्नयारस्स ।
एयाए घडणीए मुद्दं सिग्घं घडावेहि ॥ ५१२

उट्ठिउकामो एसो आगंतव्वं अओ तुरियतुरियं ।'
इय भणिय पुव्वचेडी पट्ठविया गहियसंकेया ॥ ५१३

[हरिणीचेडीहिं नम्मयासुंदरीए हरणं, तीए पलावं च]

चेडीवंद्रसमेया पत्ता सहस त्ति पोयठाणम्मि ।
दिट्ठा य सुहनिसन्ना असहाया नम्मया ताहिं ॥ ५१४

'भद्दे ! सो तुह वणिओ हरिणीभवणम्मि संठिओ संतो ।
जाओ अपडुसरीरो तेण तुमं सिग्घमाहूया[3] ॥ ५१५

तुह पच्चयजणणत्थं मुद्दारयणं इमं तु पट्ठवियं ।'
एवं भणमाणाहिं समप्पिया मुद्दिया तीसे ॥ ५१६

सोऊण इमं वयणं संभंता नम्मया विचिंतेइ ।
'न घडइ तायस्स इमं अलियं जंपंति एयाओ ॥ ५१७

अहवा पयइअणिच्चे संसारे एरिसं पि संभवइ ।
अन्नह मुद्दारयणं कीस इमं पेसियं तेण ॥ ५१८

तह वि न जुत्तं गंतुं[4] असहायाए इमाइ सह मज्झ ।
मग्गेमि ता सहायं परियणमज्झे जणं कं[5] पि ॥' ५१९

उट्ठेइ निहालेइ य पुणो पुणो निययमाणुसं कं[5] पि ।
भवियव्वयानिओ[प. १७ B]या न य दिट्ठो को वि कत्थावि ॥ ५२०

किंकायव्वविमूढा ठाउं गंतुं च नेव चाएइ ।
तो ताहिँ पुणो भणिया – 'न एसि जइ मुंच ता अम्हे ॥' ५२१

चिंतइ पुणो वि एसा अगयाए नूण रूसिही ताओ ।
जाणइ जुत्ताजुत्तं सो चेव किमम्ह चिंताए ॥ ५२२

पुव्वकयासुहकम्मेहिँ चोइया तासिमग्गओ ठाउं ।
संचलिया सा बाला बलवं[6] खलु कम्मपरिणामो ॥ ५२३

ताहिँ परिवेढिया सा नाया केणावि नेवँ[7] वचंती ।
भूमीगिहम्मि छूढा पिहियं दारं च तो ताहिं ॥ ५२४

---

१ °पाणी. २ तिय°. ३ °साहूया. ४ गुत्तं. ५ किं. ६ वलंब. ७ नेय.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिट्ठम्मि अंधयारे हरिया एयाहिँ इय परिन्नाए ।
मुच्छानिमीलियच्छी पडिया सहस त्ति धरणीए ॥ ५२५
कहकह वि लद्धसन्ना विमुक्कपुक्कं सरेण करुणेण ।
घणमवि चिरं परुन्ना न सुया केणावि बज्झेणं[1] ॥ ५२६
'हा हा ! अकज्जमेयं किं राया नत्थि कोइ इह नयरे ।
हरियाऽहमणवराहा निब्भयचित्ताहि दासीहिं ॥ ५२७
एसा णु भिल्लपल्ली किं वा चोराण एस आवासो ।
जमहमकयावराहा हरिया एयाहिँ रंडाहिं ॥ ५२८
किं नत्थि कोइ रक्खो सोया[2] वा नायपेच्छओ को उ[3] ।
जेणेवमणवराहा हरिया हं चोरनारीहिं ॥ ५२९
सूरपयडम्मि दिवसे हरिया हं पिच्छ पावविलयाहिँ[4] ।
सो एस छत्तहंगो[5] जाओ रायम्मि जीवंते ॥ ५३०
हा तायय ! कत्थ गओ मा मा अन्नत्थ मं गवेसेसु ।
अच्छामि एत्थ अहयं छूढा नरओवमे घरए ॥ ५३१
तं ताय ! कत्थ चिट्ठसि पत्ता तुह मुद्दिया कहमिमाहिँ ।
अम्हाण वि जीएणं कुसलत्तं होज्ज तुह ताय ! ॥ ५३२
तुह मुद्दादंसणओ मुद्धा हं ताय ! जाणमाणा वि ।
मा रूसि[हि] त्ति ताओ भीया एयाहिँ सह चलिया ॥ ५३३
हा ! निविडा[6] कम्मगई पत्तो वीओ[7] न कोइ तुह सत्थे ।
विहिणा खलेण तायय ! रुद्धा सव्वे वि दिसिभाया ॥ ५३४
तुह दंसणेण तायय ! छुट्टा पुव्वं पि घोरदुक्खाओ ।
ता एहि एहि पुणरवि तुरियं मह दंसणं देसु ॥ ५३५
आमं[8] भणंती तायय ! तं किर अच्चंतवल्लहो मज्झ ।
तं अलियं चिय जायं तुह विरहे जीवमाणीए ॥ ५३६
हा ताय ! मज्झ हिययं वज्जसिलायाहिँ निम्मियं नूणं ।
जं अज्ज वि तुह विरहे न जाइ सयसिक्करं सहसा ॥ ५३७
हा ताय ! अहं मूढा जुत्ताजुत्तं वियाणमाणी वि ।
तुह करभूसणमुद्दा पडिया दुक्खदहे घोरे ॥ ५३८
वरमासि तम्मि दीवे मया अहं ताय ! सुद्धपरिणामा ।
संपइ इयदुक्खत्ता न याणिमो कह भविस्सामि ॥ ५३९

---

१ वज्झेण. २ सोढा. ३ ओ. ४ °वलियाहिं. ५ सो सए ससछत्त°. ६ निबडा. ७ वीओ. ८ भासं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जह वग्घाओ भीया सहसा सीहस्स पडइ उच्छंगे ।
तह मोइया वि तुमए इमम्मि दुहसंकडे पडिया ॥ ५४०
नूणं मुणिवरसावो अज्ज वि न हु निरवसेसओ होइ ।
उवणयमेरिसदुक्खं पुणरवि जं दारुणं मज्झ ॥ ५४१
अंगीकयमरणाओ किं काही मज्झ आवई एसा ।
न हु रि स महाणुभावो झिञ्जिस्सइं[1] मह कए ताओ ॥ ५४२
पाणेहिंतो[2] वि पिया तस्साहं आसि भुत्त[प. १८ A]सुत्ता वि ।
मह विरहदुक्खिओ सो पाविस्सइ किं न याणामि ॥' ५४३
एयाणि य अन्नाणि य पलवंती पुणु पुणो वि मुच्छंती ।
करुणसरं रुयमाणी अच्छइ घरए नरयतुल्ले ॥ ५४४
दासीहिँ पुणो गंतुं हरिणीहत्थे समप्पिया मुद्दा ।
भणियं च – 'तुस सामिणि ! अम्हेहिँ कओ तुहाएसो ॥' ५४५
तो भणइ वीरदासो – 'मयच्छि ! [ग]च्छामि निययमावासं ।'
नन्न त्ति भणंतीए पत्तो सो पोयठाणम्मि ॥ ५४६

[वीरदासस्स नम्मयासुंदरीगवेसणा, गिहं पइ पयाणं च]

पढमं चिय परिखिवई दिट्ठिं सो नम्मयापडकुडीए ।
न य दीसइ[3] त्ति पुच्छइ–'कत्थ गया नम्मया कहह ? ॥' ५४७
पडिभणइ परियणो सो – 'जाणामो अत्थि पडकुडीमज्झे ।
अन्नत्थ सा न गच्छइ निरूवियाँ[4] तो न अम्हेहिं ॥' ५४८
'नूणं मज्झ पएहिं हरिणीगेहम्मि सा गया होही ।'
गंतूण तत्थ पुच्छइ ताओ पभणंति – 'नाऽऽयाया ॥' ५४९
ताहे अड्डवियड्डो(ड्डुं ?) तमन्निस्सन्तो[5] पुणो भण(म)इ तुरियं ।
भणइ य परियणमिच्चे – 'गवेसिमो नम्मयं दट्ठुं ॥' ५५०
सव्वत्तो अन्नेसियाँ[6] सबहिरब्भंतरे पुरे तम्मि ।
पुच्छंतेहि वि नूणं पउत्तिमेत्तं पि नो पत्तं ॥ ५५१
तो गंतूण नरिंदो भणिओ – 'दावेहि पडहयं देव ! ।
जो मह दंसइ धूयं तस्स पसन्नो अहं सामि ! ॥ ५५२
जेत्तियमेत्तं चँ[7] तुला तुलइ पयच्छामि तित्तियं कणयं ।
इत्तियअत्थेण पुरे कारिज्जउ घोसणं देव ! ॥' ५५३

१ झिञ्जिस्सइ. २ पाणिहंतो. ३ दीसय. ४ निरुविया. ५ तमनिस्सन्नो. ६ अन्निसिया. ७ व,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिन्नि य दिणाइँ रन्ना दवाविओ पडहगो उभयकालं ।
घोसणएण समाणं न य लद्धा कत्थइ पउत्ती ॥ ५५४

सहस त्ति वीरदासो मुच्छाविहलंघलो महीवीढे ।
पडिओ निरासचित्तो मिलिओ य तओ सयणवग्गो[1] । ५५५

चंदणजलेण सित्तो पवीइओ विविहवीयणाईहिं ।
कहकह वि लद्धसन्नो ताहे पुक्करिउमारद्धो ॥ ५५६

'मुट्ठो [अहं] अणाहो इत्तियलोयस्स मज्झयारम्मि ।
जीवियभूयं धूयं सहस च्चिय नासयंतेण ॥ ५५७

अवहरियं नयणं[2]जुयं खलेण उद्दालियं च सव्वस्सं ।
छिन्नं च उत्तिमंगं जेण हिया नम्मया[3] मज्झं[4] ॥ ५५८

हा पुत्ति ! कत्थ चिट्ठसि कत्तो गच्छामि कत्थ पुच्छामि ।
दच्छिस्सं कत्थ गओ तुह मुहचंदं कहसु वच्छे ! ॥ ५५९

पत्तं महानिहाणं सहसा भूएहिँ मज्झ अवहरियं ।
दिट्ठा वि सुन्नदीवे न दीससे जह तुमं अज्ज ॥ ५६०

जम्मंतरम्मि कस्सइ अवहरियं किं मए महारयणं ।
अवहरिया सि किसोअरि ! तेण तुमं मह अउन्नस्सं[5] ॥ ५६१

दाइस्सं कस्स मुहं साहिस्सं कस्स निययदुच्चरियं ।
भट्ठेण व जेण मए करट्ठियं हारियं रयणं ॥' ५६२

इय विविहं पलविंतो भणिओ मित्तेहिँ ईसि हसिऊण ।
'पुरिसो त्ति तुमं वुच्चसि पलवसि रंड व्व किं एवं ॥ ५६३

किं पलविएण इमिणा एही कत्तो वि नम्मया तुज्झ ? ।
उज्झसु कायरभावं धरेहि धीरत्तणं हियए ॥ ५६४

अवि य–

सिरपिट्टकुट्टणेणं जुज्झई[6] अह कायराण ववहारो ।
धीरा लद्धविणट्ठे उवायतत्ताणि भावंति[7] ॥ ५६५

भा[प. १८ B]वेहि फुडं सुंदर ! चेट्ठामो जाव इत्थ दीवम्मि[8] ।
ताव न[9] हु होइ पयडा सुचिरेण वि नम्मया तुज्झ ॥ ५६६

ता गंतूण सनयरं आगच्छामो पुणो वि पच्छन्ना ।
जह न वियाणइ लोओ जुत्ता अन्नाभिहाणेहिं ॥ ५६७

१ °वग्गो. २ नयमेज्जुयं. ३ नम्मयो. ४ मज्झं. ५ जउन्नस्स. ६ रुज्झइ.
७ भातंति. ८ दीवंसि. ९ ज.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ताहे पेच्छेस्सामो[1] वियरंतिं[2] नम्मयं न संदेहो ।
परियाणियपरमत्था जं जुत्तं तं करीहामो ॥' ५६८
सोऊण मित्तवयणं उवायमन्नं अपिच्छमाणेण ।
जुत्तमिणं ति कलित्ता पडिवन्नं वीरदासेण ॥ ५६९
विणिओइऊण खिप्पं नियभंडं[3] गहियपउरपडिभंडा ।
चलिया पडिप्पहेणं संपत्ता नम्मयानयरं ॥ ५७०
सिट्ठा य बंधवाणं वत्ता मेत्तेहिं जा जहावत्ता ।
भुज्जो वि वीरदासो घणं[4] परुन्नो सयणसहिओ ॥ ५७१
रोइत्तुं[5] चिरं सयणा सोयंता संलवंति अन्नोन्नं ।
'हा ! निग्घिणो हयासो पुत्तो सो रुद्ददत्तस्स ॥ ५७२
नत्थि वयणे पइट्ठा[6] एयाण कुले य निच्छओ[7] चेव ।
दिट्ठसयस्स(?) वि वयं पयारिया तेण पावेण ॥ ५७३
अहवा सो चेव खलो निहओ[8] केणावि असुहकम्मेण ।
एरिसमित्थीरयणं[9] उज्झइ कहमन्नहा मूढो ॥ ५७४
मा गेण्हह से नामं न कज्जमम्हाण तस्स तत्तीए ।
सोएमो तं बालं निद्दोसं आवयावडियं ॥ ५७५
सा परघरं[10]संपत्ता सहिही नूणं कयत्थणा भीमा ।
काही न सीलभंगं पाणच्चाए[11] वि नियमेण ॥ ५७६
अवि य -
अवि कंपइ कणयगिरी उदेइ सूरो वि पच्छिमदिसाए ।
उड्डइ जलम्मि अग्गी न हु खंडइ नम्मया सीलं ॥ ५७७
उइयं न णु पुव्वकयं कम्मं तीए महाणुभावाए ।
उवरुवरिमावयाओ उवेंति[12] जं सुद्ध[13]सीलाए ॥' ५७८

एवं च नम्मयासुंदरीदुक्खदावानलडज्झमाणमाणसो[14] सव्वो वि नम्मयापुरजणो दुक्खेण कालं गमंतो चिट्ठइ ।

[हरिणीए नम्मयासुंदरिं पइ कवडसंभासणं]

सा वि पुण नम्मयासुंदरी तम्मि य चारगगिहे रुयमाणी विलवमाणी, बीयं[15]दिवसे चेडीहिं उवणीयं भोयणं [अ]भुंजमाणी, बहुकूडकवडभरियाए हरिणीए [भणिया]-'वच्छे ! भुंजाहि भोयणं । न किंचि अम्हे तुहासुंदरं[16]

1 पेच्छेसामो. 2 वियरंती. 3 हियभडं. 4 घण. 5 तोइत्तु. 6 पयट्ठा. 7 नेच्छओ. 8 निट्ठओ. 9 °सित्थी°. 10 परघूर°. 11 °च्चए. 12 उवेइ. 13 सुद्द°. 14 °माणसा. 15 बीय°. 16 °सुंदर.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चिंतेमो । किं तु सो तुह वाणियगो. अम्ह संतियं किं[1] पि आहवं न देइ तेण तुममवरुद्धा सि । जया सो दाही तया तुमं पि मुच्चिहिसि[2] । मा मन्नेसि "सो मम दत्तं न याणइ[3]" जाणेइ चेव । किं तु वणियाणं जणयाओ तणयाओ जणणीओ घरणीओ वि सयासाओ अत्थो अच्चंतवल्लहो होइ । तेण दायव्वं पि दुक्खेण देंति । जइ तस्स तुमं पिया ता सिग्घमेव दाही । तुमं पि मुच्चिहिसि । एस परमत्थो ।' तओ नम्मयाए चिंतियं–

'एसा जंपइ महुरं हियए हालाहलं विसं वसइ ।
को पत्तियइ खलाए पावाए चप्फलगिराए ॥ ५७९
न कयाइ मज्झ ताओ न देइ आहव्वयं मुहुत्तं पि ।
एवभणियस्स उच्चियं[4] करेमि पडिउत्तरं किं पि ॥' ५८०

एवमालोचिऊणं[5] भणियं नम्मयासुंदरीए–'भोइणि! जइ एवं ता मुंचाहि मं जेण अज्जेव तुह [आ]हवं दुगुणं तिगुणं वा दवावेमि । देमि तुह दाहिण[ह]त्थं, अन्नं [प. १९ A] वा दुक्करं सवहं कारेहि ।' तओ तीए भणियं–'भुंजाहि जइ ते इच्छा । नाहं सवहेहि पत्तियामि' त्ति भणंती उट्ठिऊण निग्गया हरिणी । न भुत्तं नम्मयाए । तयइदेहम्मओ(तइयदियहे मरउ ?) ताव छुहाए त्ति भाविंती न पत्ता चेव तीए सगासं हयासा नोवणीयं च भोयणं । पुणो चउत्थे दिणे 'मा मरिहि' त्ति संकाए समागया भणिउं च पवत्ता–'निब्भग्गे! करेहि कवलग्गहणं । जीवंतो जीवो कल्लाणभायणं भवइ त्ति ।' ताहे 'अणुकूलो[7] मम[8] एस वाइओ सउणो । नूणं भविस्सइ मे जीयमाणीए सामन्नसंपत्ती । एसा वि अणुवत्तियवयणा सिसिरहियया होइ' त्ति कलिऊण वत्ताजुत्ताजुत्तवियारिणीए– 'मम एगंतहियया लक्खिज्जसि ता करेमि तुहाएसं जेण अन्नं पि मे[9] हियं तुमए चिंतियव्वं' ति बिंतीएँ[10] अट्ठमभत्ताओ पाणधारणनिमित्तं भुत्तं नम्मयाए ।

एवं अट्ठमभत्ता पुणो पुणो पारणं करेमाणी ।
तम्मि घरयम्मि चिट्ठइ[11] रुयमाणी नरयसारिच्छे ॥ ५८१
हंसी पंजरछूढा सरइ जहा अविरयं कमलसंडं ।
तह नम्मया वि सुमरइ निरंतरं जणणिजणयाणं ॥ ५८२
न तहा बाहइ[12] तीए नियअंगे उट्ठिया महापीडा ।
जह पित्तियस्स हियए भाविंतीए विरहदुक्खं ॥ ५८३
पच्चासन्नावासा वग्घीए कंपइ(ए) जहा हरिणी ।
तह कंपमाणहियया भएण एसा[13] वि हरिणीए ॥ ५८४

---

१ कि. २ सुविहिसि. ३ याणाइ. ४ उच्चियं. ५ °मालोचिऊण. ६ लियया. ७ अलुकूलो. ८ सम. ९ से. १० वींतीए. ११ चिट्टइ. १२ वाहइ. १३ एभा.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिणगुणगणगहियाइं थुइथोत्ताइं पुणो परिगुणंती ।
चिट्ठइ मोक्खासाए परिभाविंती इमं हियए ॥ ५८५

'कइया होज्ज दिणं तं जत्थाहं साहुणीण मज्झम्मि ।
धम्मज्झाणोवगया करेज्ज सिद्धंतसज्झायं ॥' ५८६

[नम्मयासुंदरीए गणियत्तणे हरिणीकयोवएसो]

अन्नया जाणिऊण पडिगए पवहणवणिए 'सिद्धं मम वदं(कवडं?) ति पहट्ठ[1]हियया समायाया नम्मयासुंदरिसमीवं हरिणी, भणिउं पवत्ता – 'हला! पेच्छ तेण वणिएण जं कयं । न दिन्नं मम देयं । तुमं पि मोत्तूण णट्ठो । धिरत्थु तस्स ववहारो जो तिट्ठाए मोहिओ नियमाणुसं परिच्चयइ । ता भद्दे! मा तुमं तस्स कारणे खिज्जिहिसि । चेट्ठ निव्वुया मम गिहे इमिणा मम परियणेण सद्धिं[2] विलसंती । नाहं तुह भाराओ बीहेमि । मम वयणकारिणीए न ते किं पि मंगुलं भविस्सइ ।' तओ 'नूणं मम पउत्तिमपाविऊण निरासीभूओ पडिगओ ताओ । होउ तस्स कुसलं ममाए मंदभग्गाए न याणामि[3] किं पि अणुभवियव्वं' ति चिंतिऊण पडिभणियं—'का ममानिव्वुई तुह समीवट्ठियाए? तुममेव मम हियाहियं चिंतेसि' त्ति वुत्ते नीणिया भूमिगिहाओ, गिहमज्झे मोकलाचारेण चेट्ठइ त्ति । अन्नया पुणो वि भणिया हरिणीए – 'सुंदरि! दुल्लहो माणुसीभावो, खणभंगुरं तारुन्नं, एयस्स विसिट्ठसुहाणुभवणमेव फलं । तं च संपुन्नं वेसाणमेव संपडइ, न कुलंगणाणं । जओ पहाणमवि भोयणं पइदियहं भुंजमाणं न जीहाए तहा सुहसुप्पा[ए]इ, जहा नवनवं दि[प. १९ B]णे दिणे । एवं पुरिसो नवनवो नवनवं भोगसुहं जणइ य ।

अन्नं च –

वियरिज्जइ सच्छंदं पेज्जइ मज्जं च अमयसारिच्छं ।
पच्चक्खो विव सग्गो वेसाभावो किमिह बहुणा? ॥ ५८७

तुज्झ वि रइरूवाए पुरिसा होहिंति किंकरागारा ।
वसियरणभाविया इव दाहिंति मणिच्छियं[4] दव्वं ॥ ५८८

एयाओ सव्वाओ अद्धं मे दिंति नियविढत्तस्स ।
तं पुण मह इट्ठयरी देज्जाहि चउत्थयं भायं ॥' ५८९

इय दासीधुत्तीए नाणाविहजुत्तिउत्तिनिउणाए ।
भणिया वि न सा भिन्ना जलेण छुहलित्तभित्ति व्व ॥ ५९०

१ पहट्ठ°. २ सद्धिं. ३ याणिमो. ४ मणच्छियं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भणिउं च पवत्ता–

'जं जस्स जणे रूढं जुज्जइ तस्सेव मामि! दं(तं) कम्मं ।
न सहइ चलणाभरणं सीसम्मि निवेसियं कह वि ॥ ५९१

भणियं च–

जं जसु घडियं तं तसु छज्जइ उव्वह पाइ कि नेउरु बज्झइ ? ।
सुट्ठु वि भुक्खइ भुल्लउ न कुणइ कइय वि चम्मयरत्तणु गिहिवइ ॥ ५९२

तुम्हाणं चिय सोहइ एसायारो न जाउ अम्हाणं ।
लज्जाए मह हिययं फुट्टइ व इमं[1] सुणंतीए ॥ ५९३

जं जस्स कुले रूढं तं तस्सासुंदरं न पडिहाइ ।
भणइ जणे चम्मयरो सुट्ठु सुयंधं घरं मज्झ ॥ ५९४

वुत्ता सि मए भामिणि ! सव्वं काहामि जं तुमं भणसि ।
एसंजली कओ मे मा गणियत्तं समाइससु ॥' ५९५

पुणरवि भणेइ धुत्ती–'एसो धम्मो जयम्मि सुपहाणो ।
जं बहुनराण सोक्खं कीरइ अंगप्पयाणेण ॥ ५९६

अहवा धम्मे दिज्जइ नियय सरीरेण अज्जिओ अत्थो ।
एसो वि महाधम्मो जइ कज्जं तुज्झ धम्मेण ॥' ५९७

पडिभणइ नम्मया तं–'धम्मो पाविज्जए[2] ण विभवेण ।
उप्पज्जइ इह भामिणि ! सुणेहि इत्थं पि दिट्ठंतं ॥ ५९८

धत्तुरीय[3]बीयाओ न होइ अंबस्स[4] उग्गमो लोए ।
एवं[5]ज्जियदव्वाओ एवं धम्मो वि ना होइ ॥' ५९९

पुणरवि हरिणी[6] जंपइ–'नूणं अइपंडिया सि तं बाले ! ।
न मुणसि अत्थेण विणा[7] कह पूरिज्जइ जठरपिठरी ॥ ६००

अत्थस्सेसोवा[8]ओ किलेसरहिओ सरीरसुहजणओ ।
विहिणा अम्हं सिद्धो तम्हा इत्थं समुज्जमसु ॥' ६०१

भणियं च नम्मयाए–'अत्थमु[9]वज्जेमि जइ तुमं भणसि ।
कत्तेमि लण्हसोत्तं[10] करेमि गंधि व धूयं वा ॥ ६०२

जाणामि रसवइविहिं पक्कन्नविहिं च बहुविहं काउं ।
दंसेहि कंचि कम्मं एगं गणियत्तणं मोत्तुं ॥' ६०३

---

१ इम. २ पाविज्जिए. ३ धुत्तीरय°. ४ अवस. ५ एय°. ६ हारिणी. ७ विण. ८ °मोवाओ. ९ अत्थसु°. १० लण्हमोसं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[हरिणीकया नम्मयासुंदरीकयत्थणा]

इय सोउं आरुट्ठा पाविट्ठा निठ्ठुरेहिं[1] वयणेहिं ।
हिययगयकालकुट्टं[2] सहसा उग्गिरिउमारद्धा ॥ ६०४
'पावे ! सामेण मए भणिया न करेसि तह वि मह वयणं ।
नूणं पयंडदंडं अज्ज वि मग्गेसि निब्भग्गे ? ॥ ६०५
संपइ तं मज्झ वसे कारिस्समवस्स तो मणोभिट्ठं[3] ।
किं कइया वि हयाँसे ! लुज्झइ अह गड्डरा सवसा ॥' ६०६
पडिभ[प. २० A]णइ नम्मया तं – 'जीवंती न हु करेमि गणियत्तं ।
मारेसु व चूरेसु व जं वा रोयइ तयं कुणसु ॥' ६०७
तो तीए क(टु)ट्ठाए आरुट्ठो कामुओ[5] समाहूओ ।
भणिओ – 'बला वि भुंजसु इह भवणे महिलियं एगं ॥' ६०८
आलवइ सुंदरी तं – 'भाय ? अहं तुज्झ भइणिया एसा ।
मा कुणसु मज्झ दोहं जणणीसवहेण सविओ सि ॥' ६०९
सो वि विलक्खो नट्ठो अन्ने अन्ने वि सा महापावा ।
जे जे पेसेइ नरे ते वारइ नम्मया एवं ॥ ६१०
सुट्ठुअरं सा पावा कुविया दंडाहया पुयंगे व्व ।
आणवइ निययदासे[6] – 'रे रे ! आणेह कंबाओ ॥' ६११
आणीयाओ तेहिं कणवीराईण लंबकंबाओ ।
भणिया – 'पहणह एयं जह चयइ पइव्वयावायं ॥' ६१२
ते वि चिरवेरिया इव तामाहंतुं तहा समारद्धा ।
जह सुकुमालँसरीरे तीसे ताडिंति मम्माइं[8] ॥ ६१३
जह जह सरइ सरीरा रुहिरं रत्तीभवंति कंबाओ ।
तह तह सा हरिसिज्जइ पावा खट्टिक्कघरणि व्व ॥ ६१४
भणइ य – 'अज्ज वि पहणह जेणं सा मुयइ कुलवहूँवायं ।
ते वि जह नरयपाला तह तह ताडिंति निच्चिंसा ॥ ६१५
न मुयंइं सेक्कारं पि हु ताडिज्जंती वि नम्मया तेहिं ।
चिंतइ 'मए वि एवं केइ जिया ताडिया पुव्विं ॥ ६१६
सव्वो पुव्वकयाणं कम्माणं पावए फलविवागं ।
अवराहेसु गुणेसु य निमित्तमत्तं परो होइ ॥ ६१७

---

१ निट्ठरेहिं. २ °कुट्टं. ३ °भिट्टं. ४ हायासे. ५ कासुओ. ६ °दोसे. ७ सुकमाल°. ८ मंसाइं. ९ °बहू°. १० सुयइ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होउ सरीरे पीडा नाहं पीलेमि अप्पणो सीलं ।
अकलंकियसीलाए मरणं पि [न] बाहए मज्झ ॥ ६१८

बाहइ[1] पुण जं एसा अयाणमाणी मणोगयं मज्झ ।
संतावइ अप्पाणं इमे वि आणाकरे पुरिसे[2] ॥' ६१९

वारं वारं पुच्छइ हरिणी – 'किं रमसि अम्ह मग्गम्मि ? ।'
'न हि न हि न हि' त्ति जंपइ सा वि दढं हम्ममाणा वि ॥ ६२०

पभणइ हरिणी – 'पहणह मारह चूरेह निग्घिणा होउं ।
मुच्चइ जेण हयासा छिज्जंती अप्पणो गाहं ।' ६२१

इय[3] चोइएहिँ तेहिँ वि तह तह [सा] निद्दयं हया बाला ।
जह संपत्ता मुच्छं खणेण सुनिरुद्धनीसासा ॥ ६२२

'मा मरिहि' त्ति पुणो वि हु सित्ता सलिलेण दाविओ पवणो[4] ।
कहकह वि लद्धसन्ना पुट्ठा तं चेव सा भणइ ॥ ६२३

'वीसमउ' त्ति विमुक्का मज्झण्हे तह पुणो दढं पहया ।
अवरण्हे वि तहेव य पहया जा पाविया मुच्छं ॥ ६२४

इय कित्तियं व भन्नइ तीए पावाइ निग्घिणमणाए ।
बहुहा कयत्थिया सा संपुन्ना तिन्नि जा मासा ॥ ६२५

[करिणीकयं नम्मयासुंदरीए दुक्खमोयणं]

अह अत्थि तत्थ वेसा करिणी नामेण भद्दियाँ[5] किंचि ।
दट्ठुं कयत्थणं तं जाया करुणावरा धणियं ॥ ६२६

ता एगंते तीए संलत्ता नम्मया – 'तुमं भद्दे ! ।
किं सहसि जायणाओ[6] एयाओ घोररूवाओ ॥ ६२७

कीरउ हरिणीवयणं कुट्टिज्जसि दुक्करं तुमं किमि[प. २० B]ह ? ।
कीरउ सुहिओ लोओ जेण इमा हरिणिया वड्ड(?) ॥ ६२८

तंबोलकुसुमपमुहो भोगो सव्वो वि सुंदरो अम्ह ।
ता कीस तुमं मुद्धे[7] ! एवं वंचेसि अप्पाणं ? ॥' ६२९

वज्जरइ नम्मया तो – 'पियसहि ! नेहेण देसि मह सिक्खं ।
ता साहेमि फुडं तुह पच्छन्नं नत्थि सहियाणं ॥ ६३०

जावज्जीवं गहिओ नियमो मे सुयणु ! पुरिससंगस्स ।
नियवायापडिवन्नं जीवंतो को जए चयइ ? ॥ ६३१

---

१ बाहइ. २ पुरिसो. ३ इह. ४ पधणो. ५ भद्दिया. ६ जायणाउ. ७ मुद्धे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कस्स व न होइ मरणं जियलोओ कस्स सासओ होइ ? ।
अंगीकयमरणाए पियसहि ! जं होइ तं होउ ॥' ६३२
पुणरवि पुच्छइ करिणी – 'सुंदरि ! किं होइ तुज्झ सो वणिओ ? ।'
इयरी पभणइ – 'सुहए ! पित्तियओ मज्झ सो होइ ॥'- ६३३
'जइ एवं सुविसत्था चिट्ठसु मोएमि अज्ज दुक्खाणं ।'
इय जंपिऊण पत्ता करिणी हरिणीसमीवम्मि ॥ ६३४
पभणइ – 'सामिणि ! एसा मारिज्जइ कीस बंदिणी दीणा ? ।
किं वसइ तुज्झ हियए एसा वणियस्स तस्स पिया ? ॥' ६३५
सा भणइ – 'सच्चमेयं एयाए मोहिएण वणिएण ।
नाहं खणं पि भुत्ता ता एसा वेरिणी मज्झ ॥' ६३६
करिणी पभणइ – 'सामिणि ! मा कुणसु मणम्मि एरिसं संकं ।
जेण सहोयरधूया एसा भत्तिज्जिया तस्स ॥ ६३७
कयपुरिससंगनियमा बंभवया निच्छिएण[1] हियएण ।
अब्भुवगच्छइ मरणं न य करणं पुरिसभोगस्स ॥ ६३८
तिहि मासेहिँ न भिन्नं चित्तं एयस्स अन्नहा काउं ।
एत्तो[2] ताडिज्जंती मरइ चिय सव्वहा एसा ॥ ६३९
ता मुय ईसादोसं उवरिं एईएँ कुणसु कारुन्नं ।
कुणमाणी घरकम्मं धारउ पाणे तुह पसाया ॥ ६४०
अम्हाहि एत्तियाहिं भंडागारं न पूरियं तुज्झ ।
किं पूरिस्सइ एसा अंगीकयतणुपरिच्चाया ? ॥ ६४१
सुव्वइ इत्थीवज्झा बहुदोसा सव्वधम्मसत्थेसु ।
ता मा कुणसु कलंकं मह विन्नत्तिं कुणसु एयं ॥' ६४२
तीसे सोऊण गिरं[3] मणयं उवसंत[4]मच्छरा हरिणी ।
वाहरइ[5] तक्खणं चिय नम्मयमेवं च भाणीया ॥ ६४३
'जइ ता घयपुन्नेहिं गल्ला[6] फुट्टंति तुज्झ निब्भग्गे ? ।
ता चेट्ठ मज्झ गेहे रसवइकिच्चाइँ कुव्वंती ॥' ६४४
हियए अणुग्गहं सा मन्नंती भणइ 'होउ एवं' ति ।
तो तीएँ अणुन्नाया पारद्धा रंधिउं भत्तं ॥ ६४५
सा आहारं साहइ जह सव्वो परियणो भणइ तुट्ठो ।
'ताइं चिय दव्वाइं नज्जइ अमिएण सित्ताइं ॥ ६४६

१ नच्छिएण. २ पत्तो. ३ गिरिं. ४ उवएसत°. ५ बाहरइ. ६ गल्लो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

को वि अउव्वो साओ संजाओ अज्ज सव्ववत्थूणं ।
जह अम्हाणं जीहा तित्तिं न हु पावइ कहंचिं[1] ॥' ६४७
नाणावंजणपक्कन्नरंजिया हरिणिया[2] विचिंतेइ ।
'पढमं चिय किं न मए ठविया एसा इह निओए ॥' ६४८
संरोहिया य तत्तो कंचाघाया घयाइदव्वेहिं ।
भणिया – 'अज्जप्पभिई अभयं ते चिट्ठसु जहिच्छं ॥' ६४९
चिंतेइ न[प. २१ A]म्मया वि हु 'जायं असुहस्स कालहरणं मे ।
जाया जीवियआसा करेमि ता निव्वुया धम्मं ॥' ६५०
तत्तो य उभयसंझं हियए ठविऊण जिणवरं वीरं ।
वंदइ जायाणुन्ना करेइ उचियं च सज्झायं ॥ ६५१
भावेइ भावणाओ वेरग्गकराइँ गुणइ कुलयाइं ।
सव्वजणो अणुकूलो[3] वाघायं को वि नो कुणइ ॥ ६५२
पहिरेइ डंडियाइं थालीमसिमंडियाइँ[4] मलिणाइं ।
परिकम्मेइं[5] न अंगं लिंपइ य मसीएँ सविसेसं ॥ ६५३
भुंजइ थोवं थोवं तहा वि चित्तस्स निव्वुइगुणेण ।
गेन्हइ उवचयमंगं उववासं कुणइ तो बहुसो ॥ ६५४
विसहइ सीयं तावं 'मा कंती [होउ] मह सरीरस्स ।'
तह वि हु तणुलायन्नं न होइ से अन्नहा कह वि ॥ ६५५
जइ वि सरीरं सुत्थं तावेइ तहा वि माणसं दुक्खं ।
रोयइ कलुणं कलुणं सुमरंती कुलहरं बहुसो ॥ ६५६

[हरिणीमरणं, नम्मयासुंदरीए वेसाण सामिणिकरणं च]

अह अन्नया कयाई हरिणी उग्गाइ सूलवियणाए ।
अभिभूया विलवंती पत्ता सहस त्ति पंचत्तं ॥ ६५७
तो भणइ परियणो सो – 'महासई सेहिया हयासाए ।
तेण अकाले वि मया तारुन्नभरम्मि वट्टंती ॥' ६५८
रुन्ना केणइ न खला न विहियमन्नं[6] पि पेयकरणिज्जं ।
दासीसुएहिँ केहि वि पक्खित्ता सा मसाणम्मि ॥ ६५९
जाणावियं च रन्नो हरिणी हरिया कयंतचोरेहिं ।
तेणावि समाइट्ठं पंचउलं जाणगं निययं ॥ ६६०

---

१ कहिंचि. २ हरिणया. ३ अणुकूले. ४ थालीमसिमुंडियाइं. ५ परिकम्मइ.
६ विहिय अन्नं.

नम० ८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भणियं – 'जा तुम्हाणं पडिहासइ रूलक्खणेहिँ जुया ।
तीसे करेह टिक्कं[1] हरिणीठाणम्मि वेसाए ॥' ६६१
कयसिंगारो मिलिओ वेसावग्गो तहिं निरवसेसो ।
अहमहमियाएँ पंचउलगाण देहं पयासिंतो ॥ ६६२
तेसि निरूविंताणं[2] संपत्ता दिट्ठिगोयरं कह वि ।
सहस त्ति नम्मयासुंदरि उ मलमलिणतणु[3]वसणा ॥ ६६३
रूवसरूवं तीसे दट्ठूणं विम्हिएहि तो वुत्तं ।
'धूली(लिं?)तरियं रयणं भो ! एयं किं न पेच्छेहं[4] ॥ ६६४
लक्खणरूवसणाहो[5] अन्ना न हि अत्थि महिलिया एत्थ ।
कीस निरूवह अग्गिं दीवेण करम्मि गहिएण ? ॥' ६६५
भणियाओ चेडीओ – 'उव्वट्टियमज्जियं इमं कुणह ।
परिहावेह य तुरियं वत्थाभरणाणि हरिणीए ॥' ६६६
विहियं च चेडियाहिं अणिच्छमाणीए नम्मयाए तं ।
'हद्धी किमेयमवरं उवट्ठियमिमं' ति[6] चिंतेइ ॥ ६६७
ठविऊण हरिणियाविट्ठरम्मि पंचउलिएहिँ तो तीए ।
मंगलतूररवड्डं[7] कयं सिरे राणियाटिंकिं ॥ ६६८

भणियं च –

'जं किंचि हरिणितणयं भवणं दव्वं तहेव परिवारो ।
आहव्वं चिय सव्वं तं दिन्नं तुह नरिंदेण ॥' ६६९
इय जंपिऊण ताहे पत्ता पंचउलिया नियं ठाणं ।
इयरी वि देवया इव दिप्पंती चिंतए एवं ॥ ६७०
'एयाहि सहायाहिं [प. २१ B] होही सव्वं पि सुंदरं मज्झ ।
तम्हा करेमि इण्हिं सव्वाओ सुप्पसन्नाओ[8] ॥' ६७१
आय(वाह?)रिऊणं[9] ताहे सव्वाओ गोरवेण भणियाओ ।
'जं नियविढत्तभागं दिंतीओ आसि हरिणीए ॥ ६७२
सो सव्वो वि इयाणिं मए पसाएण तुम्ह परिमुक्को ।
जं पुण रन्नो देयं तं दिज्जह हरिणिकोसाओ ॥' ६७३
परितुट्ठाओ ताओ सव्वाओ नियसिरेण पयकमलं ।
फुसिऊण विंति[10] – 'सामिणि ! कम्मयरीओ वयं तुज्झ ॥' ६७४

---

१ टिक्कं. २ निरूचिंताणं. ३ °णमणु°. ४ पेच्छेहा. ५ °सणहो. ६ °ट्ठियं मि त्ति. ७ °रवड्ढं. ८ सुप्पसुन्नाओ. ९ °रिऊण. १० विति.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भणिया य विसेसेणं करिणी—'सहि ! वल्लहा अहं तुज्झ ।
जाणासि य मह चित्तं ता चेट्ठसु मज्झ ठाणम्मि ॥ ६७५
सव्वं हरिणीकिच्चं करेज्ज सेवागयाण पुरिसाण ।
अहयं तु तुह पसाया छन्ना[1] चिट्ठामि गिहमज्झे ॥' ६७६
'एवं' ति तीय भणिए संतुट्ठा नम्मया हियमज्झे ।
नियधम्मकम्मनिरया सुहज्झाणं[2]गया गमइ कालं ॥ ६७७

[असंतुट्ठकामुकस्स राइणो कन्ने पजंपणं]

अन्नदिवसम्मि एगो कयसिंगारो नवम्मि तारुन्ने ।
संपत्तो तीय गिहं अइधणड्ढं कामुओ[3] पुरिसो ॥ ६७८
पुच्छइ—'सा कत्थ गया तुम्हाणं राणिया अचिरठविया ? ।'
करिणी भणइ—'अहं सा पच्चभियाणेसि नो मुद्ध ! ॥ ६७९
सो पभणइ—'नवदिणयरसमाणतेयं मणोहरं अंगं ।
तीए कमलच्छीए दिट्ठं चेट्ठइ मणे मज्झ ॥ ६८०
लक्खंसेण वि तुल्ला न तुमं तीए कहेहि ता सव्वं ।
अच्छइ सा कम्मि गिहे संपइ दंसेहि वा झ त्ति ॥ ६८१
तीए कज्जेण मए दुकरकम्मेहिँ अज्जिओ अत्थो ।
ता मह दंसेहि तयं पुज्जंति मणोरहा जेण ॥' ६८२
करिणी पुणो वि जंपइ—'तुमए पच्छादिया तया दिट्ठा ।
संपइ सहावरूवा गामिल्लय ! कीस मुल्लो सि ? ॥' ६८३
सो भणइ—'नत्थि जईं[4] सा सट्ठाणं जामि तो अहं इन्हि ।'
करिणी भणइ—'न अम्हे वारेमो कुणसु जं रुयइ ॥' ६८४
गच्छंतेण य मग्गे कम्मयरो को वि पुच्छिओ छन्नं ।
'जणयसवहेण सविओ कहेहि सा राणिया कत्थ ? ॥' ६८५
कहियं च तेण छन्नं—'कहिंचि अच्छइ अहं न याणामि ।
सा कुलनारी नूणं परिवालइ अप्पणो सीलं ॥' ६८६

तओ सो आसाभंगसमुप्पाइयमहाकोवानलडज्झमाणमाणसो तीए सीलमंडणखंडणोवायमलहंतो, रायाणमुवसप्पिऊणं[5] जंपिउं पवत्तो—'देव ! निवेएमि किं पि पियकारयं देवस्स अच्चब्भुयं ।' राइणा भणियं—'किं तयं ?' ति । तओ सो पावकम्मो नम्मयाकम्मचोइओ वज्जरिउमाढत्तो—'अत्थि इह नयरे एगा नारी ।

१ च्छिन्ना. २ °जाण°. ३ कासुओ. ४ नइ. ५ मुवसमप्पिऊण.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सा[1] तिलोत्तमाईण[2]मच्छराईणमन्नयरी, सुरवइसावेण निवडिया न कस्स वि अप्पाणं दंसेइ । मन्ने पयावइणा तुह निमित्तमेव रक्खिज्जइ । ता किं देव ! रूवेण जोवणेण रज्जेण जीविएण वा जइ सा लच्छि व सयलसुहखाणी मयरद्धयमहानरिंदराय[प. २२ A]हाणी अंतेउरं[3] नालंकरेइ ? । राइणा[4] भणियं– 'का सा ?' इयरेण भणियं – 'जा सा हरिणीठाणसन्निविट्ठा ।'

सुओ एस वइयरो नम्मयासुंदरीए, चिंतियं च 'सच्चं[5]' केणावि पढियं –

आसासिज्जइ चक्को जलगयपडिबिंबदंसणसुहेण ।
तं पि हरंति तरंगा पिच्छह निउणत्तणं विहिणो[6] ॥ ६८७

वच्चामि जा न पारं दुक्खसमुद्दस्स कह वि एगस्स ।
तावँऽन्नयरमपुव्वं उवट्ठियं[7] दारुणं वसणं ॥ ६८८

खुद्दो रुद्दो चंडो निद्धम्मो नारओ महापावो ।
एसो वब्बरराया गहिओ को छुट्टइ इमेण ? ॥' ६८९

ता इन्हिं किं करेमि ? कत्थ गच्छामि ? कस्स साहेमि ? कं सरणं पवज्जामि ? सव्वहा नत्थि मे जीवमाणीए सीलरक्खा ।

हा हा कयंत ! निग्घिण ! जई[8] ता हं दुक्खभायणं रइया ।
ता कीस इमं रूवं निम्मवियं वेरियं[9] मज्झ ? ॥ ६९०

सुहिए कीरइ रूवं दुहियमरूवं ति एत्थ जुत्तमिणं ।
लोहीए पक्कन्नं रज्झइ नहु (तह) खप्परे छगणं ॥ ६९१

पुन्नस्स य पावस्स [य] वासो[10] एगत्थ एस कीस कओ ? ।
सव्वगुणसंपउत्ते भत्ते विसखेवणमजुत्तं ॥' ६९२

एवमणेगहा विलविऊण परिभाविउं पवत्ता 'मरणमेवोसहमिमस्स[11] दुक्खस्स, नऽन्नहा सीलरक्खा होइ । तं पुण विहाणसेण वा विसेण वा झ त्ति संभवइ । अन्नं च सुयपुव्वं मे साहुणीणं समीवे अक्खाणयं –

[धणेसरकहाणयं]

वसंतपुरे नयरे धणवइसिट्ठिसुओ धणेसरो अहेसि । सो जणणिजणए कालगए तहाविहकम्मदोसेण गहिओ दारिद्दविहिणा चिंतिउं पवत्तो –

'चिरकालियवेरग्गो कयाइ उच्छामिया पणस्संति (?) ।
इय नासइ दालिद्दं कयाइ देसंतरगयस्स ॥ ६९३

१ सां. २ °माईणिम°. ३ °अंतेउर. ४ रायणा. ५ सव्वं. ६ विहिणा. ७ ताव. ८ जय. ९ वेरियं. १० वामो. ११ °म्मिमस्स.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi-

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्नं च –

उच्चं नीयं कम्मं कीरइ देसंतरे धणनिमित्तं ।
सहवड्ढियाण मज्झे लज्जिज्जइ[1] नीयकम्मेण ॥' ६९४

एवमालोइऊण संठविऊण कुडंबं[2] दूरदेसे पत्तो एगं गामं । 'न पयाणएहिं दालिद्दं छिज्जइ' त्ति ठिओ तत्थ । भणिओ गामीणेहिं – 'गोरुवाई चारेहि' त्ति । लेभिहिसि मासंते पइगोरूवयं रूवयं' ति । सो वि [व]वसायंतराभावाओ चारिउं पवत्तो । तस्स य पंच पंच रूव[य]सयाइं पइमासं मिलंति । पंचहिं वासेहिं जाओ महाधणो । तओ मुत्तूणं[3] गोवालत्तं लग्गो वाणेज्जे । दुवालसवासेहिं जाओ अणेगधणकोडिसामी, चिंतिउं च पवत्तो –

'किं तीए लच्छीए नरस्स जा होइ अन्नदेसम्मि ।
न कुणइ सुयणाण सुहं खलाण दुक्खं च नो कुणइ ॥' ६९५

तओ सो गमणमणो चिंतेइ 'अंतरा महंतमरन्नमत्थि । तत्थाणेगे भिल्लपुलिंदाइणो चोरा परिवसंति, ते महंतं[4] पि सत्थमभिद्दवंति । ता न एसा संपया निव्वाहिउं तीरइ' त्ति काउं गहि[प.२२B]याइं [त]ओ महग्घमोल्लाइं पंच महारयणाइं । ताइं जुन्नचेलंचले बंधिऊण कमेण पत्तोऽरन्नपच्चासन्नं । सुयं च 'इत्थारन्ने णेगाओ[5] चोरपल्लीओ । कप्पडिओ वि वच्चंतो उग्गावियनग्गोविओ कीरइ । रूयगो वि गंठिवद्धो[6] न छुट्टइ । तओ धणेसरो रयणाणि एगत्थ ठविऊण तेहिं समाइं पंच पत्थरखंडाइं[7] कच्छुट्टियाए गोविऊण, 'वंचेयव्वा मए तक्कर' त्ति निच्छियमणो,[8] – 'एस भो! रयणवाणिओ गच्छइ' त्ति उच्चसद्दं घोसंतो पविट्ठो महाडविं[9] । घोसणाणंतरमेव गहिओ तक्करेहिं, पुच्छिओ य – 'कत्थ पत्थिओ सि?' भणइ – 'रयणाणि विक्केउं ।' 'कत्थ रयणाणि ते? दंसेहि' त्ति वुत्ते धणेसरेण कच्छोटियाउ कड्ढिऊण दंसिओ गंठी, भणियं च – 'महग्घाणि एयाणि न तुब्भे गिण्हिउं तरह ।' 'किमेएसिं मुल्लं' ति पुच्छिएण सिट्ठं – 'एगेगा धणकोडी ।' तओ पच्चभिन्नायं[10] पत्थरे चोरेहिं 'नूणं गहंगहिओ[11] एसो' त्ति कलिऊण भणिओ तेहिं – 'तुममेव एएसिं जोग्गो सि । गच्छ मणिच्छियं' ति । इयरेण भणियं – 'जइ केइ गाहगा अन्ने वि जाणह ता सिग्घं पेसिज्जह ।' तओ हसिऊण पडिनियत्ता चोरा । धणेसरो वि तं चेव घोसंतो चलिओ । अग्गओ पुणो वि भिल्लेहिं बुल्लाविओ । ते वि[12] तहेव 'गहगहिउ' त्ति भणिऊण गया । एवं पए पए पुलिंदाईणं दंसंतो पत्तो महाकंतारपारं । बीयदिवसे तहेव घोसंतो पडिनियत्तो[13] । तहेव उग्गाइओ गहग्गहिओ त्ति मुक्को

१ लज्जिजइ. २ कुणंब्बं. ३ मूत्तूण. ४ महतं. ५ णगाओ. ६ °बद्धे. ७ °खंडायं. ८ नेच्छिय°. ९ महाडवि. १० °भिन्नोय. ११ गाहं°. १२ व. १३ °मियत्तो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

य। तप्पभिइं[1] दूरट्ठिया चेव चोरा निहालयंति जाव सत्तमदिणे रयणाणि घेत्तूण गओ। सुहेण पत्तो सट्ठाणं, भोयाणं च भागी संवुत्तो[2] त्ति।

तो जहा तेण धणेसरेण रयणाणि रक्खियाणि तहा अहं गहेल्लवि[3]द्दे(चेड्डे?)ण सीलरयणं रक्खेमि त्ति। मा [कयाइ] जीवंती कहिं पि कुलहरं पि पावेज्जा। किं तु जइ कह वि एसो राया इह एइ ता मम सरीरं पासइ तक्खणमेव भंजइ मे सीलं, ता न तीरइ गहिल्लत्तणं काउं, घरमज्झगया विहाणसेण मरिस्सं। अह अन्नो कोइ एही ता लद्धावसरा[4] अवहत्थियलज्ज-विणया अंगीकयसरीरसंतावा गहेल्लचेड्डयं[5]मेव पवज्जिस्सं। माया वि कारणे कीरमाणी न दोसमावहइ' त्ति निच्छियमणाए।

[नम्मयासुंदरीए राइणो निमंतणं गहेल्लचेड्डयकरणं य]

अन्नया रूवायन्नणावज्जियमाणसेण राइणा पेसिओ समागओ नम्मयागिहं दंडवासिओ। परियाणियकज्जाए कया तस्स पडिवत्ती पुच्छिओ य–'किमा-गमणपओयणं?' तेण भणियं–'राइणा तुह दंसणुक्कंठिएणाहमायरेण समाइट्ठो "हरिणीठाणट्ठवियं राणियं सिग्घमाणेहि" ता तुरियं कीरउ गमणेण पसाओ।' नम्मयाए भणियं–

'जं इच्छंती हियए तुमए तं चेव मज्झ आइट्ठं।
इक्कं उक्कंठीया वीयं पुण बरहिणा लवियं॥ ६९६
अत्थि चिय पुन्नाइं अम्हाणं नत्थि एत्थ संदेहो [प. २३ A]
जं संभरिया अज्जं महिवइणा इंदसेणेणं[6]॥' ६९७

भणिया करिणी–'भद्दे[7]! सुयं तए सुभासियं–
जइ किज्जइ विट्टालडउ लंघिज्जइ अप्पाणु।
तो वरि गहिलिय! तेण सहु जो दंगडइ पहाणु[8]॥' ६९८

करिणीए भणियं–'सुंदरमेयं, पुज्जंतु मणोरहा।' नम्मयाए भणियं– 'सलक्खणा ते जीहा। पुणो एरिसमासीवायं मम दिज्जाहि' त्ति भणंतीए कारिओ दंडवासियस्स मज्जणभोयणाइओ उवयारो। अप्पणा वि कयमज्जणाइ-सिंगारा परिहियविसेसुज्जलवत्थाभरणा दंडवासिओवणीयसिवियारूढा चलिया नयराभिमुहं। अंतराले दिट्ठं घडिजंतं[9] वहमाणं। तओ भणियं–'तन्हाइया अहं, उत्तारेह मं जेणेत्थ सहत्थेण पाणियं पियामि।' तओ 'जमाणवे-सि' त्ति भणंतेण उत्तारिया दंडवासिएण, पत्ता विमलजलभरियं सारणिं[10]। तत्थ पाऊण पाणियं कुहियचेक्कणजंबाल[11]भरियखड्डाए लद्धावसरा फेल्हुसण[12]मिसेण

1 तप्पभिउं. 2 संवोत्तो. 3 गहेल्लं°. 4 °वंसरा. 5 °वेड्डय°. 6 °सेणेगो.
7 भद्दा. 8 पाहाणु. 9 °जंतं. 10 सारणीं. 11 जंवाल°. 12 पल्हुसण°.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

झड त्ति निवडिया खड्डाए । तओ कयअट्टहासाए–'अहो! राइणा ममेयमाभरणं[1] पेसियं' ति भणंतीए सव्वमालिंपियं सरीरं । एत्थंतरे 'हा सामिणि! किमेयं?' ति भणमाणो समुहं[2]मागच्छंतो–'अरे रे! रायगिहिणिं[3] अप्पणो भारियं काउमिच्छसि' त्ति जंपमाणीए पहओ कद्दमेण दंडवासिओ । 'अहो! गहो' त्ति कओ जणेण कोलाहलो । विगरालीकयलोयणो[4] निल्लालियजीहा सिवारवं[5] कुणंती पहाविया जणसमूहसमुहं–'अहो! रायभारियं गहिहिं[6]मुल्लवह त्ति संचल्लह[7] रायउलं[8] जेण दंसेमि दुब्भासियं[9]फलं ।' एवमालजालाई पलवंतीए दंडवासिओ रायसगासं साहिउं पयत्तो–'देव! सच्चमेयं–

अन्नह परिचिंतिज्जइ सहसा[10] कंडुज्जुएण हियएण ।
परिणमइ अन्नह च्चिय कज्जारंभो विहिवसेण ॥ ६९९

जओ सा वराई सयमेव देवसंगमूसुया मम विन्नत्तियं सोऊण बहलरोमंचकंचुयं[11] चच्चिक्कियं तणुं तुरियं[12] कयसिंगारं मह वयणेण समारूढा सिवियं ति । तयणंतरं "पच्चक्खा लच्छी न हि न हि रंभा तिलोत्तिमा मयणघरणि[13]" त्ति दिसि दिसि समुट्ठिया जणसमुल्लावा । मए पुण चिंतियं एयासिं संतियं रूवलायन्नं घेत्तूण देवस्स कए विहिणा निम्मविय त्ति । तओ देव! न याणामि किं तीए चक्खुदोसो? किं जलं पियंतीए उत्तेडियं किमपि[14]? खड्डातीरेण गच्छंती धस त्ति निवडिया विगंधे जंबाल[15]मज्झे । तओ गहगहिया इव जणेण कीलाविज्जंती चेट्ठइ ।' तओ राइणा संभंतेण भणिओ–'गच्छ गच्छ सिग्घं ति, तिहुयणभूयवाइयमाणेहि[16] । अहं पि एस तत्थ पत्तो चेव ।' तओ दंडवासिएण समाहूओ[17] चेवागओ तिहुयणो । भणिओ रन्ना–'निरूवेहि को एस गहो? केणोवाएण नियत्तइ?' तिहुयणेण उग्घाडिया फुडपुत्थिया, निरूवियाइं गहलक्खणाइं । सुचिरं परिभाविऊण संलत्तं–'देव! एस उवाओ नाम गहो[18] । पुरिसित्थिया[णा]मिह माणुससंगमपाविऊण ताणमुप्पज्जइ । असज्झो मंततंताणं, [प. २३ B] एयस्स इच्छाभंगो न कायव्वो । जं मग्गइ[19] तं चेव दिज्जइ, न य चंकारिज्जइ त्ति तओ कालेण सयमेव उवसमइ त्ति ।' तओ नम्मयं[20]सुंदरिभागधेयचोइएण भूयवाइएण भणिएण रन्ना उग्घोसावियं सबाहिरब्भंतरे नयरे–'जो एयाए रायवल्लहाए गरुए वि अवराहे कए मंगुलं भणिस्सइ करिस्सइ वा, तमहं महादंडेण दंडिस्सामि' त्ति ।

१ °मालभणं. २ ससुह°. ३ °गिहिणी. ४ °लोयणो. ५ सिवारयंती. ६ महिल्ल°. ७ मंचल्लह. ८ °उल. ९ दुब्भासियं°. १० सहस. ११ °कंवुयं. १२ तुरिय. १३ °घरणे. १४ किमंपि. १५ जंवाल°. १६ °माणेहिं. १७ सामा°. १८ रगहो. १९ सग्गइ. २० णम्मय°.

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अह सा पच्चयहेउं जणस्स गहचेट्ठियं पयासेइ।
हिंडइ घरं घरेणं पप्फोडंती कुलालाइं ॥ ७००
कत्थइं[1] खप्परहत्था भिक्खं मग्गइ कहिंचि जइ लहइ।
छड्डाविज्जइ सहसा सह हिंडंतेहिँ डिंभेहिं ॥ ७०१
चेक्खल्लं दट्ठूणं लिंपइ अंगं पुणो पुणो धणियं।
सीसे[2] खिवइ कयारं छारेण य गुंडइ सरीरं ॥ ७०२
जरचीरचीरियाहिं वेढइ अंगाइँ दुगुणतिगुणाइं।
दट्ठूण य निम्मल्लं मुंडे मालीं(लं?) सिरे कुणइ ॥ ७०३
जं जं रच्छाचीरं तं तं सव्वं[3] पि निवसइ कडीए।
कत्थइ गया य नच्चइ कत्थइ फेक्कारवं कुणइ ॥ ७०४
गायइँ[4] हसइ य कत्थइ अन्नत्थ करेइ घोरधाहाओ।
नारीए पुरिसस्स व निवडइ चलणेसु पहसंती ॥ ७०५
दिवसम्मि भमइ नयरे सुन्नघरे जुन्नदेउले वा वि।
रत्तिं गंतुं छन्नं करेइ जिणवंदणाईयं ॥ ७०६
'रे जीव! मा किलम्मसु एयाए लज्जणेज्जकिरियाए।
जि च्चिय सहिंति दुक्खं ति च्चिय सुहभायणं होंति ॥ ७०७
सीलरयणं महग्घं किच्छेण वि जइ तरिज्ज रक्खेउं।
ता होज्ज मज्झ तुट्ठी तिहुयणरज्जोवलंभे व ॥ ७०८
जइ जत्थ व तत्थ व जह व तह व रे हियय! निव्वुइं[5] कुणसि।
ता दुक्कह तुह जम्मंतरे वि दुक्खं चिय न होइ ॥ ७०९
रे जीव! भवे आसिर जत्थ व तत्थ व सुही य गयनिंद!।
जेण व तेण व संतुट्ठ जीव! मुणिओ[6] सि तं अप्पा ॥ ७१०
जं सोढं जीव! तुमे दुक्खं सुन्नम्मि तम्मि दीवम्मि।
भावेसु इमं सव्वं कित्तियभागो इमो तस्स ॥ ७११
हरिणीगेहम्मि तुमे सोढाउँ[7] कयत्थणाउ भीमाउ।
ताओ संभरमाणो मा झूरसु जीव! एत्ताहे ॥' ७१२
एवं अणुसासंती[8] अप्पाणं जामिणिं[9] गमेऊण।
पुणरवि पभायसमए जिणमुणिगुणसंथवं कुणइ ॥ ७१३

१ कत्थइहत्थ ख°. २ मीसे. ३ मव्वं. ४ गायइं. ५ निव्वुयं. ६ सुणिओ.
७ सोढाओ. ८ °सामंती. ९ जामिणी.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुणरवि तहेव नयरे वियरइ कयगीयनच्चणपयासा[1] ।
अन्नदिणे घरदारे गायइ एयारिसं गीयं ॥ ७१४

'पभणइ लोगो गहिल्लिया सुस्सुइया ण अहं गहिल्लिया ।
जोएमि निरवज्जभिक्खयं जा नासइ सयलं पि दुक्खयं ॥' ७१५

[नम्मयासुंदरीए जिणदेवेण सह मिलणं]

एयं तीए गीयं निसुयं आसन्नमंदिरगएणं ।
सुस्सावएण केणइ अच्चंतं विम्हियमणेणं[2] ॥ ७१६
एयमउव्वं गीयं सम्मं हिययम्मि भावयंतेण ।
निरवज्जसद्दसुणणा 'नायं न णु नम्म[प.२४ A]या एसा ॥ ७१७
कारणवसेण केणइ एरिसनेवच्छधारिणी एसा ।
तो निच्छयँ[3]नाणत्थं पुच्छिज्जइ छन्नभासाए ॥' ७१८
इयँ[4] चिंतिऊण पुच्छइ – 're गह ! तं कस्स संतिओ तस्स(?) ।
पूएसि कं चँ[5] देवं अवयरिओ किमिह पत्तम्मि ? ॥' ७१९

तीए वुत्तं –

'सव्वजगजगडणपरो जेण हओ मोहदाणवो चंडो ।
तस्संतिओ गहो[6] हं लीलाए एत्थ निवसामि ॥ ७२०
तं चेव महादेवं सूरं धीरं जगुत्तमं वीरं ।
पूएमि भत्तिसारं किं न मुणसि सावओ तं सि ? ॥ ७२१
अवयरणकारणं पुण नाहं साहेमि तह वि नाओ सि ।
वच्चंति[7] अणिट्ठमणा वहवे[8] सागारिया लोया ॥' ७२२
भणियं च सावएण वि – 'जइ वि न साहेमि तह वि नाओ सि ।
हिंडसु जह मणइट्ठं किं अम्हं तुम्ह वुत्तीए ॥' ७२३
इय जंपंतो सहसा ओसरिओ सावओ तओ ठाणा ।
चिंतइ 'न हु सच्चगहो कारिमयं चेट्ठियं एयं ॥ ७२४
साहिउकामा वि इमा न कहइ सच्चं जणस्स संकाए ।
ता पइरिक्कं गंतुं पुच्छिस्सं एत्थ परमत्थं ॥' ७२५
तो अणुमग्गं तीए हिंडइ केणइ अणज्जमाणो सो ।
इयरी वि गहियभिक्खा विणिग्गया भोयणं काउं ॥ ७२६

---

१ °पयास. २ °मणेणा. ३ नेच्छय°. ४ एय. ५ किंचि. ६ गणो. ७ विच्चंति. ८ वहावे.

नम० ९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नयरस्स नाइदूरे[1] जिन्नुज्जाणे जणागमविहीणे ।
नाग[2]घरयम्मि पत्ता उवविट्ठा बोहए जीवं ॥ ७२७

'रे जीव ! मा धरिज्जसु निव्वेयं माणसे मणागं पि ।
दुहरूवं पि सुह च्चिय भावेज्जसु सम्ममेवं च ॥ ७२८

एयाइं[3] रच्छाचीवराइँ मन्निज्ज देवदूसाइं ।
रक्खेज्जइ जेहिँ दढं सव्वावायाण तुह देहो ॥ ७२९

जं पि य अंगे लग्गं कुहियं कद्दमविलेवणं एयं ।
सुट्ठु सुयंधं नाणसु सीलंगं कुणइ जं सुरहिं ॥ ७३०

एयं पि अंतपत्तं(पंतं) [अन्नं] भावेज्ज अमयरस[स]रिसं ।
एएण उवग्गहिओ जं देहगिहे तुमं वससि ॥ ७३१

भणउ जणो एस गहो तं चिय भावेसु एस मोक्खो त्ति ।
एयपसाएण तुमं जओ विमुक्को सि मिच्छाओ[4] ॥ ७३२

सोढव्वं दुहमेयं पाविज्जइ जा न निग्गमोवाओ ।
एवं वि सहंतीए मे होही सुंदरं सव्वं ॥ ७३३

भणियं च—

ता निंति किं पि कालं भमरा अवि कुडयवच्छ[5]कुसुमेसु ।
कुसुमंति जाव चूया मयरंदुद्दामनिस्संदा ॥' ७३४

इय भाविऊण सुइरं सम्मं वेरग्गमग्गगहिया य ।
भुवणगुरूण जिणाणं संथवणं काउमारद्धा ॥ ७३५

'निम्महियमोहमल्ला बंधवभूया जणाण सव्वेसिं ।
जम्मजरमरणरहिया जयंतु तित्थेसरा सव्वे ॥ ७३६

भत्तिजुयाण जिणाणं जेसिं पयपंकयं थुणंताणं ।
वच्चंति दुरंताइं दूरंदूरेण दुरियाइं ॥ ७३७

निद्दवियकम्मरिउणो[6] केवलवरनाणदंसणसमिद्धा ।
सासयसुहसंपत्ता जयंतु ते जिणवरा सव्वे ॥ ७३८

सव्वेसिं सिद्धाणं आयरियाणं च गुणस[प.२४ B]मिद्धाणं ।
तह य उवज्झायाणं नमो नमो होउ मे निच्चं ॥ ७३९

मोक्खपहसाहगाणं पाए पणमामि सव्वसाहूणं ।
सिवमग्गे सुहियस्स य नमो नमो समणसंघस्स ॥' ७४०

---

१ नाइद्दरे. २ नग°. ३ एयांइं. ४ गिच्छाओ. ५ °वत्थ°. ६ °रियणो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एवं सत्थीभूयहियया जाव कवलगहणं काउमारद्धा, एत्थंतरे सो वि सावओ उज्जाणे पविसंति[1][मा]लोइऊण कयदिसालोओ दारंतरेण समागओ नागघरासन्नं[2] । 'गीयत्थो' त्ति काऊण भणिया – 'इओ निसीही ।' नम्मयासुंदरी निसीहीसद्दसवणाओ सूरावलोयणरहंगी[3] व मरिउं च जीविया हरिसभरनिब्भरा संवुत्ता[4] । तओ – 'सागयं निसीहियाए, वीसमह ताव महासावग ! इह सिणिद्ध[5]-तरुच्छायाए जावाहमप्पाणं संठवेमि[6] ।' ताहे अणवसरो त्ति नाउं निसन्नो तहाविहसिणिद्धतरुण[7]वल्लीए । नम्मया वि तुरियं तुरियं कयकइवयकवलाहारा कालोचियविहियसरीरसंठवणा – 'एहि एहि' त्ति भणंती निग्गया संमुही । मन्नुभरनिरुद्धकंठा निवडिया य तस्स चलणेसु रोविउं[8] च पवत्ता । सावगेणावि महुरवयणेहिं आसासिऊण भणिया – 'महाणुभावे ! किं तं रोइसि ?' त्ति । नम्मयाए रुयमाणीए चेव सिट्ठं – 'बहुकालाओ धम्मबंधवो तुमं दिट्ठो, नं[9] य लोयावंरा(यविंदा ?)ओ वीह[माणीए ?] मए वयणमित्तेणावि तुह विणय-पडिवत्ती कया ।' सावगेण वुत्तं[10] – 'मुद्धे[11] ! मा एयनिमित्तं खेयमुव्वहसि । कयं चेव सव्वं तुमए एरिससाहम्मियपक्खवायमुव्वहंतीए[12], साहिओ तए नियभावो[13] गूढक्खराए वाणीए । मए वि लक्खिओ चेव कहमन्नहा इत्थागओ ? त्ति[14] । ता होसु सुविसत्था । सुणाहि मम वत्तं – अहं भरुयच्छनिवासी जिणदेवो नाम वीरजिणसासणाणुरत्तचित्तो[15] मित्तो वीरदासस्स । सो वि इत्थ आगंतुकामेणेमेहिं घयभरिय[16]सगडेहिं संपत्तो पोयठाणं । दिट्ठो[17] य मए तत्थ थिरधरियजाणवत्तो अंसुजलोल्लियकवोलो[18] वीरदासो । पुच्छिओ य मए – 'कओ भवं ? किं च सोयाउरो[19] लक्खियसि ? ।' निवेइयं च तेण – 'मए वब्बरं[20]कूलगएण हारिया नम्मयासुंदरी । गविट्ठा सा बाहिरब्भंतरे नयरे बहूणि दिणाणि । नं से पउत्तिमेत्तं पि उवलद्धं, न अम्हेसु चिट्ठंतेसु सा पायडा होइ त्ति कलिऊण समागया वयं । एयं मे उव्वेयकारणं, गेहं गंतूण पुणो वि भायसहिएण सिग्घं तत्थ गंतव्वं । तुमं पुण कत्थ पत्थिओ सि ?' मए भणियं – 'अहं पि तत्थ दीवे गमिस्सं ।' 'जइ एवं गच्छिहिसि[21] तुमं तत्थ [न]म्मयं तं अत्थेण सामत्थेण सव्वस्सेण वा मोयाविज्जासि ।' मए भणियं – 'जा तुह भायधूया सा किं मम धूया न होइ ? अच्छह तुब्भे वीसत्था जाव ममागमणं ।' अहं पुण 'तं दिट्ठ-ममोइयं मोत्तूण न पडिनियत्तामि' त्ति कयपइन्नो चलिओ [प. २५ A] म्हि ।

---

१ पविसंती°. २ °रासन्न. ३ °रहगी. ४ संदुत्ता. ५ सिणिद्ध°. ६ मंठवेमि. ७ °तरुग°. ८ रोविओ. ९ ने. १० वोत्तं. ११ सुद्धे. १२ °मोव्वहं°. १३ °भावे. १४ त्वि. १५ °च्चित्ते. १६ °भरीय°. १७ हिट्ठो. १८ °कंचोलो. १९ सोयाओरो. २० बव्वर°. २१ यच्छिहिसि.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंतरा य मम पोओ पडिकूलपवणेण दीवंतरं[1] नीओ । चिरकालेणाणुकूलपवणो पाविओ । तेण चिरेणेह पत्तो म्हि । अन्नेसिया मए तुमं इत्थ, न कत्थइ उवलद्धा सि । अज्ज पुणासंभावणिज्जरूवा वि 'अणवज्जंभिक्खं[2] माएमि' त्ति सोऊण, कुओ इत्थ अणवज्जसद्दो त्ति संकिएण पुच्छिया सि । तुमं पि साहेहि एत्तियदियहेहिं किं सुहमणुभूयं, किं वा गहिल्लचेड्डुएणं[3] हिंडसि ?' । एवं पुट्ठाए सिट्ठं नम्म[या]ए हरिणीओ आरब्भ वट्टमाणदिवसावसाणं नियचरियं । तं सोऊण समुट्ठियसिय(?)रोमेण भणियं जिणदेवेण—

'धन्ना सि तुमं वच्छे अइदुक्करगारिए महासत्ते ! ।
सोमालसरीराए जं विसहियमेरिसं दुक्खं ॥ ७४१
सव्वो जणप्पन्नाओ मरइ अखुट्टे न जीवए को वि ।
जं तह ताडिज्जंतं पाणेहि न वज्जियं अंगं ॥ ७४२
धीराण तुमं धीरा जीए तह दारुणं महावसणं[4] ।
सम्ममहियासियं सिय(?) न बालमरणे कया वंछा ॥ ७४३
तं धन्ना धन्नयरी धम्मीणं धम्मिणी तुमं चेव ।
जीए वसणसमुद्दे धम्मतरंडं न परिचत्तं ॥ ७४४
सीलवईणं मज्झे पढमा लेहा लिहिज्जए तुज्झ ।
जीए नि[य]बुद्धीए मेच्छाओ रक्खिओ अप्पा ॥ ७४५

[जिणदेवकयं नम्मयासुंदरीमोयणं]

संपइ सुणेहि सुंदरि ! जाया तुह मोयणम्मि[5] मह बुद्धी ।
वित्तव्वयभीरूणं न हु सिज्झइ एरिसं कज्जं ॥ ७४६
कल्लं च मए निसुयं एसा इट्ठा दढं[6] नरिंदस्स ।
नयरा दूरं जंती रक्खिज्जइ रायपुरिसेहिं ॥ ७४७
गरुयम्मि वि यऽवराहे एईए विप्पियं कुणइ जो उं[7] ।
देइ तणुं च पहारं सो पावइ दारुणं दंडं ॥ ७४८
ता हरिउं न हि तीरसि धणेण बहुणा वि मुयई[8] न हु मुच्छा ।
नवरं तु पक्खवाई दढमेसो पोयवणियाणं ॥ ७४९
तेसु सुहिएसु तूसइ दूमेज्जइ ताण दुक्खलेसेण ।
तेसुमवराहकारिसु गाढं कोयाउरो होइ ॥ ७५०
ता हं सुयणु ! पहाए रायघरासन्नचच्चरे भद्दे ! ।
ठाविस्समणेगाइं घयकुंभसयाइँ पंतीए ॥ ७५१

१ दीवंतर. २ अणविज्ज°. ३ महिल्लविड्डुएण. ४ °सचणं. ५ सोयणम्मि. ६ दड्ढं. ७ ओ. ८ सुयइ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घेत्तूण लउडयं तो ताइं फोडिज्ज निद्दया होउं ।
मा मं पोक्करमाणं गणेसु कलुणं पि कंदंतं ॥' ७५२
उल्लवइ नम्मया तो – 'नाहं एयारिसी महापावा ।
एत्तियमत्थविणासं काहं जा निययबप्पस्स ॥' ७५३

जिणदेवेण वुत्तं –

'एवं कयम्मि वच्छे ! कोवानलडज्झमाणसव्वंगो ।
मुंचीहि[1] धुवं मिच्छो ता होही सुंदरं सव्वं ॥ ७५४
वित्तं च तं पवित्तं जस्स वओ[2] कुणइ मोयणं तुज्झ ।
तुह लाभाउ न अन्नो गरुययरो मज्झ धणलाभो ॥ ७५५
ता कुणसु मज्झ वयणं मा चिन्तं[3] कुणसु अन्नहा पुत्ति ! ।'
एवं कयसंकेओ जिणदेवो उट्ठिओ तत्तो ॥ ७५६

कयं च दुइयदियहे जहाइट्ठं नम्मयाए । तओ दोहि वि करेहि सो[4] पोट्ट-पिट्टणं[5] कुणमाणो पोक्करिउमारद्धो घयसामी जाव हाहारवमुहलो[6] मिलिओ नयर[प. २५ B]लोगो । उग्घोसिओ य अन्नओ[7] सुंकसालिएहिं – 'अहो ! मग्गो मग्गो संजत्तियाणं । अहो ! मूढो राया जो एयं महारक्खसिं दीवाओ न निद्धाडेइ ।' एवंविहे जणुल्लावे निसामिंतो[8] राया चिंतेइ 'न एसग्गहो उवसमइ, किंतु अहिगयरा दोसवुड्ढी भविस्सइ । इओ दीवंतरेसु अप्पसिद्धी । नागमिस्संति पवहणाणि[9] ता जणभणियं निद्धाडणमेवोचियमेयाए ।' एत्थंतरे बहुजणपरिवेढिओ महया सद्देण पोक्कारंतो समागओ रायसमीवं जिणदेवो, भणिउं[10] च पवत्तो – 'देव ! पोयवणियाणमइवच्छलो[11] त्ति पसिद्धीओ[12] वयं कयं-तवयणं भीसणं महोयहिमोगाहिऊणेहागया । एत्थ पुण एस ववहारो, केरिसीए मुहच्छायाए[13] पडिगच्छामि ? णेगाइं घडसयाइं लाभकए आणियाणि मे एत्थ । पिच्छउ[14] देवो एसा पुररच्छाए नई वूढा ।

काउं रिणं पभूयं संगहियं घयमिणं मए भूरि ।
लाभेण होउ इन्हि मूलं दावेह नरनाह ! ॥ ७५७
ससिकासकु[सु]मधवलो वियरइ महिमंडले जसो तुम्हा ।
सो पहु ! अवस्स नासइ एयाए कहाइ भीमाए ॥ ७५८
आहव[इ ?] जस्स एसा दाविज्जउ तेण मज्झ घयमोल्लं ।
मह विन्नत्ती एसा मा कीरउ निप्फला[15] सामि ! ॥' ७५९

---

१ मुंचुहि. २ वउ. ३ चेत्तं. ४ सि. ५ °पेट्टणं. ६ °मुहलो. ७ अन्नाओ. ८ °मितो. ९ पवाहणाणि. १० भानणिउं. ११ °वणियाणंमयव°. १२ पसिद्धिओ. १३ सुह°. १४ पिच्छओ. १५ निफला.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पडिभणइ पत्थिवो तो-'जा पीडा सत्थवाह ! तुह अज्ज ।
तत्तो अब्भहियतमा वट्टइ मह माणसे भद्द ! ॥ ७६०
गहगहियाएँ इमाए कुविएहि वि किमिह तीरई काउं ।
एयाए अवराहे को दाविज्जउ धणं तुज्झ ॥ ७६१
आहवई पुण एसा मह चेव किमित्थ अन्नभणिएहिं ।
दिन्ना मए तुहेसा दाउं न तरामि घयमोल्लं ॥ ७६२
जह भंडं चयमाणो मुंचइ सुंकस्स वाणिओ नियमा ।
तह एसा तुह दिन्ना मा कुण अम्हाणमवराहं ॥' ७६३
आह पुणो जिणदेवो-'गहगहियाए पओयणं किं मे ।
किंतु म सक्का गणिउं वला वि दंता गयमुहम्मि ॥ ७६४
नायं च मए महिवइ ! एएण मिसेण निययदीवाओ ।
धाडेउमिमं इच्छसि छड्डणमोल्लं[1] तह वि देसु ॥' ७६५
हसिऊण भणइ राया-'जइ एवं सत्थवाह ! मह रज्जे[2] ।
उस्सुंकं तुह भंडं एसा वाया मए दिन्ना ॥' ७६६
'जइ एवं तो निययं कोवफलं पायडेमि[3] एयाए ।'
इय भणिउं जिणदेवो दीहररज्जुं करे घेत्तुं ॥ ७६७
बंधइ जणपच्चक्खं पहसंती सा वि तं इमं भणइ ।
'किं एस चूडओ मे परिहिज्जइ राइणा दिन्नो ? ॥' ७६८
तो जिणदेवो जंपइ-'अज्ज वि फोडिज्ज घयघडे बहुए ।
एरिसआभरणाइं तो परिहिस्सं तुह बहूणि ॥' ७६९
एवं दंसियकोवो घेत्तुं[5] वाहाएँ दिन्नउक्कोसो ।
जणपच्चयजणणत्थं गओ लहुं निययमावासं ॥ ७७०
थाणुम्मि बं[प. २६ A]धिऊणं-'भुंजसु दुन्नयफलाइँ' घोसंतो ।
नियकिच्चम्मि[6] पवत्तो जणो वि कुड्डत्थिओ सत्थो ॥ ७७१
परितुट्ठो जिणदेवो ताहे तं पडकुडीय छोढूण ।
पक्खालइ पयकमलं अब्भंगउवट्टणं[7] कुणइ ॥ ७७२
मज्जावेइ [य] विहिणा परिहावइ सुंदराइँ[8] वत्थाइं ।
अणुणेइ महुरवयणं कारेई भोयणं सुहयं ॥ ७७३
भणइ य एसो[9]-'जत्ता सहला मह अज्ज सुयणु ! संजाया ।
मन्नामि तुज्झ लाभे तिहुयणरज्जं मए पत्तं ॥' ७७४

---

१ °गोल्लं. २ रज्जो. ३ पायंडिमि. ४ रायणा. ५ घेत्तु वहाए. ६ °किच्चंमि. ७ °उवट्टणं. ८ सुंदराइं. ९ एसा.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चिंतेइ नम्मया वि हु 'जम्मंतरबंधवो इमो नूणं ।
तरया उद्धरिऊणं जेणाहं ठाविया सग्गे ।।' ७७५

एवं पमोयसागरपडियाण परोप्परं दुविन्हं पि ।
सुहसंलावपराणं वोलीणो वासरो झ[1] त्ति ।। ७७६

तत्तो जिणं[2]देवेणं खणेण पउणीकओ निययपोओ ।
रयणि[3]मुहि चिय तहियं आरूढो[4] नम्मयासहिओ ।। ७७७

'पच्छायावी कयाइ भुज्जो वि कहं पि मा हु तु(मु?)चेज्जा ।'
इय संकाए सहसा मुक्को पोओ महावेगो ।। ७७८

कम्मम्मि[5] समणु[6]कूले सव्वं जीवस्स होइ अणुकूलं ।
तत्तो य तक्खणेणं अणुकूलो मारुओ[7] लग्गो ।। ७७९

उवसंतसयलविग्घो जिणदेवो वासरेहिँ थेवेहिं ।
संपत्तो भरुयच्छे बंधवजणकयमहाणंदो ।। ७८०

[नम्मयासुंदरीए सयणाण सह मिलणं]

पट्ठाविओ य तुरियं लेहो[8] नम्मयपुरम्मि सयणाणं ।
लाभेण नम्मयासुंदरीवि(ए?) वद्धावणनिमित्तं ।। ७८१

परिओसनिब्भरा ओलंघि(?) उ(तु?)रंगेहि पवणजवणेहिं ।
सहदेव-वीरदासा सबंधवा तत्थ संपत्ता ।। ७८२

सम्माणिया य सव्वे जिणदेवेणावि हट्ठ[9]तुट्ठेण ।
मिलिया[10] य नम्मयाए तुट्ठा उक्कंठियमणाए ।। ७८३

काउं कंठग्गहणं परोप्परं रोवियं च तह करुणं[11] ।
उग्गिलियमणोदुक्खा जिणदेवेणावि ते भणिया ।। ७८४

'कज्जे समइक्कंते रुन्ने को इत्थ किर गुणो होइ ।
अज्जं खु नम्मयासंगमं[12]म्मि नणु होह साणंदा ।।' ७८५

कयवयणधोवणाइं सवेसि सुहासणेसु बइठाणं[13] ।
जिणदेवो वुत्तंतं[14] जहदिट्ठसुयं कहइ तेसिं ।। ७८६

जह हरिया दासीहिं सुचिरं सेहाविया य हरिणीए ।
जह सामित्तं पत्ता तासिं कवडग्गहो य कओ ।। ७८७

---

१ झ्झ. २ जिणं°. ३ रेयणिसुहि. ४ आरुहो. ५ कम्ममि. ६ समण°. ७ मारूओ.
८ लहो. ९ हृत्थ°. १० सिलिया. ११ करणं. १२ °संगमि. १३ बइट्ठाणं.
१४ वोत्तंतं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुक्खेण परिन्नाया दुक्खं मोयाविया य मेच्छाओ ।
जिणदेवेण सवित्थरमक्खायं जा गिहागमणं ॥ ७८८
तो नम्मयाइ दुक्खं सव्वेसु वि बंधवेसु संकंतं ।
ऊससियरोमकूवा सव्वे पलवंति तो एवं ॥ ७८९
'भो[1] सोमालसरीरे ! कह एयं विसहियं तुमे दुक्खं ।
कन्नविवरे पइट्ठं अम्हे सोढुं न हि तरामो ॥ ७९०
सुहलालिया वि सुहपालिया वि सयणा[प. २६ B]ण सुट्ठु इट्ठा वि ।
हा ! कह कम्मवसेणं वसणसमुद्दम्मि बुड्डा सि ॥ ७९१
किं नाम सा हयासा हरिणी तुह पुव्ववेरिणी आसि ।
इयनिंदियहियायाए जीए सेहाविया तं सि ॥ ७९२
एरिसनिग्घिणहियया दीसइ नारी न काइ जियलोए ।
सा उ अणज्जा पावा संजाया एरिसी कह णु ॥ ७९३
कह बालिस[2]भावाए सहिया तह तारिसी तए पीडा ।
कह नियजणरहियाए पाणा संधारिया तुमए ॥ ७९४
कह बालिस[2]भावाए तुमए संपाविया इमा बुद्धी ।
अगणियतणुदुक्खाए कवडगहो[3] जं कओ तुमए ॥ ७९५
धन्ना सि तुमं वच्छे ! अम्ह वि पुव्वाइँ[4] अत्थि पुन्नाइं[5] ।
जमखंडियवयनियमा मिलिया अम्हाण जीवंती ॥' ७९६
इय सोऊणं बहुहा बहुसो उववूहिऊण गुणनिवहं ।
तं ठविया रुयमाणी सा बाला अंबताएहिं ॥ ७९७
अह जिणदेवो भणिओ– 'सज्जण ! जिणदेव ! साहु साहु कयं ।
अवहत्थिऊण तत्तियवित्तं जं मोइया एसा ॥ ७९८
सुयणाण तुमं सुयणो उत्तमपुरिसाण उत्तमो तं सि ।
धम्मीण धम्मिओ तं साहम्मियवच्छलो तं सि ॥ ७९९
तुह सुंदर ! सव्वगुणा एगेण मुहेण वन्निमो कह णु ? ।
जलहिम्मि[6] व रयणाणं जेसि न पाविज्जई अंतो ॥ ८००
साहम्मियधुरधवलो तं खलु सव्वस्स पूयणिज्जो सि ।
इय गिण्हसु एयाओ बत्तीस हिरन्नकोडीओ ॥' ८०१
इय भणिरो सहदेवो पडिओ चलणेसु बंधुणा सद्धिं ।
जिणदेवो वि पयंपइ– 'मा बंधव ! एवमाइससुँ[7] ॥ ८०२

---

१ भो. २ वालिस°. ३ °राहो. ४ पुत्ताइं. ५ पुन्नाइं. ६ जलहम्मि. ७ °माइसुसु.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुह नंदिणि[1] त्ति भणिउं न मए मोयाविया इमा किंतु ।
साहम्मिणि त्ति काउं जिणसासणपक्खवाएण ॥ ८०३
साहम्मियवच्छल्लं महाफलं वन्नियं जिणमयम्मि ।
जेणं[2] पढिज्जइ धणवइ ! जिणागमे एरिसा गाहा ॥ ८०४
साहम्मियवच्छल्लम्मि उज्जुया उज्जया य सज्झाए ।
चरणकरणम्मि य तहा तित्थस्स पभावणाए य ॥ ८०५
जिणसासणस्स सारो जीवदया निग्गहो कसायाणं ।
साहम्मियवच्छलया तह भत्ती जिणवरिंदाणं ॥ ८०६
एगत्थ सव्वधम्मो साहम्मियवच्छलत्तमेगत्थ ।
बुद्धितुलाए[3] ठवियाइँ दो वि तुल्लाइँ भणियाइं ॥ ८०७
जो मंदमई पुरिसो न कुणइ साहम्मियाण वच्छल्लं ।
जिणसासणस्स तत्तं न मुणई[4] सो छेयमाणी वि ॥ ८०८
एवं च महापुन्नं समज्जियं मोयणेण एयाए ।
तुम्ह धणं गेण्हंतो हारेमि[5] न संपयं इत्थ ॥ ८०९
दीणारेणेक्केणं दो पडियारा न चेव लब्भंति ।
एवं न होंति दोन्नि वि धणवइ ! अत्थो य धम्मो य ॥' ८१०
आह तओ सहदेवो – 'जइ तुमए मोइया [प. २७ A] नियधूया ।
भण तत्थ किमम्हाणं तुज्झ नियं चेव तं कज्जं ॥ ८११
अम्हेहिँ किं न कज्जा उत्तमसाहम्मियस्स तुह पूया ।
साहम्मियवच्छल्लं महाफलं मन्नमाणेहिं ॥ ८१२
मोयंतेण सधूयं निरीहचित्तेण अज्जियं[6] पुन्नं ।
इन्हिं पि तं निरीहो ता कह नासइ तयं तुज्झ ? ॥' ८१३
एवं बहुप्पयारं विचित्तउत्तीहिं बोहिओ संतो ।
अग्गहिय(?)दक्खिन्नो जिणदेवो गाहिओ वित्तं ॥ ८१४
संपूइया य दोन्नि वि जिणदेवेणावि ते सपरिवारा ।
जाओ परमाणंदो एवं सव्वेसि सयणाणं ॥ ८१५
ठाऊण केइ दियहे परिवड्ढियगुरुसणेहसंताणे ।
आपुच्छिय जिणदेवं सहदेवो पत्थिओ नयरं ॥ ८१६
विन्नवइ नम्मया तो जिणदेवं[7] निवडिऊण चलणेसु ।
'देज्जउ मम आएसो चेट्ठामि वयामि वा ताय ! ॥' ८१७

---

१ निंदणि. २ जिण. ३ °तलाए. ४ मुणइ. ५ हारेगि. ६ अजियं. ७ °देवे.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

सो वि तयं पडिजंपइ – 'वत्थालंकारभूसियं काउं ।
पुत्ति ! पयट्टसु मग्गे होज्ज विणीया गुरुजणस्स ॥' ८१८
घेत्तूण नम्मयं तो सहदेवो पडिगओ सनयरम्मि ।
नम्मयजम्मदिणम्मि व वद्धावणयं तओ विहियं ॥ ८१९
नाणाविहकोसल्लियहत्था पत्ता समत्तपुरपुरिसा ।
आसीवायपवत्ता अक्खयहत्था य नारिगणा ॥ ८२०
पणमंति नम्मयाए पाए केई वियासिमुहकमला ।
कुणइ पणामं केसिंचि नम्मया नमणजोग्गाण[1] ॥ ८२१
जो जत्तियस्स जोग्गो सम्माणं[2] तस्स तत्तियं कुणइ ।
सहस त्ति वीरदासो मणपरिओसं विवड्ढंतो ॥ ८२२
अट्ठाहिया य महिमा पवत्तिया जिणहरेसु सव्वेसु ।
पडिलाभिया य मुणिणो फासुयवयणंतमा(गा)ईहिं ॥ ८२३
कासी य नम्मया वि हु जिणच्चणं पइदिणं[3] तिसंझं[4] पि ।
आवस्सगकरणेज्जं करेइ समणीण सन्निहिया ॥ ८२४
सरियअणुहूयदुक्खा अणुसमयं वड्ढमाणसंवेगा ।
संजमगहणे[5]क्कमणा चेट्ठइ गुरुसंगमा एसा ॥ ८२५

[सुहत्थिसूरिणो नम्मयपुरे ओसरणं]

अह अन्नया कयाई चउदसपुव्विस्स[6] थूलिभद्दस्स ।
सीसो दसपुव्वधरो तवतविओ उज्जयविहारी ॥ ८२६
संपइरायस्स[7] गुरू गामागरनगरपट्टणपसिद्धो ।
विहरंतो ओसरिओ सुहत्थिसूरी तहिं नयरे ॥ ८२७

जो सोमो वि णिक्कलंको, सूरो वि तवे अमंदो[8], समुद्दो वि खाररहिओ, मंदरागो वि जडत्तवज्जिओ । तहा सूरो इव पयावी, चंदो इव सोमदंसणो, सागरो इव गंभीरयाए, मंदरो इव धीरयाए, पईवो[9] इव अन्नाणतिमिरमोहियाणं, कप्पपायवो धम्मोवएसफलदाणे, सारमोसहं मोहमहारोगस्स, घणाघणो कोवदावानलस्स, कुलिसपाओ माणमहीधरस्स, पक्खिराओ मायाभुयंगीए[10], पवणो लोहमेह[प. २७ B]पडलस्स । तहा संजओ वि अबंधणो, सुगुत्तो वि सयलजणपयडो, समिइ[11]पहाणो [वि] अवहत्थिय[12]पहरणो त्ति । अविय –

धम्माधम्मविहन्नू बंधवभूओ जियाणं[13] सव्वेसिं ।
परहियकरणेक्करसो जुगप्पहाणो विमलनाणो ॥ ८२८

---

१ °जोगाण. २ मम्माणं. ३ पयदिणं. ४ तिसज्झं. ५ °महणे°. ६ °पुव्विसा. ७ °रायास्स. ८ अमंढो. ९ °पाइवो. १० सायां°. ११ समीइ°. १२ अथह°. १३ नियाण.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सोउं तस्सागमणं सकोउहल्लो[1] खणेण संचल्लो ।
सयलो नरनारिगणो वंदणहेउं मुणिवरस्स ॥ ८२९
सिट्ठी वि उसभदत्तो पमोयसमुल्लसियबहलरोमंचो ।
सयणसुहिपुत्तजुत्तो सविड्ढीए[2] समुच्छलिओ ॥ ८३०
चलिया य नम्मयासुंदरी वि जणणीपुरस्सरा तुरियं ।
उच्छलियमहामोया रविउग्गमणे कमलिणि व्व ॥ ८३१
तिपयाहिणिं[3] करित्ता पंचंगपणामपुव्वयं सव्वे ।
संसंति समणसीहं कयकरयलसंपुडा[4] एवं ॥ ८३२
'जय मुणिमहुयरसेविज्जमाणलक्खणसणाहपयपउम ! ।
दंसणमेत्तपणासियनयजणनीसेसपावमल ! ॥ ८३३
संघसरोवरवररायहंस ! मिच्छत्तकोसियदिणेस ! ।
दुक्खत्त[5]सत्तबंधव ! धवलजसापूरियदियंत ! ॥ ८३४
बहुकालाओ अज्जं अंकुरिओ पुन्नपायवो अम्ह ।
जं दिट्ठो सि महायस ! अइदुल्लहदंसणो नाह ! ॥' ८३५
एवं गुरुं थुणंता वंदित्ता सेसमुणिवरे विहिणा ।
उवविट्ठो गुरुमूले वंदारुजणो जहाठाणं ॥ ८३६
उवविट्ठाण य गुरुणा नवजलहरगहिरमहुरघोसेण ।
पारद्धा धम्मकहा मयरसनिस्संदसुंदेरा ॥ ८३७
'भो भो ! सुणेह सम्मं चउगइसंसारसायरे बुड्डा ।
विसहंति जेण जीवा तिक्खाइं दुक्खलक्खाइं ॥ ८३८
जह जच्चंधो पुरिसो पवंचिओ निद्दएहिं धुत्तेहिं ।
पडइ गहिरंधकूवे कंटयमज्झम्मि जलणे वा ॥ ८३९
एवं अन्नाणंधा जीवा धुत्तेहिं[6] रागदोसेहिं ।
कयसंमोहा बहुसो नारयतिरिएसु हिंडंति ॥ ८४०
पाणवहासच्चगिराचोरेकाबंभपरिग्गहासत्ता ।
अज्जियँ[7]बहुपावमला[8] पडंति नरयावडे केवि ॥ ८४१
निस्सीमारंभपरिग्गहेसु गिद्धा असंति गिद्ध व्व ।
मंसवससोणियाइं के वि नरा जंति तो नरए ॥ ८४२
तत्थ य छिंदणभिंदणउक्कत्तणफालणाइ वि सहंति[9] ।
पच्चंति कुंभियाए वेयरणिजलम्मि छुब्भंति ॥ ८४३

---

१ सुकोउ°. २ सुविड्ढीए. ३ °हिणी. ४ °संपुड्ढा. ५ दुक्खंत. ६ धुत्तेहं. ७ अजिय°. ८ °पावकमला. ९ हसंति.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Narià, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घोराइं दुक्खाइं नरएसु सहंति पाणिणो जाइं।
कोडिसमाऊ वि नरो को वन्नेउं[1] तरइं[2] ताइं ॥ ८४४

मायाए मुद्धजणं कूडतुलाकूडमाणभंडेहिं।
वंचित्तु जंति केइ वि तिरियगइं[3] कम्मपरतंता ॥ ८४५

बहुकूडकवडनडिया लंचुं[4]कोडाइगहणतत्तिल्ला।
गयकरहतुरंगाइसु वाहणतिरिएसु गच्छंति ॥ ८४६

जलयरथलयरखयरा मंसासी जीवघायगा कूरा।
लद्धूण वि तिरियत्तं हुंति पुणो नारया दीणा ॥ ८४७

पत्तेयमणुयभावे जे धम्मं नायरंति [प. २८ A] जिणभणियं।
नारयतिरिएसु चिरं ते वि पयट्टंति बहुमोहा ॥ ८४८

जिणवयणोसहजोगा अन्नाणंधत्तमूसरइ जेसिं।
वामोहिज्जंति न ते रागद्दोसेहिँ[5] धुत्तेहिं ॥ ८४९

सम्मत्तनाणचरणाभरणेहिँ अलंकिया कयपमोया।
पावंति उत्तमसुहं देवत्तं पुण वि मणुयत्तं ॥ ८५०

ता जाव म संपज्जइ सुदुल्लहो खाइओ चरणजोगो।
तम्मि पुणो संपत्ते नियमा पावंति निव्वाणं ॥ ८५१

तत्थ उदाहरण न गंधो(?) उवमाइयं सुहं सयाकालं।
अणुहुंति[6] सव्वजीवा अपुणँ[7]भवभावमावन्ना ॥ ८५२

एवं नाऊण जणा! रागद्दोसाण निग्गहसमत्थं।
पडिगिण्हह[8] जिणवयणं जेणाणुत्तरसुहं लहहा ॥' ८५३

एवं च सूरिमुहमयंकवज्झरियं देसणामयं कन्नंजलीहिं मायामाया-(आयामा ?)वियमाणाणं खणेणावगयं मिच्छत्तविसं। संजाओ केसिं चरणधरण-परिणामो, समासादियं[10] केहिं पि बोहिवीयं ति। एत्थंतरे लद्धावसरेण पुच्छियं वीरदासेण—'भयवं! एसा अम्ह धूया भावियजिणवयणा[11] सरयससहरकिरणपुंज-समुज्जलसीला किमे[रि]सावयाण भायणं संवुत्ता?' ताहे भगवया विहियसुय-नाणोवओगेण सम्ममवधारिऊण वज्झरियं—'धम्मसीले[12]! संसारे जीवाणं दोन्नि भंडागाराणि संति—पुन्नागारं पावागारं च। जया[13] च जीवस्स ठिईखएण पुन्ना-गाराउ पुन्नमुदयं[14] लहइ तया जीवो सुही होइ, जया य पावागाराउ पावमुदयमेइ तया जीवो दुही होइ। जया य दो वि उदिज्जंति तया जीवो मिस्साइं सुहदुक्खाइं

१ वन्नेउ. २ त्तरइ. ३ °गई. ४ लंवु°. ५ °दोसेहिं. ६ अणुहुति. ७ अपुणु°. ८ °गिण्हइ. ९ °णुत्त्वर°. १० °सासियं. ११ °वयण. १२ °सीला. १३ जाया. १४ °मुदलयं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेएई[1] । जं च उक्कडं तस्स ववएसो होइ । ता एयाए तुह धूयाए सुकुलजम्मो जिणवरधम्मो रूवलायन्नजुत्तया भोगोवभोगसंपया – एयमणग्घं[2] पुवो(न्नो)दय-माहप्पं । जं पुणो भत्तुणो विरागो, सुन्नदीवे चागो, वेसाहि हरणं, तहाविह-दारुणजायणाकरणं – एयं महाबलं पावोदयपायवफलं ति ।' पुणो[3] पणमिऊण वीरदासेण पुच्छियं – 'भयवं ! कहं पुण दुग्गमेयमेयाए उवज्जियं[4] ? ति नाउ-मिच्छामि, तो विसेसेणाणुग्गहं काऊण कहिउमरिहंति मे भगवंतो त्ति ।' तओ भयवं तस्स अन्नेसिं च लोयाणमणुग्गहनिमित्तं साहेउमारद्धो । अवि य –

[नम्मयासुंदरीए पुव्वभववण्णणा]

अत्थि कलिंजय(र)विसए गामो सिरिमेलउ त्ति नामेण ।
तत्थ सिरिपालनामो एगो कुलपुत्तओ होत्था ॥ ८५४

तस्स य सुरूवकलिया सिरिप्पभा भारिया सिणेहवइ ।
गरुयाणुरायकलिया ताणं कालो सुहं जाइ ॥ ८५५

अन्नदिणे सिरिपालो समाणमित्तेहिँ एवमुल्लविओ ।
'गंतूण अमुगगामं लूडेमो अज्जरयणीए ॥ ८५६

जो कोइ तत्थ ला[प. २८ B]भो तस्सद्धं[5] तुज्झ सेसमम्हाणं ।
दिज्जाहि जहाजोगं विभजिस्सामो य तो अम्हे ॥ ८५७

किं तस्स जीविएणं नरस्स रंड व्व विगयववसाओ ।
जो चारणेहिँ निच्चं न हु गिज्जइ दंतिदंतीहिँ(?) ॥' ८५८

सोऊण समुल्लावं सिरिप्पभाए पिओ निओ भणिओ ।
'मा नाह ! कुणसु वयणं एएसिं पावमेत्ताणं ॥ ८५९

धणधन्नसमिद्धप(घ)रं मोत्तूण कुणंति रोरियमणेगे ।
धणसामिपहावहया चुक्कंति सये(गे?)हभोगाणं ॥ ८६०

पेच्छई[6] छीरं[7] वरओ मंजारो[8] न उण लउडयपहारं ।
पेच्छंति परेसि धणं नियय[9] मरणं न पेच्छंति ॥ ८६१

जे हुंति नरा दुत्था धरिउं न तरंति अन्नहा जीयं ।
ते खलु चोरियजूयं रमंति हरिउं व मरिउं वा ॥ ८६२

तं पुण धन्नसउन्नो विलससु नियसंपइं[10] सया मुइओ ।
सट्ठाणट्ठेणं[11] सयं[12] अलाहि चोरेक्क[13]करणेण ॥' ८६३

---

१ वेपइ. २ एयगणग्घं. ३ पुण°. ४ उवज्जियं. ५ तस्सधं. ६ पच्छइ. ७ च्छीरं. ८ मघारो. ९ नियय गरणं. १० °संपई, ११ सट्ठाणेट्ठेण. १२ मयं. १३ वोएक्क°.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोहमहागहगहिओ सिरिपालो संठवेइ नियदइयं ।
'नाहं करेमि एयं दइए ! तं चेट्ठ सुविसत्था ॥' ८६४

अकहित्ता घरणीए रयणीए निग्गओ सगेहाओ ।
सहस त्ति ताण धाडी पडिया हियइच्छिए गामे ॥ ८६५

सन्नद्धा गामभडा पयट्टमाओहणं महाघोरं ।
भग्गा य तहा धाए अणुलग्गा पिट्ठओ कुढिया ॥ ८६६

दट्ठूणं[1] हम्ममाणे नियजोहे कोवजलणपज्जलिओ ।
चलिओ तेसिं सम्मुहो सिरिपालो साहससहाओ ॥ ८६७

सो एगोऽणेगेहिं समंतओ बाणघायजज्जरिओ ।
पडिओ मेइणिवीढे संपत्तो दीहरं निद्दं ॥ ८६८

आयन्निऊण एयं सिरिप्पहा मुच्छिया गया धरणिं ।
कहकह वि लद्धसन्ना कासि पलावे बहुपयारे ॥ ८६९

तत्तो वि सुन्नपु(वु?)न्ना अडवियड्डा वणंतरे भमिरी ।
कालिंजर[2]गिरिमूले संपत्ता आसमं एगं ॥ ८७०

दिट्ठा य तावसीहिं दयापहाणाहिँ महुरवयणेहिं ।
बोलाविऊण भणिया – 'भद्दे ! किं इत्थ रुन्नेण ॥ ८७१

जइ रुयसि जइ वि विलवसि तिलं तिलं जइ वि कप्पसे अप्पं ।
तह वि न वलंति पुरिसा विहिणा उद्दालिया जे उ ॥' ८७२

तो सा जंपइ – 'भयवइ ! न कयाइ वि मग्ग(ज्झ) खंडिया आणा ।
ता कीस सो पउत्थो मए तहा वारिओ संतो ? ॥' ८७३

तावसीए भन्नइ –

'जइ वि न ग(इ?)च्छइ गंतुं वारिज्जइ जइ वि निद्धबंधूहिं ।
तह वि हु वच्चइ पुरिसो पगड्ढिओ कालपासेहिं ॥ ८७४

किं तस्स सोइयव्वं धम्मिणि ! चिंतेहि अप्पणो धम्मं ।
जम्मंतरे वि जत्तो दुक्खाण न भायणं होसि ॥ ८७५

एसो च्चिय वणवासो मूलं सव्वेसि होइ सुक्खाणं ।
पियविप्पओगदुक्खं सुविणे वि न दीसए एत्थ ॥ ८७६

न सुणंति फरुस[3]वयणं आणं न सुणंति कस्सइ कयाई[4] ।
न सुणंति कलहवयणं वणवासी सव्वहा [प. २९ A] धन्ना ॥ ८७७

---

१ दट्ठण. २ कालिंनर. ३ फरस°. ४ कयाइं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इयं[1] पालिज्जइ बंभं दुहियाण जियाण कीरइ परित्ता ।
तप्पिज्जइ निचग्गी नवनवसमिहाहिँ पइंदियहं[2] ॥ ८७८

कायव्वा गुरुभत्ती गुरुआणापालणम्मि जइयव्वा(व्वं?) ।
इच्चाइ अम्ह धम्मो सुहकरणेज्जो सुहफलो य ॥' ८७९

एमाइ भणंतीहिं सिरिप्पभा बोहिया तहा ताहिं ।
जह तासिं चिय मूले सयराहं तावसी जाया ॥ ८८०

तो पयणुरागदोसा परिसुद्धायारपालणुज्जुत्ता ।
विहिणा कयसन्नासा उववन्ना वंतरनिकाए ॥ ८८१

सअणाँ[3]ढियपरिवारे नम्मयनइरक्खणम्मि अभिउत्ता ।
परिहिंडइ सच्छंदा कीलंती नम्मयतडेसु ॥ ८८२

कारंडहंससारसरहंगपमुहेहि बहुविहंगेहिं ।
चिंतइ य जलं रेवं निज्झायंती सुहं लहइ ॥ ८८३

उच्छलिय विलिज्जंते पिइंती नम्मयाइ कल्लोले ।
चिट्ठइ पलोयमाणी अतित्तचित्ता चिरं तं पि ॥ ८८४

कत्थइ हत्थिकुलाइं वणमहिसिकुलाइँ नम्मयजलम्मि ।
उब्बुड्डनिब्बुडणँ[4]वावडाइँ तूसइ पलोयंती ॥ ८८५

आरुहइ विंझसेले पेच्छइ विंझाडविं विसेसेण ।
रुरुरुज्झगवयँ[5]सूयरकुलेहिँ परिमंडिउद्देसं ॥ ८८६

सद्दूलसरहचित्तयसीहाइजिएहिँ भीमरूवेहिं ।
घेप्पंतपलायंतेहिँ संकुलं तं महारन्नं ॥ ८८७

इच्छाएँ[6] रमइ विसे(सएँ) नच्चंतँ[7]सिहंडिमंडलीरम्मे ।
निज्झायइ संझगिरिं कीलइ तत्थेव गंतूण ॥ ८८८

सुचिरं परिब्भमंती केलिकि(पि)या सा कयाइ दच्छीय ।
विंझगिरिस्स नियंबे झाणत्थं मुणिवरं एगं ॥ ८८९

नासानिरुद्धदिट्ठं संवरिँ[8]यासेसइंदियपयारं ।
मेरुमिव निप्पकंपं एगग्गमणं महासमणं ॥ ८९०

जाईए पच्चएणं कीलारसिया तओ तयं दट्ठुं ।
सा परिचिंतइ 'एयं चालेमि कहंचि[9] झाणाओ ॥' ८९१

---

१ इया. २ पयदि°. ३ रुसअणा°. ४ अप्पट्टनिप्पुट्टण°. ५ °गयवय°. ६ इट्ठाए. ७ तच्चंत°. ८ संचरिया°. ९ कहिंचि.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परिचिंतिऊण सहसा मुंचइ अट्टट्टहासमइभीमं ।
गुह[1]ंकुहररुद्धियपडिरवसंरावियसयलजीवं [व ?] ॥ ८९२
दट्ठूण तं अभीयं ताहे दंसेइ घोरसद्दूले ।
गुंजारवभरियनहे विगरालमुहे समुहमिंते ॥ ८९३
सु[2]निरुद्धदिट्ठिपसए(र)स्स तस्स तव्व(न व)ते भयंकओ जाया ।
ताहे उक्खिविऊणं मुंचइ तं जलहिमज्झम्मि ॥ ८९४
तुच्छम्मि जलहिनीरे सव्वत्तो परिमिलंतगुरुवेले[3] ।
तत्थ वि य अवीहंतं नेईं[4] [पुण] पुव्वठाणम्मि ॥ ८९५
तत्थ य दंसेइ पुणो पुलिंदवंदाइं[5] भीमरूवाइं ।
'छेदह भिंदह [मारह]' भणमाणाइं अणेगाइं ॥ ८९६
[एस] भएण [ण] जिप्पइ कलिऊण करेइ चित्तहरणत्थं ।
उब्भडवेसविलासिणिरूवं चाडुणि[6] कुणमाणं ॥ ८९७
तेणावि अकयखोहं पसंतहिययं महामुणिं नाउं ।
उव[प. २९ B]संतमणा देवी सपच्छयावाँ[7] विचिंतेइ ॥ ८९८
'एसो कोइ महप्पा तीरइ न हु चालिउं गुमाणाओ ।
किं वट्ट(ह)इ सिहरिनाहो पहओ वि पयंडपवणेहिं ॥ ८९९
तो दुट्ठ[8] मए विहियं किलेसिओ एस जं महासत्तो ।
नीसेससत्तसुहओ वट्टंतो सुद्धझाणम्मिं[9] ॥ ९००
कोउगमित्तेण मए इमस्स झाणंतरायमारद्धं ।
कीलस्स कए नूणं पवीलियं तुं[10]गदेवउलं ॥ ९०१
उत्तम[11]सत्तो धीरो चलिओ न वि एस सुद्धझाणाओ ।
पत्तं च मए पावं पावेकमणाइ पावाए ॥' ९०२
एवं पच्छायावं उव्वहमाणी मुणिस्स चलणाणं ।
पुरओ कयप्पणामा खामेइ मुणिं सुपरिणामा ॥ ९०३
'भयवं ! खमाहि[12] मज्झं अवराहमिमं महामहंतं पि ।
पक्खित्तं नियसीसं मया तुहंके महाभाय[13] ! ॥ ९०४
धिद्धी मह देव[त्ते] माहप्प[14]मुवेक्खिऊण तुह जीए ।
खलियारणा खलाए कया पयट्टस्स सिवमग्गे ॥ ९०५

---

१ गिह°. २ सुसुनि°. ३ °वेलो. ४ नेइ. ५ °वंडाइ. ६ चाड्डणि. ७ सपच्छाया. ८ दुट्ठ. ९ °माणम्मि. १० तुंम°. ११ उत्तग°. १२ खमाणि. १३ °भाया. १४ माहप्पमडरिक°.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

उज्झइ मणो महायस ! दुच्चरियमहानलेण एएणं ।
विज्झवसु तं सुसंजय ! मं भीमसु(सीचसु ?) वारिधाराए ॥ ९०६
अन्नाणमोहियाए बालिसभावाइ खमसु मे दोसं ।
बालकओ अवराहो कोवं म जणेइ जणयाणं ॥ ९०७
खम खमसु मह[1]रिसि ! तुमं खमिउं जाणासि तं चिय न अन्नो ।
नहि[2] चंदमंडलाओ पडंति अंगारधाराओ ॥' ९०८
एवमणेगपयारं खामिंतिं पासिऊण मुणिवसभो[3] ।
उवसंतो उवसग्गो त्ति पारए झाणमइपुन्नं ॥ ९०९
पभणइ – 'सुसाविगे[4] ! मा बीहसु साहूण होइ न हु कोवो ।
सहयारपायवाओ न निंवगुलियाण उप्पत्ती ॥ ९१०
किं च निसामेहि फुडं उवएसं वज्जरेमि जिणभणियं ।
जिणसाहुचेइयाइं आसायंतो जणो मूढो ॥ ९११
अज्जेइ महामोहं अणंतसंसारकारणं घोरं ।
जेण न पावइ अन्नं नारइतिरियाइदुरियाणं ॥ ९१२
हासऽज्जियं पि कम्मं वेयइ दुक्खेण कह वि रोयंतो ।
अन्नजणस्स वि विसए विसेसओ जिणमयवएसु ॥ ९१३
एक्कसि कए वि दोसे अणुहवइ जिओ असंखदुक्खाइं ।
जिणसाहुचेइयाणं पडणीओ होज्ज मा कोइ ॥ ९१४
जइ वि तुह नासि रो(दो ?)सो तहा वि तुमए उवज्जियं पावं[5] ।
इय [पच्छ]याव[6]पराएँ नवरं उवसामियं बहुयं ॥ ९१५
तो होज्ज इओ सुंदरि ! जिणमुणिभत्ता विसुद्धसम्मत्ता ।
झोसेसि[7] जेण सव्वं पावं एयं पि अन्नं पि ॥' ९१६
उप्पाइयसम्मत्तो सो साहू नम्मयाइ देवीए ।
काऊण धम्मलाभं चलिओ नियवंछियविहारं ॥ ९१७
देवी संवेगपरा भवभमणभएण भावियसुभावा ।
सव्वं मुणिवरभणियं आयरइ जहट्ठियं तुट्ठा ॥ ९१८
पंथपरिब्भट्ठाणं मग्गं दंसेइ समणसमणीणं ।
तक्करवग्घाइभया सा रक्खइ निच्च सन्निहिया ॥ ९१९
तण्हाछुहा[प. ३० A]भिभूयं संघं दट्ठूण अडविमज्झम्मि ।
निम्मेइ गोउलाइं विउलाइं भत्तपाणड्ढा ॥ ९२०

---

१ महा°. २ महि. ३ °वसभा. ४ सुसावगे. ५ फयं. ६ °याउप°. ७ ज्झासेसि.

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चेइयन(ज)इपडणीयं उवसामइ देवसत्तिओ सव्वं।
कुणइ जिणचेइएसुं तिक्कालं पूयमणुदियहं॥ ९२१
वेयावच्चं निच्चं वच्छल्लं तह समाणधम्माणं।
कुव्वंतीए सावग! पुन्नं समुवज्जियं तीए॥ ९२२
साहूवसग्गपभवं खवियं पावं पि ताव अइबहुयं।
किंचि पुण सावसेसं न निट्ठियं चिक्कणत्तेण॥ ९२३
एत्थंतरम्मि आउक्खएण सा देवया चुया तत्तो।
उववन्ना कुच्छीए एसा सहदेवघरणीए॥ ९२४
जं नम्मयानइं पइ पडिबंधो आसि तम्मि कालम्मि।
तेणं चिय जणणीए जाया तम्मज्जणे सद्धा॥ ९२५
एवं दुन्नि वि सावग! कयाइँ एयाए पुन्नपावाइं[1]।
अइबलवंतं पुन्नं पावं पुण तारिसं नासि॥ ९२६
जेऊण आवयाओ मिलिया तुम्हाण पुन्नमाहप्पा।
बलिएण दुब्बलो जं जिप्पइ तं किमिह चोज्जं [च?]॥ ९२७
पावं ति(वि) पुव्वभवियं इमीएँ जायं निकाइयत्तेण।
जं वावियं सुपत्ते मज्झ(हा?)फलं होइ दाणिं च॥' ९२८

[नम्मयासुंदरीए दिक्खागहणं]

एवं च निसामिंती सहस च्चिय नम्मया गया मोहं।
जाया य समासत्था [चे]लंचलपवणसंगेण[2]॥ ९२९
भाणी य पणमिऊणं–'भयवं! तुब्भेहिँ सुट्ठु उवलद्धो।
निम्मलनाणच्छीए जहट्ठिओ मज्झ वुत्तंतो॥ ९३०
केवलिजिणाण विरहे जुगप्पहाणेहिँ दाणि तुब्भेहिं।
धा(धी?)रिज्जइ तत्थमणं संसयवोच्छेयदच्छेहिं॥' ९३१

गुरुणा भन्नइ–

'सुन्नम्मि तम्मि व(र?)न्ने सुंदरि! हिययम्मि आसि जे धरिया।
तेसिं मणोरहाणं पत्थावो सुंदरो एसो॥' ९३२
वियसंतवयणकमला वंदित्ता वयइ नम्मया–'भयवं!।
जह आणवेह तुब्भे वसइ [इ]मं माणसे मज्झं॥ ९३३

---

१ °पावाए. २ पमासत्था.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुगुरुं[1] मग्गंतीए[2] पत्तं तुह दंसणं मए सामि[3] ! ।
अब्भुट्ठियाएँ वयभारधरणबुद्धिं धरंतीए ॥ ९३४
आपुच्छिऊण जणए करेमि ता तुम्ह तुरियमाण त्ति ।'
भणइ गुरू वि – 'अविग्घं मा पडिबंधं करेज्जासि[4] ॥' ९३५
वज्जरइ गिहं पत्ता सव्वं चिय गुरुजणं विणयसारं ।
'दिट्ठो नाणाइसओ सुहत्थिसूरिस्स तुब्भेहिं ॥ ९३६
जं किंचि मज्झ अंगे मणवयकाएहिँ[5] जेहिँ जं रइयं ।
तं सव्वं चिय नज्जइ समक्खमेयस्स संजायं ॥ ९३७
अणुहूयबहुदुहाए सुमरियनियपुव्वजम्मकम्माएँ ।
ता एयपायमूले जुत्तं मे समणगुणधरणं ॥' ९३८
पडिभणइ गुरुजणो तं – 'पुत्ति ! तुमं सुट्ठु वल्लहा अम्ह ।
किं तु तुह तम्मि वसणे अम्ह सिणेहेण किं सिद्धं ? ॥ ९३९
सोऊण दुस्सहाइं[6] तुमए सोढाइँ दुक्खलक्खाइं ।
मत्तं(सव्वं ?) अम्हाणं पि हु पट्ठ(च)इओ हंदि सव्वेसिं ॥ ९४०
किं तु वयं गुरुकम्मा लतस(न तरा)मो दुद्धरं वयं धरिउं ।
धन्ना य तुमं इक्का अंगीकाउं [प. ३० B] इमं महसि ॥ ९४१
पव्वा[विज्ज]हि वच्छे ! अम्हं पि य बोहणं करेज्जासि ।
भावियजिणवयणाणं[7] वयगहणं[8]निवारणमजुत्तं ॥' ९४२
इय पमुइयहियएहिं दिक्खामहिमा गुरूहिँ पारद्धा ।
घोसाविया य अमरी कया य अट्ठाहिया महिमा ॥ ९४३
पडिलाभिया य विहिणा समणा समणी य फासुदव्वेहिं[9] ।
सम्माणिओ य सम्मं समाणधम्माण समुदाओ ॥ ९४४
दिन्नमवारियसत्तं मग्गणयगणस्स वड्ढिओ तोसो[10] ।
विहिया य विसेसेणं पूया नियसयणवग्गस्स ॥ ९४५
सोहणदिणम्मि तत्तो न्हायालंकाररीरियावयवा[11] ।
चलिया सिवियारूढा थुव्वंती[12] मह(मागह)गणेण ॥ ९४६
वज्जंतगहिरतूरा[13] मंगलगीयाइँ दिसि दिसि सुणंती ।
पत्ता वसहिसमीवं उत्तिन्ना [त]ओ [य?] सिवियाओ ॥ ९४७
होऊण रायचा[ई ?] काउं तिपयाहिणं[14] मुणिवइस्स[15] ।
पभणंति कयंजलिणा जणणीजणया मुणिगइंदं ॥ ९४८

---

१ सुणुरं. २ गग्गंतीए. ३ °ज्जामि. ४ °वइ°. ५ °कम्मगए. ६ दुस्सहायं. ७ °जिणतयणा°. ८ °गहरणं°. ९ °देव्वेहिं°. १० तासो. ११ °लंकारेरीरिया°. १२ थुवंती. १३ °गहिरतेस. १४ °हिण. १५ °वयस्स.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'भयवं ! एसा अम्हं अइप्पिया नम्मया वरा धूया ।
संसारभउव्विग्गा इच्छइ संजमभरं[1] वोढुं ॥ ९४९

एयं सीसिणिभिक्खं तं[2] गेण्ह[ह] दिज्जमाणमम्हेहिं ।
तुम्ह सरणागयाए जं जुत्तमिमीएॅ[3] तं कुणह ॥' ९५०

आह गुरू[4]– 'जुत्तमिणं धन्ना एसा पुरा सुकयपुन्ना ।
तुंब्भे[5] वि नूणं[6] धन्ना जाण कुले वड्ढिया एसा ॥' ९५१

दिन्ना य तओ दिक्खा तीए पच्चक्खमेव सयणाणं ।
जिणभासिएण विहिणा सुहत्थिनामेण मुणिवइणा[7] ॥ ९५२

अभिवंदिया य विहिणा तत्तो[8] सयणेहिं मुइयहियएहिं[9] ।
दिन्नो आसीवाओ[10]– 'नित्थारगपारगा होसु ॥ ९५३

देवगुरुपसायाओ संपुन्नमणोरहा तुमं जाया ।
अम्हाण वि संपत्ती एरिसिया होज्ज कइया वि ॥' ९५४

उववूहिऊण बहुसो पुणो पुणो वंदिऊण भत्तीए ।
वड्ढियहरिसविसाओ सयणगणो पडिगओ गेहं ॥ ९५५

इयरी वि वसुमईए पवत्तिणीए समप्पिया गुरुणा ।
दुविहपयारं सिक्खं पगिन्हियॅा[11] विणयनयनिउणा ॥ ९५६

तूसइ सारिज्जंती अणुग्गहं मुणइ[12] वारिया संती ।
चोइज्जंती वि खरं न चेव पडिचोयणं कुणइ ॥ ९५७

दिवसेण वि जिट्ठाए विणीयवयणा करेइ सा विणयं ।
तवमाणगुणड्ढा(ड्ढा?)णं गुरुबुद्धीए कुणइ किच्चं ॥ ९५८

छट्ठट्ठमाइरूवं तवइ तवं गुरुजणस्स आणाए ।
सोसेइ नियं देहं सुमरंती पुव्वदुक्खाइं ॥ ९५९

पत्ता(न्ना)इसया तुरियं अहिया[इं] विजियदुज्जयपमाया ।
एक्कारस अंगाइं पवित्तिणीए पसाएण ॥ ९६०

भरभावियसुत्तत्था संतत्थाऽऽसवभवाण य दुहाणं ।
संजाया गुरुगोरवपयं विसेसेण समणीणं ॥ ९६१

पावियसुहपरिणामा जा नम्मयसुंदरी तवं चरइ ।
एत्थंतरम्मि वसुमइपवत्तिणी [प. ३१ A] पाविया सग्गं ॥ ९६२

---

१ गंजभसरं. २ त. ३ °ममीए. ४ गुरु. ५ तुज्झे. ६ तूण. ७ °वयणा. ८ मत्तो. ९ मुयइहि°. १० जासी°. ११ पगिण्हिया. १२ मुइणइ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[नम्मयासुंदरीए पवत्तिणीपयठवणा]

जोग्ग त्ति[1] जाणिऊणं ठविया गुरुणा पवत्तिणी एसा ।
जणयंती आणंदं समणीसंघस्स सयलस्स ॥ ९६३
तो गुरुणाणुन्नाया साहुणिजणउचियउज्जयविहारा ।
गामनगरेसु विहरइ बोहंती धम्मिए लोए ॥ ९६४
सव्वत्थ नियचरियं सवित्थरं साहिऊण संविग्गो[2] ।
समणीण सावियाण य विसेसओ देइ उवएसं ॥ ९६५
साहूसु साहुणीसु य–'वयभंगमणं पि मा करेज्जासु ।
दुक्खेहिँ दारुणेहिं जइ ता पत्तेहिँ न हु कज्जं ॥ ९६६
अन्नाणमोहियाए पुव्वभवे मुणिवरो मए एगो ।
काउस्सग्गम्मि ठिओ खुब्भइ तवत(न य व)त्ति कोड्डेण ॥ ९६७
उवसग्गिओ महप्पा खुभिओ मणयं पि नेव झाणाओ ।
बद्धं च मए पावं जस्स विवागो इमो जाओ ॥' ९६८
वयपरिणामतवेहिं किसियंगी सा चिरेण कालेण ।
तारिसिया संजाया सयणा वि जहा न लक्खंति ॥ ९६९
जे आसि सिरे केसा अइकुडिलतरंगसच्छहच्छाया ।
ते कासकुसुमधवला विरल च्चिय केइ दीसंति ॥ ९७०
आयंससमच्छाया आसि कवोला वि जे समुत्ताणा ।
तवसोसियदेहाए जाया खल्ला दढं ते वि ॥ ९७१
सोमालमंग(स)लाओ अंगुलिओ आसि हत्थवाएसु ।
परिसुक्कक[ट्ठ]घडिय व्व अन्नरूवं गया ताओ ॥ ९७२
सेयपडपाउयंगी तणुइं[3] थूलं व मुणइ न हि कोइ ।
सद्दो वि तारमहुरो न अन्नभावं गओ तीए ॥ ९७३

[नम्मयासुंदरीए कूवचन्द्रगामं पइ विहरणं]

इओ य जप्पभिइं[4] जाणिओ[5] जणएहिं नम्मयापरिचागवुत्तंतो तप्पभिई चेव अवहत्थिओ कूवचंद्रोदंतो[6] । रिसिदत्ता वि अन्नायपुत्तावराहा न कोइ तत्तिं करेइ त्ति माणेण न तेसिं वत्तमन्निस्सइ । चिरस्स समागएण महेसरदत्तेण रुयमाणेण साहियं सयणाणं जहा–'सुन्नदीवे रक्खसेण खइया मम दइया, अहं पि किच्छेण वारिवसहं सरिऊण पलाणो तेण जीविओ इन्हिं ।' एयं

1 जोगच्छि. 2 संविग्गो. 3 तणुइ. 4 जप्पभियं. 5 जाणिउं. 6 °चंडोदंतो.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सोऊण जाया सोआउरा रिसिदत्ता, रोयमाणी कहकह वि धीरविया सयणवग्गेण। तह वि तीए माणाइसएण न जाणाविओ एस वइयरो जणयगिहे। महेसरदत्तो वि कयकलत्तंतरसंगहो अपरिचत्त[1]सावगधम्मो नम्मयासुंदरिकारियचेइए पूयणवंदणाइ कुणमाणो चेट्ठइ। परोप्परगमणागमणा[2]भावाओ कूवचंद्रे नयरे न केणावि विन्नायं नम्मयासुंदरीए आगमणं[3] पव्वयणं वा। एवं च काले वच्चमाणे अन्नया पवत्तिणीए सामच्छियाओ साहुणीओ–'जइ भे रोयइं[4] ता कूवचंद्रेण विहारं करेमो।' ताहिं भणियं–'भयवई[5] पमाणं।' 'तो खाइं तुब्भे तत्थ गयाओ मम नामं मा [प. ३१ B] कहेज्जह[6], "पवत्तिणी[7] पवत्तिणी" वा अहं भाणियव्वा जओ अन्नाय[8]उंच्छमे(से?)वाए मे वन्नेइ किं नामविक्कएणं?' तओ 'जमाणवेहि' त्ति परिवारेण वुत्ते सुहविहारेण पत्ता तत्थ। दट्ठूण वंदियाओ महेसरदत्तेण, दिन्नो नियगिहास[न्नो] उवस्सओ। ठियाओ तत्थ वंदियाओ भत्तिसारं। रिसिदत्ताए दंसियाइं[9] चेइयाइं, कयमुक्कंठियाए पवत्तिणीए विसेसेण वंदणं। विहिया विहाणेण धम्मदेसणा, आणंदिओ सावियावग्गो। एवं[10]मन्नायचरियाए विहर[11]माणीओ सज्झायंतीओ चेट्ठंति। तत्थ महेसरदत्तो वि तासिं किरियाकलावाणुरंजियमणो तासि सज्झायज्झुणि[12]मेगचित्तो निसामेइ, विसेसओ पवत्तिणीए। चिंतइ[13] 'नम्मयसुंदरिसरिच्छो एस[14] [स]द्दो। नूणमेसा तीसे माउच्छा माउच्छीदुहि[या] वा भविस्सइ। कहमन्नहा सद्दसमाणत्तं?' ति। अन्नया कयाइ पवत्तिणी[15] महुरवाणीए सरमंडलपगरणं परावत्तिउं पवत्ता। अवि य–

'सो जयउ जिणवरिंदो जस्स मुहा म(पु)न्नचंदबिंबाओ।
जरमरणवाहिहरणं सिद्धंतमहामयं झरियं॥ ९७४
जयइ सरमंडलं तं जेणिह पढिएण बुद्धिमन्तेहिं।
पुरिसाण महेलाण य गुणा य दोसा य नज्जंति॥ ९७५
सत्त सरा पन्नत्ता सज्जो[16] रिसहो तहेव गंधारो।
मज्झिम पंचम रेवय नेसाओ सत्तमो होइ॥ ९७६
सत्त [स]रट्ठाणाइं तत्थ य सज्जं[17] तु अग्गजीहाए।
रिसभं उरेण कण्ठेण[18] तइययं नीसवेइ सरं॥ ९७७

---

१ °चत्ता°. २ °गमणीभा°. ३ आगमण. ४ रोवइ. ५ भयवइ. ६ कहेज्जहा. ७ वत्तिणी. ८ अन्नायं°. ९ वंसियाइं. १० एवं°. ११ विरहमा°. १२ °सुणि°. १३ चिंतय. १४ पस. १५ व्रत्तिणी. १६ साज्जा. १७ मज्जं. १८ कण्हेण.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मज्झिमं[1]जीहाए मज्झिमं[2] तु नासाएँ पंचमं जाण।
रेवय दंतोट्ठवहं[3] भमुहक्खेदे(वे)ण नेसायं॥ ९७८

सज्जं रवइ मयूरो रिसहं पुण कुक्कुडो सरं[4] रवइ।
हंसो गंधारसरं मज्झं तु गवेलया रवइ॥ ९७९

पंचमयं परपुट्ठा छट्ठं पुण सारसा य कुंचा य।
सत्तमयं तु गयंदा सत्तसरा जीवनिस्साओ॥ ९८०

सज्जं रवइ मुइंगो गोमुह रिसहं च नदइ गंभीरं।
संखो वि य गंधारं मज्झिमयं झल्लरी रसइ॥ ९८१

चउचरणगोहिया पंचमं तु आडंवरो य रेवययं।
सत्तमयं पुण भेरी भणिया अज्जीवनिस्साओ॥ ९८२

सज्जेण सुहपवित्ती वहुपुत्तो वल्लहो[5] य जुवईणं।
रिसहेणं धणवंतो भणिओ सेणावई चेव॥ ९८३

विविहधणरयणभागी भणिओ गंधप्पिओ य गंधारे।
पवियक्खणो कवी वि य एयम्मि सरे समक्खाओ॥ ९८४

मज्झिमसरप्पलावी सुहजीवी वहुधणो य दाया य।
पंचमसरमंता पुण पुह[इ]वई[6] हुंति सूरा य॥ ९८५

छट्ठे कुच्छिय[7]वित्ती कुवसणकुभोयणा[8] कुजोणीया।
कलहकरलेहवाहयदुहजीवा[9] सत्तमे भणिया॥ ९८६

पयईकसिणो सज्जं अवस्स भावेइ जइ वि य समत्तं।
असमत्तेणऽइकालो गुज्झम्मि य लक्खणं रत्तं॥ ९८७

रिसहं मरगयगोरो [प. ३२ A] अवस्स भावेइ परमगोरो वा।
तेण य सिरम्मि[10] तस्स य विवरीयं लक्खणं भवइ॥ ९८८

धवलो गंधारसरं अवस्स भावेइ किंचि भावेण।
तेण य तं विवरीयं दाहिणओ लक्खणं होइ॥ ९८९

कणयपहो मज्झिमयं अवस्स भावेइ जइ वि न विस(सम?)त्तं।
तेण उदरम्मि बिंबं तव्विवरीयं वियाणेज्जा॥ ९९०

आलोहियधवलवन्नो अवस्स भावेइ पंचमं सो उ।
होइ य सिरम्मि पिप्पो पंकयदलसप्पभो तस्स॥ ९९१

छट्ठं कंवोयवट्ट(?) अवस्स भावेइ चित्तवन्नो य।
तेणावि रत्तवन्नो अवस्स लिंगे मसो होइ॥ ९९२

---

१ तज्झिम°. २ सज्झिमं. ३ °ठवहं. ४ इसंर. ५ तल्लहो. ६ °वइ. ७ कुच्छीय°.
८ °कुतोयण. ९ °जीव. १० मिरम्मि.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्तमयं सुद्ध(ह?)सामो पढमतिवन्नो य कुणइ नियतीए ।
ताण य रुक्खविरुक्खा होंति मसा चलणदेसेसु ॥' ९९३

[महेसरदत्तकयपच्छायावो]

एयं च पढिज्जंतं सव्वं आसन्नसंठिओऽवहिओ ।
सुणइ महेसरदत्तो चिंतेई तो मणेणेवं ॥ ९९४
'आसि मए सुयपुव्वं एसा सरमंडलं वियाणेइ ।
सिट्ठं च तीय अहयं जाणामि जिणागमपसाया ॥ ९९५
कोहंग्गि[1]भुयंगमवंकियस्स पम्हुट्ठसयलसन्नस्स ।
सुइगोयरं न पत्तं पडिभग्गसमग्गभग्गस्स ॥ ९९६
पम्हुट्ठो गुणनिवहो असंतदोसा पइट्ठिया चित्ते ।
धुत्तूरियहिययस्स व विवरीया घाउणो जाया ॥ ९९७
एक्किक्को तीय गुणो दीसइ अन्नासु[2] नेव नारीओ(सु) ।
अप्पा हु अप्पण चिय हा ! मुट्ठो दुट्ठचित्तेण ॥ ९९८
सो तारिसओ विणओ सि(ति) चिय महुरक्खरा समुल्लावा ।
कत्थ मए लहियव्वा दूरीकयभागधेज्जेणं[3] ॥ ९९९
हा हा ! पाविट्ठो हं जेण तहा भीसणम्मि दीवम्मि ।
एगागिणी अणाहा मुक्का निक्करुणं[4]चित्तेण ॥ १०००
महविरहभीरुहियया मए समं[5] पत्थिया किर वराई[6] ।
सो मे कओ महंतो ही सरणाओ भयं जायं ॥' १००१
एवं विचिंतयंतो संभरियासमसिणेहसब्भावो ।
सहस त्ति मेइणीए मुच्छाविहलंघलो पडिओ ॥ १००२
तक्खणमिलिएहिँ सबंधवेहिँ सहस त्ति सिसिरनीरेण ।
जलसिंचणपवणाओ किच्छेण सचेयणो होउं ॥ १००३
वारं वारं हत्थं गच्छइ मुच्छं नियच्छमाणाणं ।
नीसेससज्जणाणं हाहारवभरियभवणाणं ॥ १००४
नाइक्खइ नियदुक्खं पुच्छंताणं पि निद्धबंधूणं ।
मोणवएणं चेट्ठइ एयं हिययम्मि झायंतो ॥ १००५
'अप्पा हु अप्पण चिय लज्जइ सरिएहिँ जेहिँ कम्मेहिं ।
कह ताणि बंधवाणं पुरओ तीरंति अक्खाउं ॥' १००६

---

१ कोहग्ग°. २ आन्नासु. ३ °धेजाण°. ४ निक्करण°. ५ सगं. ६ वराई.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाहरिया य सवेगं संपत्ता तो पवत्तिणी भणइ ।
'किमियमयंडे चंडं[1] सावग ! वसणं समुप्पन्नं ॥' १००७
काऊण य एगंतं पभणइ – 'भयवइ ! उवट्ठियं मरणं ।
देहि पसायं काउं पज्जंतालोयणं मज्झ ॥ १००८
[वो]त्तुमजुत्तं अन्नस्स जं पुरो नियय दुक्कयमणज्जं[2] ।
तं पि गुरू[प. ३२ B]णं नियमा साहिज्जइ मरणसमयम्मि ॥' १००९
इय भणियम्मि निसन्ना पवत्तिणी साहियं तओ तेण ।
सयलं जहट्ठियं जाव नम्मया उज्झिया सुत्ता ॥ १०१०
'सरमंडलसज्झायं अज्ज सुणंतस्स मज्झ संभरियं ।
सा वि पढंती एवं विन्नायं तेण तं चिंधं ॥ १०११
अज्जे ! जाणामि अहं असमिक्खिययारओ[3] महापावो ।
दुक्कडमिणं सरंतो पाणे धरिउं न याएमि ॥ १०१२
ता देहि अणसणं मे कन्नेसु जवेसु जिणनमोकारं ।
मा तुज्झ पसायाओ[4] पाविज्ज पुणो वि जिणधम्मं ॥' १०१३
भणई[5] पवत्तिणी तो – 'वालुल्लावेहिँ सावग ! इमेहिं ।
सिज्झइ न किंचि कज्जं परमत्थवियारणं कुणसु ॥ १०१४
न हि[6] मरणमित्तसज्झं एयं तुह संतियं महापावं ।
सुज्झइ नियमा तवसंजमेहिँ जिणवीरभणिएहिं ॥ १०१५

अन्नं च –

नूणं पुराणमसुहं कम्ममुइन्नं तया तुह पियाए ।
तव्वसओ से नूणं समुट्ठिओऽलिंजरे अग्गी ॥ १०१६
पंडिय ! सुसिक्खिओ तं गुरुजणउवएससा(भा ?)वियमणो हं(य) ।
नूणं तीए कम्मेहिँ चोइओ निद्दओ जाओ ॥ १०१७
किं बहुणा भो सावग ! उव्वेयं मा करेसु तव्विसए ।
दुकयसुकयं च नियमं भोत्तव्वं सव्वजीवेहिं ॥' १०१८
भणइ महेसरदत्तो – 'भगवइ ! तं भणसि अवितहं सव्वं ।
तह वि न तरामि धरिउं पाणे तीए अदिट्ठाए ॥' १०१९
विन्नायनिच्छया तो ईसि हसंती पवित्तिणी भणइ ।
'उवलक्खेसि न दिट्ठं तहावि तुह इत्तिओ नेहो ॥ १०२०
नणु होमि नम्मया हं न मया निरुवक्कमाउया नूणं ।
सावय ! तुज्झ पसाया सामन्नसिरी मए पत्ता ॥ १०२१

१ चंडे. २ °मणज्जा. ३ °यारओ. ४ पसायाओ. ५ भणइ. ६ नट्ठि.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुमए अणुज्झियाए कुडुंबवावारवावडमणाए।
को जाणइ होज्ज न वा दुलहा जिणभणियपव्वज्जा ॥' १०२२

तओ एवं सुणमाणो[1] महेसरदत्तो असंभवं संभव[ति] त्ति विम्हिओ, एसा सा जीवइ[2] त्ति हरिसिओ, कहमेयाए[3] मुहं दंसेमि[4] त्ति लज्जिओ, सुदरं वयमणुपालेइ त्ति निव्वुयमणो,[5] एवं संकिन्नरसमणुहवंतो महियलनिहित्तजाणुपाणिभालवट्टो पणमिऊण भणिउमारद्धो– 'तुह सज्झाय[माय]न्नमाणस्स ठियं मम मणे एरिसो नज्जइ नम्मयसुंदरिसद्दो, किं तु नियदुच्चेट्ठियवससंभावियावस्समरणस्स पणट्ठा जीवियसंभावणा, तो सुट्ठु कयं जमज्ज मरमाणस्स जीवियं दिन्नं, खमाहि य मे पाविट्ठजिट्ठस्स दुट्ठचिट्ठियं।' एवं पुणो पुणो पणामपुव्वं खामिंतो भणिओ पवत्तिणीए– 'सावय! कुओ भावियजिणागमतत्ताणं अखमासंभवो। तइया वि मएँ[6] सकम्मफलमेव संभावियं, कहियं च मे भगवया सुहत्थिसूरिणा तस्स दुरंतवसणस्स कारणं। ता मा विचित्तो[7] भवाहि।' पुणरवि महेसरदत्तेण भणिया– 'साहेहं[8] मे अणुग्गहं काऊ[प. ३३ A]ण मए विमुक्काए तुमए केरिसं दुक्खमणुभूयं? कहं वा तओ दीवाओ समुद्दाओ वा निक्खंता सि त्ति।'

वुत्तं पवित्तिणीए– 'मासेहिं सत्त संठिया तत्थ।
रुन्नाइँ पलवियाइं कित्तियमेत्ताइँ सुमरामि॥ १०२३

अह कह वि दिव्वजोगा संपत्तो मज्झ पित्तिओ तत्थ।
तेण य पयाणुसारा[9] गवेसमाणेण दिट्ठा हं॥' १०२४

इच्चाइ सवुत्तंतो रिसिदत्तापमुहं[10]परियणं[11]जुयस्स।
सिट्ठो पवत्तिणीए जा पत्ता कूवचंद्रम्मि[12]॥ १०२५

सोऊण सद्धलोगो जाओ दुक्खाउरो दढं[13] तत्थ।
रिसिदत्ता वि परुन्ना[14] गणणीकंठग्गहं काउं॥ १०२६

झ त्ति महेसरदत्ते पडिया सयणाण नीरसा दिट्ठी।
लज्जोणामियसीसो सो वि ठिओ गरुयअणुतावो॥ १०२७

वज्जरइ तओ अज्जा– 'सव्वे जीवा सहंति दुक्खाइं।
पुव्वज्जियपाववसा निमित्तमित्तं पुणो वज्झं[15]॥ १०२८

जरसीसवेयणाओ भवंति जीवस्स पुव्वकम्मेहिं।
अब्भक्खाणं [········] वब्भाणं तेलमाईणं॥ १०२९

---

१ सुणगाणो. २ जीवमइ. ३ °मेया २. ४ दंसेगि. ५ निव्वुयामणो. ६ सए. ७ विचित्ते. ८ साहेहे. ९ °साराओ. १० रिसिदत्ता २ सुह°. ११ °परियणु°. १२ कवचंद्रम्मि. १३ दुक्खाओरो. १४ यरुयत्ता. १५ वज्झं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जायइ धणस्स नासो जणस्स पुव्वंतरायदोसाओ ।
तेण णरिंदाईणं रूसइ लोगो मुहा[1] सव्वो ॥ १०३०
अन्नाणंधा जीवा करेंति कूराइँ ताइँ कम्माइं ।
नासंतरुयंतस्स व अणुमग्गं जाइँ धावंति ॥ १०३१
भो भो ! महाणुभावा[2] वीरजिणिंदस्स सासणे लीणा ।
काऊण समणधम्मं दुक्खाण जलंजलिं देह ॥' १०३२
पभणइ महेसरो तं – 'जं पत्तं बब्बरे तुमे दुक्खं ।
तं सोउं पि न सक्को किं पुण सोढुं जणो अन्नो ॥ १०३३
तस्स वि अहं निमित्तं हा ! धिद्धी निग्घिणो महापावो ।
पाविज्ज किं कयाई सोहिं बोहिं च जिणधम्मे ॥' १०३४
पभणइ पवत्तिणी तं – 'वारं वारं किमेवमुल्लवसि ? ।
नत्थि असज्झं किंचि वि सावग ! जिणभणियदिक्खाए ॥ १०३५
सुव्वइ दढप्पहारी चोरो अच्चंतकूरकम्मो वि ।
सामन्नाओ पत्तो सुद्धिं सिद्धिं च सुकयाओ ॥ १०३६
एही सुहत्थिसूरी निम्मलसुयनाणलोयणो एत्थ ।
नीसेसपाणिपरिणामजाणओ तस्समीवम्मि ॥ १०३७
आलोइऊण पावं पालिज्जसु निम्मलं समणधम्मं ।
सोहिउवाओ एसो मा धरसु मणम्मि संदेहं ॥ १०३८
भुत्ता तुमए भोगा मुणियं संसारवासनेगुन्नं[3] ।
भुत्ते पत्तलिचाओ संपइ गिहवासचाओ ते ॥' १०३९
रिसिदत्ता वि रुयंती वुत्ता – 'जइ वल्लहा अहं अंबे ! ।
लग्गसु[4] ममाणुमग्गं मग्गे णेव्वाणनयरस्स ॥ १०४०
अन्नह रुन्नं सुन्नं नेहो वि हु कित्तिमो व पडिहाइ ।
जलणम्मि वसइ लोगो सद्धिं[5] खलु वल्लहजणेणं ॥ १०४१
तुम्हाणमेव बोहणनिमित्तमहमागया इह पुरम्मि ।
सुव्वइ सत्थेसु जओ इट्ठं धम्मम्मि जोइज्जा ॥' १०४२
नम्मयपवत्तिणीए पवत्तियाइं दुवे वि वयगहणे ।
सो च्चिय सच्चो मित्तो जो पावाओ नियत्तेइ ॥ १०४३

[सुहत्थिसूरिकया धम्मदेसणा

इत्थंतरम्मि पत्तो सुहत्थिसू[प. ३३ B]री महामुणी तत्थ ।
आवासिओ य रम्मे उज्जाणे नंदणवणम्मि ॥ १०४४

---

१ सुहा. २ °भावो. ३ °नेगुत्तं. ४ लमासु. ५ सिद्धिं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाओ नयराणंदो पए पए मन्नए जणसमूहो ।
नूणं इमम्मि नयरे कल्लाणमुवट्ठियं किं पि ॥ १०४५
जं एसो सुरमहिओ संपइरायस्स वल्लहो[1] भयवं ।
संपत्तो अज्ज इहं जणकइरवसंडनिसिनाहो ॥ १०४६
रायाइ नमोसज्जो नियपयउचिएणं[2] सयलविहवेणं[3] ।
अभिवंदिउं मुणिंदं निक्खंतो झ त्ति नयराओ ॥ १०४७
अभिवंदिऊण विहिणा मुणिनाहं[4] साहुसत्थपरियरियं[5] ।
उवविट्ठो सयलजणो नियनियउचिएसु ठाणेसु ॥ १०४८
पारद्धा धम्मकहा नवजलहरगहिरमहुरसद्देण ।
सव्वेसिं सत्ताणं अणुग्गहत्थं अइमहत्था ॥ १०४९
'माणुस्स कम्मभूमी आरियदेसो[6] कुलम्मि उप्पत्ती ।
रूवं बलमारोगं(ग्गं) सुदीहरं आउयं बुद्धी ॥ १०५०
सुहगुरुजोगो बोही[7] सद्धा[8] चारित्तधम्मपडिवत्ती ।
दुक्खेण जए लब्भइ एसा कल्लाणरिंछोली ॥ १०५१
एगिंदिया[9] अणंता मरिउं मरिउं पुणो वि तत्थेव ।
उववज्जंति वराया कालमणंतं सकम्मेहिं ॥ १०५२
उव्वट्टिऊणं[10] विरला बिय[11]तियचउरिंदिएसु गच्छंति ।
तत्थ य पुणो पुणो वि य मरंति जायंति बहुकालं ॥ १०५३
पंचिंदिया[12] वि होउं जलथलयरखयरविविहजोणीसु ।
चिट्ठंति चिरं कालं जंति पुणो पुरिसजोणीसु ॥ १०५४
विरला केइ नरत्तं लहंति तत्थ वि अणारिया बहवे ।
तत्तो वि हु विरलाणं आरियदेसे हवइ जम्मो ॥ १०५५
आरियदेसे वि ठिओ धीवर[13]चंडाललुद्धयाईसु ।
कुच्छियकुलेसु जाया नामं न मुणंति धम्मस्स ॥ १०५६
उत्तमकुलेसु जाया काला कुंटा य पंगुला[14] अंधा ।
जीवा अणिट्ठरूवा दिक्खं न लहंति जिणभणियं ॥ १०५७
तवसंजमबलवियला धम्मं न कुणंति रूवकलिया वि ।
बलवंताण वि रोगाउराण धम्मे कओ सत्ती ? ॥ १०५८

---

१ दल्लहो. २ ओचिएण. ३ भयलविहतेण. ४ °नाहो. ५ माहु°. ६ °दोसा. ७ बोहा. ८ सुधा. ९ एगंदिया. १० उवट्टिऊण. ११ विय°. १२ पंचंदिया. १३ चीवर°. १४ पुंगुला.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सव्वगुणसंगया वि हु बालत्ते केइ जंति पंचत्तं[1] ।
अन्ने नवतारुन्ने तेसिं पि हु दुल्लहो धम्मो ॥ १०५९
चिरजीवीण वि बुद्धी धम्मे विरलाण होइ केसिंचि ।
गुरुसंपओगविरहा बहूण न हु साफलं होइ ॥ १०६०
धम्मे मइं[2] कुणंता अन्नाणपासंडिगोयरावडिया ।
भामिज्जंति अणेगे जह चक्कं कुंभयारेण ॥ १०६१
कारिज्जंति अधम्मं बाला धुत्तेहिँ धम्मबुद्धीए ।
भोइज्जंति विसन्नं नूणं चिरजीवियं[3]निमित्तं ॥ १०६२
गुरुणा वि कहिज्जंते धम्मे बोहिं न केइ पावंति ।
चिक्कणनाणावरणस्स कम्मणो[4] हंदि उदएणं[5] ॥ १०६३
बुद्धे वि धम्मरूवे न सद्दहाणं बहूण संभवइ ।
मिच्छत्तमोहणिज्जे तिव्वे उदयम्मि संपत्ते ॥ १०६४
सद्दहमाणा वि नरा धम्मं जिणदेसियं विगयसंगं ।
न कुणंति समणधम्मं [प. ३४ A] गिद्धा गिहदेसविसएसु ॥ १०६५
दुलहं गुणसंदोहं लद्धं पि हु ते पमायदोसेण ।
हारिंति मंदभग्गा धमियं कणयं व फुक्काए ॥ १०६६
जह सागरम्मि पडिओ कीलयकज्जेणँ[6] भिंदई नावं ।
इय विसयकए जीवो हारइ पत्तं पि सामग्गिं ॥ १०६७
जह कोद्दवाण छित्ते छित्तुं कप्पूरतरुवरसमूहं ।
वाडी करेइ एवं भोगत्थी चयइ जो धम्मं ॥ १०६८
कहकह वि दुक्खपत्तं कप्पतरुं कोई पत्थइ बोरे ।
पत्ते पुव्वगुणोहे एवं विसएसु जो रमइ ॥ १०६९
अत्थो अणत्थमूलं बंधुजणो बंधणं विसं विसया ।
पसमसुहामयभरिओ संजमरयणायरो एगो ॥ १०७०
जरमरणवारिपूरे विओगरोगाइगाहगहणम्मि ।
मा पडह भवसमुद्दे चरित्तपोयं[7] समारुहह ॥’ १०७१
देसणमिमं सुणित्ता संबुद्धा तत्थ पाणिणो बहवे ।
संसारभउव्विग्गा जाया समणा समियमोहा ॥ १०७२

[महेसरदत्तस्स जणणीसहियस्स चरणपडिवत्ती]

सो वि महेसरदत्तो संपावियभावचरणपरिणामो ।
आलोइयदुच्चरिओ जणणीसहिओ ठिओ चरणे ॥ १०७३

---

१ पंचत्ती. २ मयं. ३ °जीवीय°. ४ कम्मुणो. ५ आदएण. ६ कज्जेण. ७ °पोह.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संजाया कयकिच्चा पवत्तिणी णाणचरणलाभेण ।
संवेगभावियाइं तिन्नि वि तप्पंति तवमुग्गं ॥ १०७४
छट्ठाओ अट्ठमाओ तह य दसमओ मासओ अद्धमासा
अंतं पंतं [च रुक्खं] तणुजवणकए किं पि भुंजंति भत्तं ।
सीयं उन्हं च तन्हं खुहमवि बहुसो भावसारं[1] सहंते
सोसेउं पावपंकं गुरुपयकमले भिंगरूवं[2] वहंता ॥ १०७५
अट्टेण रुद्देण य दूरियाइं धम्मेण सुक्केण य संजुयाइं ।
सुत्तेण अत्थेण य ताणि नूणं भावेंति अप्पाणमहोनिसिं पि ॥ १०७६
एवं विहरंताइं कयाइँ पत्ताइँ नम्मयपुरम्मि ।
परितुट्ठो बंधुजणो सव्वो भणिउं समाढत्तो ॥ १०७७
'धन्नाइं[3] पुन्नाइं[4] तुब्भे तुम्हाण जीवियं सहलं ।
सामन्नमणन्नसमं जाइं पालेह एयं ति ॥ १०७८
अम्ह कुले जायाणं जुत्तं एवंविहं अणुट्ठाणं ।
सयलो वि अम्ह वंसो अलंकिओ नूण तुब्भेहिं ॥ १०७९
अइधन्ना सि पवत्तिणि ! रिसिदत्ता ठाविया जओ तुमए ।
पुव्वं सावगधम्मे इन्हिं पुण दुक्करे चरणे ॥' १०८०
एवमुववूहिया वंदिया य सयणेहिँ हट्ठतुट्ठेहिं ।
सेसो वि नयरलोगो जाओ तद्दंसणे मुइओ ॥ १०८१
तीए तत्थ ठियाए जाओ धम्मुज्जुओ सयललोगो ।
पव्वाविओ य विहिणा सयणजणो सेसलोगो वि ॥ १०८२
ता जत्थ जत्थ विहरइ सुभगआएज्जकम्मजोगेण ।
पडिबोहइ भव्वजणं कुमुयज(व)णं चंदलेह व्व ॥ १०८३
पावेइ केइ चरणं अन्ने ठावेइ देसविरयम्मि ।
गाहेइ केइ सम्मं उप्पायइ बोहिबीयाइं ॥ १०८४
सासणमुब्भासंती[5] विहरइ सा जत्थ जत्थ देसम्मि ।
जायइ लोगो गुणगहणवावडो तत्थ सव्वत्थ [प. ३४ B] ॥ १०८५
अह अन्नया कयाई एगारसअंगधारिणी होउं ।
तवनियमसोसियंगी रिसिदत्ता गुरुअणुन्नाया ॥ १०८६
आलोइयपडिकंता सम्मं संघस्स खामणं काउं ।
भत्तपरिन्नपइन्नामंदरसिहरं समारूढा ॥ १०८७
चउसरणगमणवु(दु?)क्कडगरिहासुकडाण(णु)मोयणं काउं ।
झायंती य सुणंती पंचनमोकारसविरामं ॥ १०८८

---

१ °सार. २ °रूव. ३ धन्नायं. ४ पुन्नायं. ५ °संता.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असुइवसमंससोणियचम्मट्ठिण्हा[1]रुवारवीभत्थं ।
मोत्तूण तणुं तणमिव उववन्नो मासभत्तंते ॥ १०८९
कप्पे सणंकुमारे अइसयरमणेज्जसुरविमाणम्मि ।
सुरविसरकयाणंदो सुरिंदसामाणिओ देवो ॥ १०९०
कडयमणिमउडकुंडलतुडियाभरणेहि भूसियावयवो ।
हारद्धहारवत्थो(च्छो) दीहररेहंतवणमालो ॥ १०९१
विन्नायपुव्वजम्मो काउं सव्वाइँ देवकिच्चाइं ।
अच्छरगणमज्झगओ विलसइ एगंतसच्छंदो ॥ १०९२
एव महेसरदत्तो साहू साहूण सन्निहाणेण ।
भत्तपरिन्नाणसणं काऊणाराहिऊणं तो ॥ १०९३
तत्थेव देवलोए सुरवइसामाणियत्तमणुपत्तो ।
अवगयचारित्तफलो विलसइ सम्मत्तथिर[2]चित्तो ॥ १०९४

[नम्मयासुंदरिए सग्गगमणं]

कालेण कालकालं पवत्तिणी नम्मया वि नाऊण ।
उवरियसव्वसड्ढा[3] सयलं संघं खमावित्ता ॥ १०९५
समणीण सावियाण य विसेसओ वागरेइ उवएसं ।
'आसायणं मुणीणं मणसा वि हु मा करेज्जाह ॥ १०९६
जो हीलइ साहुजणं स हीलणिज्जो भवे भवे होइ ।
अक्कोसंतो वहबंधणाइ पावेइ पइजम्मं ॥ १०९७
जो पुण देइ पहारं समत्तजियबंधवाण साहूण ।
वज्जग्गिघोरजालावलीसु सो पच्चए नरए ॥ १०९८
तत्थेव अत्थहाणी[4] होइ मुणीणं अवन्नवायाओ ।
इट्ठजणविप्पओगो [अ]कालमरणं च जीवाणं ॥ १०९९
अहव असज्झो देहे संजायइ कोइ दारुणो वाही ।
हसिया वि रोवियव्वे होंति निमित्तं न संदेहो ॥' ११००
एवं भणिऊण फुडं कहेइ नीसेसमप्पणो चरियं ।
जेण निसुएण जाओ संवेगो समणसड्ढीणं ॥ ११०१
ताहे भत्तपरिन्नं सम्मं पालेइ मासपरिमाणं ।
जीवियमरणासंसप्पओगपरिवज्जियमईया ॥ ११०२
चइऊण तणुकरंकं पत्ता तत्थेव तइयकप्पम्मि ।
सुरनाहसमाणत्तं परियरआयप्पमाणेहिं ॥ ११०३

---

१ °ट्ठियण्हारु°. २ °चिर°. ३ °सड्ढो. ४ °दाणी.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तियसमहुयरालीलीढपायारविंदो[1] मणिकणयविचित्ताकल्लसंपत्तसोहो ।
पणयतियसरामारामणाखित्तचित्तो न हि मुणइ स कालं जंतमचंतदीहं ॥ ११०४

गीयं गंधव्वियाणं सुइसुहजणयं नूण तालाणुविद्धं
नट्टं देवंगणाणं[2] नयणमणहरं अंगहाराभिरामं ।
गंधो कप्पूर[प. ३५ A]पारीपरिमलवहलो घाणसंतोसकारी
फासो देवंगदेवीतणुसमणुगओ देहसोक्खस्स हेऊ ॥ ११०५

सोक्खं एवंपयारं ते संवेयंता निरंतरं ।
सत्तसागरमाणं ते कालं पालित्तु आउयं ॥ ११०६

तत्तो चइत्ता सुहसेसजुत्ता कुले पहाणम्मि महाविदेहे ।
अणुत्तरे साहुगुणे धरित्ता जाहिंति मोक्खं धुयकम्मकोसं[3] ॥ ११०७

चरियमणहमेयं नम्मयासुंदरीए अबुहजणहियत्थं पायडत्थं पसत्थं ।
भणियमसुहबुद्धीनासणत्थं जणाणं परहियरसिएहिं संतिसूरिप्पहूहिं ॥ ११०८

धम्मकहा पुण एसा जम्हा इह साहिओ इमो धम्मो ।
सम्मत्ते जइयव्वं सिवसुहसंपत्तिहेउम्मि ॥ ११०९

वयभंगस्स निमित्तं उवसग्गो नो मुणीण कायव्वो ।
पालेयव्वं सीलं पाणच्चाए वि जत्तेण ॥ १११०

चइऊण गेहवासं कायव्वो संजमो सुपरिसुद्धो ।
नम्मयसुंदरिचरियं निरंतरं संभरंतेहिं ॥ ११११

विविहपयसंपयाए कहाइ जइ किंचि ऊणमहियं वा ।
भणियं पमायओ वा न संसओ तत्थ कायव्वो ॥ १११२

एसा य कहा कहिया महिंदसूरीहिँ नियय[4]सीसेहिं ।
अब्भत्थिएहि न उणो[5] पंडिच्चपयडणनिमित्तं ॥ १११३

जो लिहइ जो लिहावइ वाएइ कहेइ सुणइ वा सम्मं ।
तेसिं पवयणदेवी करेउ रक्खं पयत्तेण ॥ १११४

संतिं[6] करेउ संती संतियरो सयलजीवलोयस्स ।
तह बंभसंतिजक्खो कयरक्खो समणसंघस्स ॥ १११५

निम्माया एस कहा विक्कमसंवच्छरे वइक्कंते ।
एक्कारसहिं सएहिँ सत्तासीएहिँ वरिसाणं ॥ १११६

आसोयासियएगारसीए वारम्मि दिवसनाहस्स ।
लिहिया पढमायरिसे मुणिणा गणिसीलचंदेण ॥ १११७

॥ श्रीः ॥ इति नर्मदासुन्दरीकथा समाप्ता ॥

॥ ग्रंथाग्रं १७५० ॥

---

१ 'लीढे°. २ °गुणाण°. ३ °कोस. ४ मियय°. ५ उणे. ६ संती.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिरीदेवचंदसूरिकया

नम्मयासुंदरीकहा

(मूलशुद्धिप्रकरणवृत्त्यन्तर्ग्रथिता)

एत्थेव जंबुदीवे[1] दीवे भरहद्धमज्झखंडम्मि ।
अत्थि गुणोहनिहाणं[2] वरनयरं वद्धमाणं ति ॥ १
तस्स पहू सिरिमोरियवंसप्पभवो कुणालअंगरुहो ।
तिक्खंडपुहई[3]सामी अत्थि निवो संपई नाम ॥ २
अन्नो वि तत्थ नीसेसगुणमओ उसभसेणसत्थाहो ।
अत्थि जिणधम्मनिरओ वीरमई तस्स वरभज्जा ॥ ३
तीसे य दुण्णि[4] पुत्ता सहदेवो तह य वीरदासो[5] त्ति ।
रिसिदत्ता वि य[6] धूया पभूयनारीयणपहाणा ॥ ४
तीसे य रूवजोव्वण[7]लुद्धा वरया अयंति[8] रिद्धिजुया ।
न य देइ ताणं[9] जणओ मिच्छादिट्ठि[10] त्ति काऊण ॥ ५
भणई[11]–'दरिद्दजुओ वि हु रूवविहीणो[12] वि जिणवरमयम्मि ।
जो होही निकंपो[13] दायव्वा तस्स मे एसा ॥' ६
एवं[14] सुणिय पइण्णं[15] समागओ कूववंद्र[16]नयराओ ।
नामेण रुद्ददत्तो महेसरो तत्थ सत्थेण ॥ ७
अह संकामिय भंडं नियमित्तकुबेरदत्तगेहम्मि ।
तव्वीहीएँ निविट्ठो[17] जावऽच्छइ ताव नयरपहे[18] ॥ ८
नियसहीयणजुत्तं निग्गच्छंतं[19] निएइ रिसिदत्तं ।
तं दट्ठूणं एसो विद्धो मयणस्स बाणेहिं ॥ ९
'का मित्त ! इमा कण्णा[20] ?' पुट्ठे सो कहइ तस्सरूवं तु ।
तत्तो तल्लोहेणं गच्छइ सो सूरिपासम्मि ॥ १०

---

१ L. °द्दीवे. २ L गुणोहनिवासं. A B गुणेहनिहाणं. C D गुणाण निवासं°. ३ L °डभरहसामी. ४ L दुन्नि. ५ L °दासु त्ति. ६ L °दत्ता वरधूया. ७ L °जुव्वण°. ८ L अइंति. ९ L नयरिइ ताणं. १० A B मिच्छावाइ त्ति. ११ L पभणइ. १२ L °विहूणो. १३ L निक्कंप्पो. १४ A B एयं. १५ L सुणिय पईवं. १६ L कूवचंद°. १७ L तव्वीहीए निमित्तो-विट्ठो. A B निव्विट्ठो. १८ L मयरमहे. १९ L नियच्छंती. २० L कन्ना.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाओ य कवडसड्ढो जिणगुरु[1]पूयाइएसु बहुदव्वं[2] ।
वियरइ[3], अहवा पुरिसो रागंधो किं च न हु कुज्जा ॥ ११

तो दट्ठुं तच्चरियं अच्चंत्थं[4] रंजिओ उसभसेणो ।
सयमेव देइ कण्णं[5] वीवाहं कुणइ रिद्धीएँ[6] ॥ १२

भुंजंतो वरभोए चिट्ठइ जा तत्थ रुद्ददत्तो सो ।
ताँ[7] पिउणा से लेहो आहवणत्थं तु पट्ठविओ ॥ १३

तब्भावत्थं नाउं[8] ससुराओ मोइऊण अप्पाणं ।
रिसिदत्ताएँ [9]सहिओ संपत्तो कूववंद्रम्मि[10] ॥ १४

[11]अभिनंदिओ [12]पिइ-माईएहिँ चिट्ठइ तहिं सुहेण सो ।
कवडगहिय त्ति दूरं[13] दूरेणं मुयइ जिणधम्मं ॥ १५

रिसिदत्ता वि हु मिच्छत्तसंगदोसेण दूसिया अहियं ।
मोत्तूणं[14] जिणधम्मं धणियं[15] निद्धंधसा जाया ॥ १६

तं नाउं जणएहिँ वि[16] आलावाई विवज्जियं[17] सव्वं ।
जोयणदुगमित्तं पि हु संजायं जल[18]हिपारं च (व ?) ॥ १७

मयमत्ताणं ताणं विसयपसत्ताण अन्नया जाओ ।
रिसिदत्ताए पुत्तो रूवेणं सुर[19]कुमारो व्व ॥ १८

तस्स महेसरदत्तो [20]ठवियं नामं गुरूहिँ समयम्मि ।
कालेण परिणयवओ[21] उद्दामं जोव्वणं[22] पत्तो ॥ १९

एत्तो[23] य वड्ढ[24]माणे पुरम्मि रिसिद[25]त्तजिट्ठभाउस्स[26] ।
सहदेवस्स उ भज्जा सुंदरिनामा अणन्नसमा ॥ २०

जिणधम्मरया निच्चं भुंजंती नियपियेण[27] सह भोए ।
गब्भवई संजाया उप्पज्जइ डोहलो तत्तो[28] ॥ २१

जाणामि जइ पिएणं समयं मज्जामि नम्मयासलिले ।
बहुपरिवारसमग्गा[29] तम्मि अपुज्जंतए तत्तो ॥ २२

---

१ A B जिणमुणिपूया°. २ L बहुदत्तं. ३ L वयरइ. ४ L अच्चंतं. ५ L कन्नं. ६ L रिद्धिए. ७ C D तो. ८ L नाओ. ९ L °त्ताए समेओ. १० L कूवचंडम्मि. ११ L अभिनिंदिओ १२ L पियमाई°. १३ L °गहिवं ति काउं दूरेणं १४ L मुत्तूणं. १५ L धणियम्मि निद्धं°. १६ L जणएहिं आला°. १७ L विसज्जियं. १८ L कलहि°. १९ A B सिरिकुमारो. २० L °दत्तो उच्चियं. २१ A B °णयकलो. २२ L जुव्वणं. २३ C D तत्तो. २४ L वट्टमाणे. २५ A B सिरिदत्त. २६ L °भायस्स. २७ L °पिएण. २८ L तीए. २९ L °वारसमेया तम्मि.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कंठग्गयपाणी[1] सा जाया अच्चंतदुब्बले[2]सरीरा।
चिंतावन्ना चिट्ठइ तं दट्ठुं भणइ सहदेवो॥ २३

'किं तुह पिए! न पुज्जइ जं जायाँ[3] एरिसा[4] सरीरेण?।'
भणइ इमा—'मह पिययम! मणम्मि नणु डोहलो गरुओ॥ २४

जाओ गब्भवसेणं जइ किरे[5] मज्जामि नम्मयाँ[6]सलिले।
तुमए सह'. तो एसो आसासियँ[7] कुणइ सामग्गिं॥ २५

बहुवणिउत्त[8]समेओ गिण्हइं[9] नाणाविहाइँ पणियाइं।
काऊण महासत्थं चलिओ अह सोहणदिणम्मि॥ २६

अणवरयपयाणेहिं वियरंतो[10] अत्थवित्थरं पत्तो।
नम्मयँ[11]नईएँ तीरे आवासइ सोहणपएसे॥ २७

दट्ठूण नम्मयं तो वहुतरलतरंगरेहिँरा[12]वत्तं।
अइगरुयविभूईएँ[13] पियाएँ[14] सह मज्जणं कुणइ॥ २८

संपुण्णे डोहलएँ[15] तत्थेव य नम्मयापुरं नाम।
रम्मनयरं[16] निवेसिय कारावइ वरजिणाययणं॥ २९

तं सोउं सव्वत्तो आगच्छइ तत्थ भूरि वणिलोगो[17]।
जायइ[18] य महालाभो पसिद्धमेवं[19] पुरं जातं॥ ३०

अह सुंदरी वि तत्थेव वरपुरे नियगिहे[20] निवसमाणी।
पसवइ पसत्थदिवसे वरकन्नं तीएँ सहदेवो॥ ३१

कारइ वद्धावणयं परितुट्ठो जेट्ठपुत्तजम्मे[21] व।
विहियं च तीएँ नामं जइ नम्मयसुंदरी एसा॥ ३२

कमसो परिवड्ढंती जाया नीसेसवरकलाकुसला।
सरमंडलं च सव्वं विन्नायं अह विसेसेण॥ ३३

पत्ता य जुव्वणं सा असेसतरुणयणमणविमोहणयं।
तत्तो परा पसिद्धी संजाया तीएँ सव्वत्थ॥ ३४

सोऊण तीएँ रूवं रिसिदत्ता दुक्खिया विचिंतेइ।
'कह मह पुत्तस्स इमा होही भज्जा वरा कण्णा?॥ ३५

---

१ L कंठगहणप्पणा. २ L °दुबल°. ३ A B °जाइ संजाया. ४ L एरिसी सरीरेण. ५ L किरि. ६ L नमया°. ७ L आसासि कुण°. A B आसासइ. ८ L °वणिओत्तिसमेओ. ९ C D गिण्हिय. १० L विलसंतो. ११ L नम्मया°. १२ L °रेहिंरा°. १३ L °विभूइए. १४ C D पिएण. L पियाइ. १५ L संपुन्नडोहलाए. १६ L °नयरम्मिवे°. १७ A B वणलोगो°. १८ L जायइ महा°. १९ C D °द्धमेयं. २० L निवपुरे निवस°. २१ L जिट्ठपुत्तिजम्मेण.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हा हा ! अहं अपुण्णा[1] विवज्जिया जा समत्थ[2]सयणेहिं ।
अहवा कित्तियमेत्तं[3] एयं परिचत्तधम्माए ॥ ३६

आलावो वि हु जेहिं परिचत्तो ते कहं महं कण्णं[4] ।
दिंति' इय माणसेणं दुक्खेणं रोवए एसा ॥ ३७

तं दट्ठूणं भत्ता पुच्छइ[5]–'किं पिययमे ! तुहं दुक्खं ।
साहीणे वि ममम्मी[6] भणसु तयं[7] जेण अवणेमि ॥' ३८

तो[8] सा कहेइ सव्वं तं सोऊणं पयंपई पुत्तो ।
'ताय'! विसज्जेह[9] ममं[10] जेणाहं तत्थ वच्चामि ॥ ३९

विणयाइएहिं[11] सव्वे[12] आराहित्ता मए इमा कण्णा[13] ।
परिणेयव्वाऽवस्सं कायव्वो जणणिसंतोसो ॥' ४०

तो विविहपणियभंडेहिं[14] पूरियं अइमहंतयं सत्थं[15] ।
काऊणं जणएणं विसज्जिओ नम्मयानयरे ॥ ४१

पत्तो य तत्थ बाहिं सत्थस्स निवेसणं करेऊणं ।
मायामहस्स गेहं पविसइ सुपसत्थदियहम्मि ॥ ४२

मायामहमाईएँ[16] सयणे दट्ठूण हरिसिओ[17] धणियं ।
गेहागयं ति लोगड्डिईइ[18] गोरविहिं[19] इयरे वि[20] ॥ ४३

विणयाइएहिं[21] सव्वे तत्थ वसंतोऽणुरंजए[22] एसो ।
मग्गइ य आयरेणं तं कण्णं[23] ते वि नो तस्स ॥ ४४

दिंति तओ तेण इमे अच्चत्थं[24] जाइया ततो[25] ते वि ।
कारविय विविहसवहे[26] दिंति तयं अन्नदियहम्मि ॥ ४५

जाए धम्मवियारे कण्णावयणेहिं[27] साहुपडिबुद्धो ।
सद्धम्मभावियमई [28]जातो अह सावगो[29] परमो ॥ ४६

तो तुट्ठा जणयाई पाणिग्गहणं[30] विहीएँ कारेंति[31] ।
भुंजइ विसिट्ठभोए तीए समं धम्मकयचित्तो ॥ ४७

---

१ L अपुन्ना. २ L समत्त°. ३ L °मित्तं. ४ L कन्नं. ५ L पिच्छइ. ६ AB पइम्मी. ७ L °सु तुमं जे°. ८ L सो य विस°. ९ CD विसज्जेहि. L विसज्जेसि. १० L समं. ११ L विणयाईहिं. १२ A B सव्वं. L सव्वेहिं. १३ L कन्ना. १४ L सो विविवहरणियभंडेहिं. १५ L सव्वं. १६ L मायमहमाइए. १७ A B हरसिओ. १८ L लोगहिईए. १९ A B गोरवहिं. C D गोरवएहिं. २० A B इयरेहिं. २१ L विणयाईहिं. २२ L णुरंजइ. २३ L कन्नं. २४ L अच्चंतं. २५ L तओ. २६ L ° सवहेहिं. २७ L कन्नासयणेहिं. २८ L सद्धमसावियमई जाओ. २९ L सावओ. ३० L °ग्गहण. ३१ L कारिंति.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केण य कालेण तओ[1] नियनयरं जाइ नम्मयासहिओ ।
जणयाईपडिवत्तीपुव्वं पविसरइ नियगेहे ॥ ४८

सासू-ससुराईणं पडिवत्तिं नम्मया विहेऊणं ।
चिट्ठइ विणएण तओ अप्पवसं कुणइ सव्वं पि ॥ ४९

सो वि महेसरदत्तो धम्मम्मि दढो कयत्थमप्पाणं ।
लाभेणं[2] तीएँ मन्नइ विलसइँ[3] नाणाविणोएहिं ॥ ५०

रिसिदत्ता वि पुणो वि हु पडिवज्जइ[4] पुव्वसेवियं धम्मं ।
अह अन्नया कयाई सा नम्मयसुंदरी हिट्ठा[5] ॥ ५१

आयरिसे नियँ[6]वयणं पलोयमाणा[7] गवक्खमारूढा ।
जा चिट्ठइ ता साहू तत्थ तले कह वि संपत्तो ॥ ५२

तो[8] तीएँ[9] पमायपरव्वसाएँ अनिरूविऊण पक्खित्ता ।
पिक्का[10] मुणिस्स सीसे तो[11] कुविओ जंपए साहू ॥ ५३

'जेणाहं पिक्काए भरिओ सव्वंगयंपि(मि)[12] सो पावो ।
पियविप्पओगदुक्खं मह वयणेणं समणुभवउ ॥ ५४

बहुविहदुक्खकिलंतो पभूयकालं तु मज्झ वयणेणं ।'
तं सोउं नम्मयँ[13]सुंदरी वि सहस त्ति संभंता ॥ ५५

उत्तरिय गवक्खाओ निंदंती अप्पयं बहुपयारं[14] ।
लूहिंत्ता[15] वत्थेणं पणमइ मुणिचलणजुयलम्मि ॥ ५६

परमेणं विणएणं खामित्ता — 'भणइ जगजियाणंद ! ।
संसारियसोक्खाइं[16] मा मह एवं पणासेहि ॥ ५७

धिद्धी ! अहं अणज्जा जीइं[17] पमायाउ एरिसं काउं ।
बहुविहदुक्खसमुद्दे खित्तो अइभीसणे अप्पा ॥ ५८

अज्जं चिय सामि ! महं सव्वाइँ[18] पणट्ठयाइँ[19] सोक्खाइं[20] ।
अज्ज अहं संजाया पाविट्ठाणं पि[21] पावयरी ॥ ५९

तुम्हारिसा महायस ! कुणंति दुहियाण उवरि कारुण्णं[22] ।
ता करुणारससायर ! भयवं ! अवणेहि महं[23] सावं ॥' ६०

---

१ L केण य कालेण इमो तओ. २ L लंभेण. ३ L विलसई. ४ A B पडिवज्जिय. ५ L दिट्ठा. ६ L °से णयवयणं. ७ L °माणी. ८ तो is not found in L. ९ L तीए य पमा°. १० L पेक्खा. ११ L ता. १२ A B सव्वंगियंपि. १३ L नम्मया°. १४ L °प्पयारं. १५ L लूहाविय वत्थे°. १६ L °सुखाइं. १७ L जीए. १८ A B सव्वाइ. १९ L पणठयाइं. २० L सुक्खाइं. २१ A B °ट्ठाणं तु पाव. २२ L कारुन्नं. २३ C D मम.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इय विलवंती बहुहा भणिया उवओगपुव्वयं मुणिणा ।
'मा मा विलवसु मुद्धे ! एवं अइदुक्ख[1]संतत्ता ॥ ६१

कोववसमुवगएणं दिण्णो[2] सावो तुहं मए[3] भद्दे ! ।
संपइ पसण्णहियओ[4] तुह उवरिं नत्थि मे[5] कोवो ॥ ६२

किंतु अणाभोगेणं[6] वि भणिओ सावो[7] हु भाविओ एसो ।
तुमए अन्नभवंतरसु[8]निकाइयकम्मदोसेणं ॥ ६३

पियं[9]विरहमहादुक्खं अणुभवियव्वं तए चिरं[10] कालं ।
न हु नियकयकम्माणं संसारे छुट्टए को वि ॥ ६४

वच्छे ! हसमाणेहिं जं वज्झइ पावयं इह जिएहिं ।
रोवंतेहिं[11] तयं खलु नित्थरियव्वं न संदेहो ॥' ६५

तो नाउं परमत्थं वंदिय साहू[12] विसज्जिओ तीए ।
तम्मि गए रुयमाणी[13] पिएण[14] पुट्ठा कहइ सव्वं ॥ ६६

आसासिऊण तेण वि भणिया कुण जिण[15]जईण पूयाई ।
दुरियविघायणहेउं न हु रुन्नेणं हवइ किं पि ॥ ६७

पडिवज्जिय तव्वयणं[16] कुणइ तवं पूयए जिणाईए ।
कइहिँ वि[17] दिणेहिँ तत्तो पुणो वि भोगप्परा जाया ॥ ६८

एवं परिगलमाणे काले मित्तेहिँ एरिसं भणिओ ।
सो हु महेसरदत्तो एगंते ठविय सव्वेहिं ॥ ६९

'अत्थोवज्जणकालो मित्त ! इमो वट्टए सुपुरिसाणं ।
पुव्वपुरिसज्जियत्थं लज्जिज्जइ विलसमाणेहिं ॥ ७०

ता गंतु जवणदीवं विढवित्ता नियभुयाहिँ[18] बहुदव्वं ।
विलसामो' तव्वयणं पडिवज्जइ रंजिओ एसो ॥ ७१

अह महयाकट्ठेणं जणणी-जणयाणं[19] मोक्कलावेउं[20] ।
गिण्हेई[21] बहुप्पयारं जं जं भंडं तहिं जाइ ॥ ७२

भणिया य नम्मयासुंदरी वि—'कंते[22] ! समुद्दपारम्मि ।
गंतव्वं मह होही चिट्ठसु ता तं सुहेणेत्थ ॥ ७३

---

१ L °दुक्ख°. २ L दिन्नो. ३ C D सावो मए तुमं भद्दे. ४ L °हियए तुह. ५ L °त्थि मह को°. ६ L °भोगेणं भणिओ. ७ A B भावो. ८ L °सन्निकाइय°. ९ L इयं विरह°. १० C D तए बहुं कालं. ११ L रोयंतेहिं. १२ L साहुं. १३ A B रुवमाणी. १४ L पियेण. १५ कुण जईण°. १६ L तव्वयणा. १७ L केहवि. १८ L °भूयाहिं. १९ C D °जणयाणि. २० L मुक्कलावेउं. २१ L गिन्हइ. २२ L वि कंठे समु°.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्हा[1] अइसुकुमालं तुह देहं न हु सहिस्सई कट्ठं ।
तम्हा देव-गुरूणं भत्तिपरा चिट्ठ अणुदियहं ॥' ७४
तो भणइ इमा–'पिययम ! मा जंपसु एरिसाइँ वयणाइं ।
जम्हा उं[2] तुज्झ विरहं न[3] समत्था विसहिउं अहयं[4] ॥ ७५
कट्ठं पि तए समयं वच्चंतीए अईव सुहजणयं ।
ता निच्छएण तुमए सह गंतव्वं मए नाह ! ॥' ७६
तन्नेहमोहियमई पडिवज्जिय तो महंतसत्थेण ।
गंतूण जलहितीरे आरुहइ पहाणवहणेसु ॥ ७७
जा जाइ जलहिमज्झे पहाणअणुकूलवायजोगेण ।
ताव तहिं केणावि हु उग्गीयं महुरसद्देण ॥ ७८
तं सोऊणं बाला सरलक्खणजाणिया पहिट्ठमुही[5] ।
जंपइ–'एसो पिययम ! गायइ[6] कसिणच्छवी पुरिसो ॥ ७९
अइथूल[7]पाणिजुयलो बव्वरकेसो रणम्मि दुज्जेओ[8] ।
उण्णय[9]वच्छो साहस्सिओ य बत्तीसवारिसिओ[10] ॥ ८०
गुज्झम्मि[11] य रत्तमसो इमस्स ऊरुम्मि[12] सामला रेहा ।'
इय सोउं से भत्ता[13] गयनेहो[14] चिंतए एवं ॥ ८१
'नूणं इमेण समयं वसइ इमा तो[15] वियाणई एवं ।
ता निच्छएण असई एसा अच्चंतपाविट्ठा ॥ ८२
आसि पुरा मह हियए महासई साविया इमा दइया[16] ।
किं तु कयं मसिकुच्चय[17]दाणमिमीए कुलदुगे वि ॥ ८३
ता किं खिवामि एयं उयहिम्मि[18] उयाहु मोडिउं गलयं ।
मारेमि[19] आरडंती किं वा घाएमि छुरियाए ॥' ८४
इय चिंतइ[20] जावेसो बहुविहमिच्छावियप्पपरिकलिओ ।
ता कूवयट्ठियनरो[21] जंपइ–'रे धरह वहणाइं ॥ ८५
एसो रक्खसदीवो गिण्हह[22] इह नीरइंधणाईयं[23] ।'
ते वि तयं पडिवज्जिय धरंति तत्थेव वहणाइं ॥ ८६

---

१ L जंम्हा. २ L °म्हा हु तु°. ३ C D °हं असमत्था. ४ L विसहियं अहियं. ५ L सरलक्खणजाणगा पहट्ठमुही. ६ L जंपइ पिययम गीयइ एसो जंपइ कसिण°. ७ L अइसूल°. ८ L वव्वरकेसा रणम्मि पुच्छेडं. ९ L उन्नयवच्छा. १० L °वारसिओ. ११ L गुस्सम्मि रत्त°. १२ L ऊरम्मि. १३ L सत्ता. १४ L °नेहं. १५ L इमा विया°. १६ L दईया. १७ L °कुंच्चय°. १८ L उवहिम्मि. १९ L मारेमे. २० L चिंतिय. २१ L ता कूवयट्ठिपुरिसो. २२ L गिन्हह. २३ L °यंधणा°.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पेच्छंति[1] तयं दीवं गिण्हंती[2] इंधणाइयं सव्वं ।
सो वि महेसरदत्तो मायाए जंपए एवं ॥ ८७
'अइरमणीओ[3] दीवो सुंदरि ! ता उत्तरित्तु पेच्छामो[4] ।'
सा वि परितुट्ठचित्ता तेण समं भमइ दीवम्मि ॥ ८८
अण्णण्णेसुं[5] वणेसुं कमेणं[6] पिच्छंति सरवरं एक्कं ।
उत्तुंगपालिसंठियनाणाविहतरुवरसणाहं ॥ ८९
अइसच्छं[7]साउसीयलजलपुण्णं[8] सयलजलयरसणाहं ।
दट्ठूण तयं मज्जंति दो वि तत्तो वि उत्तरिउं ॥ ९०
जा तव्वणगहणेसुं[9] भमंति ता सच्चवंति[10] एगत्थ ।
रमणीयलयाहरयं तं मज्झे करिय सत्थरयं ॥ ९१
दोण्णि वि सुवण्णयाइं खणेणं[11] निद्दावसं गया बाला ।
तो चिंतइ से भत्ता निग्घिणहियओ जहा 'एत्थं[12] ॥ ९२
मुंचामि इमं जेणं मरइ सयं चेव एगिया रण्णे[13] ।'
इय चिंतिऊण सणियं[14] सणियं उस्सक्किउं[15] जाइ ॥ ९३
वहणेसुं विलवंतो 'माइल्लो' उच्च-उच्चसद्देहिं ।
सत्थिल्लएहिँ पुट्ठो – 'रुयसि[16] किमत्थं ?' ति सो[17] भणइ ॥ ९४
'सा मम भज्जा भाउय ! खद्धा घोरेण छुहियँ[18]रक्खेण ।
तं दट्ठुं भयभीओ अहमेत्थ पलाइउं[19] पत्तो ॥ ९५
तो पूरह वहणाइं मा एत्थ समागमिस्सई रक्खो ।'
ते वि तओ भयभीया पूरंति झड त्ति वहणाइं ॥ ९६
सो वि हु आहाराई दुक्खकंतो[20] व मुंचइ खणेण ।
रोवइ[21] विलवइ कुट्टइ उरसिरमाईणि[22] मायाए ॥ ९७
हियएणं पुण तुट्ठो[23] चिंतइ नणु सोहणं इमं जायं ।
जं लोगऽववाओ[24] वि हु परिहरिओ एवविहियम्मि ॥ ९८

---

१ L पिच्छंति. २ L गिन्हंती. ३ L °समणीओ. ४ L पिच्छामो. ५ L अन्नन्नेसुं. ६ L कंमेण. ७ C D अइअच्छ°. ८ L °सियजलपुन्नं°. ९ L जाव य वणगहणेसुं. १० L सव्ववंति. ११ L दुन्नवि सुव्वंति खणेणं. Blank space is found in A B for the lines from निद्दावसं (inclusive) upto the letters खेमे (inclusive) of खेमेण° in verse १०१. १२ L इत्थ. १३ L एगया रन्ने. १४ L सयणिं. १५ L ओस्सकियं. १६ L रूयसि. १७ L ति तो भ°. १८ L छुरिय°. १९ L अहमित्थ पलाइयं. २० दुक्खकंतो. व्व मुचइ. २१ C D तइ विल°. २२ L °माईण. २३ L हियएणं परितुट्ठो. २४ L जं लोगविवाओ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सत्थिल्लएहिं तत्तो पडिबोहिय भोइओ[1] इमो वि तओ।
अइमहया कट्ठेणं संजाओ विगयसोगो[2] व्व॥ ९९
पत्ता य जवणदीवं सव्वेसि वि[3] हिययवंछियाओ वि।
जाओ अहिओ लाभो कमेण गिण्हित्तुं[4] पडिपणिए॥ १००
वलिऊणं खेमेणं पत्ता सव्वे वि कूववंद्रम्मि[5]।
सो वि महेसरदत्तो अक्खइ सयणाण रोवंतो॥ १०१
जह—'मह दइया खद्धा रक्खसदीवम्मि घोररक्खेण।'
ते वि तओ दुक्खत्ता कुणंति तीसे मयगकिच्चं[6]॥ १०२
परिणाविओ य एसो अण्णं[7] कुलबालियं अइसुरूवं[8]।
तीए य बद्धनेहो भुंजइ भोगे अणण्णसमे[9]॥ १०३
एत्तो[10] वि नम्मयासुंदरी वि जा उट्ठिया[11] खणद्धेण।
तो न हु पिच्छइ[12] कंतं तत्थ तओ चिंतए एवं॥ १०४
'नूणं परिहासेणं लुक्को[13] न णुं[14] होहिई महं दइओ।'
वाहरइ तओ—'पिययम! देसु महं[15] दंसणं सिग्घं॥ १०५
मा कुण बहुपरिहासं बाढं उत्तम्मए[16] महं हिययं।'
जा एइ न एवं पि[17] हु सासंका उट्ठिउं[18] ताव॥ १०६
परिमग्गइ सव्वत्तो तह वि अपिच्छंतिया[19] सरे जाइ।
भमइ[20] य वणविवरेसुं[21] कुणमाणी बहुविहे सद्दे॥ १०७
'हा नाह! ममं मोत्तुं[22] दुहियमणाहं कहिं गओ इण्हिं[23]।
सोऊणं पडिसद्दं[24] धावइ तो[25] तम्मुही बाला॥ १०८
विज्झंती खइर[26]कंटएहिं पाएसु गलियरुहिरोहा[27]।
गिरिविवरे भमिऊणं पुणो वि सा जाइ लयहरए[28]॥ १०९
एत्थंतरम्मि सूरो दट्ठूणं तीए तारिसमवत्थं।
पडिकाउं अचयंतो लज्जाए व दूरमोसरिओ[29]॥ ११०

---

१ L °बोहिया भाइओ. २ L °सोगु व्व. ३ L सव्वे वि हु हिय°. ४ L गिन्हितु. ५ L °वंदम्मि. ६ L कुणंति नीसेसमयकिच्चं. ७ L अन्नं. ८ L °सरूवं. ९ L भोए अनन्नसमे. १० A B इत्तो. ११ L उठिया. १२ L पिक्खइ. १३ A B लिहक्को. L लिक्को. १४ C D न हु हो°. १५ L देसि ममं. १६ L उत्तसए. १७ L एवं वि. १८ L उठिया. १९ L अपिच्छंतया. २० L समइ. २१ A B °विवरेसु. २२ L महं मुत्तुं. २३ L इन्हिं. २४ A B पडिसद्दे. २५ L धाइ तओ तम्मुही. २६ L खाइर°. २७ L गहियरुहि°. २८ C D लइह°. २९ L °मोसरीओ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अत्थगिरीए[1] सूरो ल्हसिउं अवरोयहिम्मि निव्वुड्डो[2] ।
अहवा अत्थमइ च्चिय सूरो पडिकाउमचयंतो ॥ १११
ए[3]त्थंतरम्मि तो सा तत्थेव लयाहरम्मि परिखिन्ना ।
सोगत्ता बीहंती मुचज्जए[4] पल्लवत्थरणे ॥ ११२
उत्थरइ[5] य तम[6]नियरो सव्वत्थोवहय[7]लोयणप्पसरो ।
अहव पसरंति मलिणा[8] परितुट्ठा मित्तनासम्मि ॥ ११३
इय जा खणंतरेक्कं[9] चिट्ठइ सा दुक्खिया तहिं बाला ।
ता उग्गमेइ राया राय व्व तमारिखयकारी ॥ ११४
तं दट्ठूणं[10]ससिया मण्णइ उज्जीवियं व[11] अप्पाणं[12] ।
अहवा पीऊसरुई आसासइ जं किमच्छेरं[13] ॥ ११५
तो बहुविहचिंतावाउलाई[14] अइदुक्खियाए सा रयणी ।
चउजामनिम्मिया वि हु जामसहस्सं व वोलीणा ॥ ११६
अह उग्गयम्मि[15] सूरे सा नम्मय[16]सुंदरी दुगुणदुक्खा ।
पुण रोविउं पयत्ता सुमरिय नियनाहगुणनियरं ॥ ११७

अवि य–

'हा पडिवण्णय[17]वच्छल ! दक्खिन्नयनीरपूरसरिनाह ! ।
हा करुणायर ! अहयं[18] कह मुक्का एक्किया रण्णे[19] ॥' ११८
एवं[20] विलवंती सा पुणो[21] वि गच्छइ सरोवरं तेण ।
पुणरवि हिंडइ रण्णे[22] पुच्छंती हरिणिमाई उ[23] ॥ ११९
'किं दिट्ठो मह भत्ता कत्थई[24] तुब्भेहिँ एत्थ भमडंतो ? ।'
पडिसद्दं सोऊणं पविसइ गिरिकुहरमज्झम्मि ॥ १२०
तत्थ वि तमपेच्छंती[25] पुणो वि निग्गच्छई तओ एवं ।
वोलीणा पंच दिणा आहारविवज्जियाई[26] दढं ॥ १२१
अह छट्ठम्मि दिणम्मी भमडंती जाइ उय[27]हितीरम्मि ।
जत्थाऽऽसि पवहणाइं[28] चिंतइ तं सुण्णयं[29] दट्ठुं ॥ १२२

---

१ L अत्थिगिरीउ. २ L विव्वुड्डो. ३ L इत्थं°. ४ L मुव्वज्जए. ५ L उच्छरइ. ६ A B हिम°. ७ L सव्वत्तो पुइयलो°. ८ L मसिणा परिसुट्ठा. ९ L °तरिक्कं. १० L दट्ठूणं स°. ११ C D °वियं तु अ°. १२ L मन्नइ उजीविव्वयव्व अत्ताणं. १३ L आसासइ तं वि मच्छेरं. १४ L °वाउलाए. १५ L उदयम्मि. १६ L न्नमय°. १७ L °वन्नय°. १८ L °णायर निय अहियं कह. १९ L एक्किया अहं रन्ने. २० L इय विल.° २१ L पुण. २२ L रन्ने. २३ A B हरिणमाईए. L हरिणिंमाईणि. २४ C D कत्थय २५ L °पिच्छंती. २६ L °वज्जियाए. २७ L उवहि°. २८ L य वह°. २९ L सुन्नयं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'रे रे जीव! अलक्खण! मुहाएँ[1] किं खिज्जसे तुमं एवं।
जं अन्नभवोवत्तं[2] तं को हु पणासिउं[3] सत्तो॥ १२३

रे जीव! तया मुणिणा आइट्ठं जं तयं इमं मण्णे[4]।
ता सम्मभावणाए[5] सहसु[6] तयं किं व रुण्णेणं[7]?॥' १२४

इय चिंतिऊण तो सा गंतूण सरोवरम्मि नियदेहं।
पक्खालिय संठाविय ठवणं तो वंदई देवे[8]॥ १२५

काऊण पाणवित्तिं फलेहिँ तो गिरिगुहायं[9] मज्झम्मि।
मट्टियमयजिणपडिमं काउं वंदेइ[10] भत्तीए॥ १२६

पूयइ[11] वरकुसुमेहिं कुणइ बलिं बहुफलेहिँ पक्केहिँ[12]।
रोमंचंचियदेहा संथुणइ मणोहरगिराए॥ १२७

अवि य–

'जय संसारमहोयहिनिवुड्डजंतूण तारणतरंड!।
जय भयभीयजणाणं[13] सरणय! जिणनाह! जगपणय!॥ १२८

जय दुहियाणं दुहहर! रागद्दोसारिविरियनिद्दलण[14]!।
जय मोहमल्लमूरण! जय चिंताचत्त[15]! जिणनाह!॥ १२९

जय निद्दापरिवज्जिय! छुहापिवासाजराभयविमुक्क!।
मयमायखेयवज्जिय[16]! गयजम्मणमरण! जय नाह[17]!॥ १३०

जय हिअविम्हय[18]! अपमाय! देव! सासयसुहम्मि संपत्त!।
सिवपुरपवेसणेणं कुणसु दयं मज्झ दुहियाए॥' १३१

इय जिणथुइजुत्ताए[19] सुनिकाइयकम्ममणुहवंतीए।
जा जाइ कोइ[20] कालो ता चिंतइ अन्नया एसा॥ १३२

'जइ कह वि भरहवासे गमणं मह होइ पुण्णजोएण[21]।
तो सव्वसंगचायं काऊण वयं गहिस्सामि॥' १३३

इय चिंतिऊण रयणायरस्स तीरम्मि उब्भियं[22] तीए।
चिंधं महामहंतं[23] जं पयडइ भिन्नवहणं ति[24]॥ १३४

---

१ L मुहाइ. २ L °वोवन्नं. ३ L °सियं. ४ L मज्झे. ५ L समभा°. ६ L सहस्सु. ७ L रुन्नेणं. ८ L तो वंदए देवो. ९ L °गुहाए. १० L मंडियजिणबिंबं काउं ठवेइ. ११ L पूइय. १२ L कुणइ बहुभत्तिब्भरनिब्भरेहिं. १३ L भवभीय°. १४ L °दोसारि°. १५ A B चिंतावत्त. १६ L मयसेसखेय°. १७ C D °मरणपरिमुक्क. L °मरणभरमोह. १८ L हियवि°. १९ A B °जत्ताए. २० L को वि कालो°. २१ L पुन्न°. २२ L उट्ठियं. २३ L थिंबं महे महंत. २४ A B °वहणित्तं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एत्थंतरम्मि[1] तीसे चुल्लपिया वीरदासनामो जो ।
बब्बरकूलं जंतो पत्तो तम्मि य पएसम्मिं[2] ॥ १३५
दट्ठूण तयं चिंधं लंबाविय पवहणं समुत्तरिउं[3] ।
पयमग्गेणं पत्तो थुणइ जिणं नम्मया जत्थ ॥ १३६
सोऊण तीएँ सद्दं सासंको नम्मया किमेस त्ति ।
जा पत्तो दिट्ठिपहे ता सहसा[4] उट्ठिया बाला ॥ १३७
दट्ठूण चुल्लपियरं कंठम्मि विलग्गिउं घणं रुन्ना[5] ।
सो वि तयं ओलक्खिय[6] मुंचइ नयणेहिँ सलिलोहं ॥ १३८
पुट्ठा य–'किं गुणोयहि! वच्छे! तं इत्थ एक्किया रण्णे[7] ।'
सा वि असेसं वत्तं[8] जं जहवत्तं परिकहेइ ॥ १३९
'पेच्छह[9] विहिणो दुव्विलसियं' ति भणिऊण नेइ तं वहणे ।
ण्हाणाई[10] काराविय भुंजावइ मोयगाईहिं[11] ॥ १४०
चलिओ य ततो[12] कमसो पत्तो अणुकूलवायजोगेण ।
बब्बरकूले[13] तत्तो ताडावइ पडउडिं[14] रम्मं ॥ १४१
उत्तारिय भंडाइं पडउडिमज्झम्मि नम्मयं[15] ठवियं ।
गिण्हिय उवायणाइं[16] गच्छइ नरनाहपासम्मि ॥ १४२
नरवइणा सम्माणे विहिए तो[17] जाइ निययठाणम्मि ।
जावऽच्छइ[18] कइ वि दिणे ता जं जायं तयं सुणह ॥ १४३
अत्थि तहिं वत्थव्वा[19] हरिणी नामेण सुंदरा गणिया ।
नीसेसकलाकुसला गोरव्वा नरवरिंदस्स ॥ १४४
वेसायणप्पहाणा[20] उब्भडलावण्ण[21]जोव्वणुम्मत्ता ।
सोहग्गवरपडागा[22] सुपसिद्धा रिद्धिपरिकलिया ॥ १४५
सा रण्णा परिभणिया[23]–'समत्थवेसाण भाडियं[24]विभागं ।
गिण्हह[25] तुमं मज्झं पुण विढविसि जं तं[26] तयं देयं ॥ १४६

---

१ L इत्थं°. २ A B तम्मि प्पएसम्मि. C D जंतो संपत्तो तप्पएसम्मि. ३ L °त्तरियं. ४ L °प्पहे सा सहस्सा. ५ L विलगियं घणं रुन्नं. ६ L उलखिय. ७ L तं एत्थ एकिया रन्ने. ८ L चत्तं. ९ L पिच्छह. १० L न्हाणाई. ११ A B मोयगाईयं. १२ L तओ. १३ L °कुले. १४ L पडहउडि. १५ L नम्मया. १६ L गिन्हिय उवाइणाइं. १७ L विहिपत्तो जाइ. १८ L जावत्थइ. १९ L वत्थवा. २० L °पहणा. २१ L °लावन्न°. २२ L °पडाया. २३ L रन्ना पडिभ°. २४ L भाडिपवि°. २५ L गिन्हह. २६ L विढवसि जं जं तयं.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो य इह [1]पोयसामी आगमिही सो य अट्ठसहसं तु।
दीणाराणं देही तुज्झं[2] मज्झ प्प[3]साएणं ॥' १४७
एसा तत्थ ववत्था वेसाणं अत्थि [4]राइणा समयं।
हरिणीऍ तओ चेडी पट्ठविया वीरदासस्स ॥ १४८
पासम्मि तीऍ भणिओ सो जह.–'वाहरइ [5]हरिणी(णि)या तुब्भे।'
तेण वि सा पडिभणिया–'जइ वि हु [6]रूवाइगुणकलिया ॥ १४९
अण्णित्थी[7] तह वि अहं भुंजामि न[8] वज्जिउं नियकलत्तं।'
तीए वि तओ भणियं–'आगंतव्वं[9] तए तह वि[10] ॥ १५०
तो जाणिय भावत्थो अप्पइ दीणार[11]सहसमट्ठहियं।
सा वि तयं घेत्तूणं[12] वच्चइ हरिणीऍ[13] पासम्मि ॥ १५१
सा तं दट्ठुं जंपइ–'किमेइणा एउ वणियपुत्तो त्ति[14]।
सा वि पुणो गंतूणं अक्खइ हरिणीऍ[15] जं भणियं ॥ १५२
तं [16]सुणियं वीरदासो चिंतइ हियएण 'किं मह इमाओ।
काहिंति[17] जओ सीलं भंजेमि[18] न पलयकाले वि ॥ १५३
गच्छामि ताव तहियं पच्छा काहामि जं जहाजुत्तं[19]।'
इय चिंतिऊण गच्छइ तीए भवणं अइसुरम्मं ॥ १५४
तो महुरमंजुलाहिं वियड्ढभणिईहिं[20] साणुरागाहिं।
सा जंपइ सवियारं तह वि न सो चलइ मेरु व्व ॥ १५५
[21]एत्थंतरम्मि कण्णे[22] कहियं हरिणीऍ[23] तीऍ चेडीए।
जह–'सामिणि! एयघरे [24]अच्छइ महिला [25]अणण्णसमा ॥ १५६
सा जइ कहिं वि तुब्भं आएसं कुणइ तो हु[26] रयणाणं[27]।
पूरइ निस्संदेहं तुह गेहं किं [28]च बहुएणं ॥ १५७
जम्हा हु[29] रूवजोव्वणला[30]वण्णगुणेहिं तीऍ सारिच्छा।
दीसइ न मच्चलोए' तं सोउं हरिणिया लुद्धा ॥ १५८

---

१ L जो इह पोयसामी°. २ L तुब्भं. ३ L पसाएण. ४ L रायणा. ५ A B रिग्णिया. ६ L रूवाइपरिक°. ७ L अन्नत्थी. ८ L °मि तवज्जियं. ९ L भणियं गंतवं. १० C D तए कह वि. ११ L °सहस्सम°. १२ L घितूणं. १३ L हरिणीइ. १४ L वणीयपुत्त. १५ L हरिणीय. १६ L सुणिय. १७ L काहंति. १८ L भुंजामि. १९ L जहाजुत्तं. २० L वियट्टभणिईणि साणु°. २१ L इत्थं°. २२ L कन्ने. २३ L हरिणीहिं तीए. २४ L एसघरे अत्थइ. २५ L अणन्न°. २६ A B तुब्भे आएणं कुणह वो ह रय°. २७ L रयणाइं. २८ A B किं त्थ बहु°. २९ C D जम्हा उ. ३० L °जुव्वणलावन्न°.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चिंतइ 'अवहरिऊणं आणेत्तुं[1] धरेमि कह वि पच्छण्णं[2] ।'
तत्थुप्पण्णमई[3] सा तो भणइ तयं वणियपुत्तं ॥ १५९
'अप्पेहि नाममुदं खणमेक्कं जेण ईए[4] सारिच्छं ।
अण्णं[5] नियकरजोग्गं[6] मुदं कारेमि' तो एसो ॥ १६०
अप्पइ य निव्वियप्पो[7] सा वि तयं देइ दासचेडीए ।
हत्थम्मि ततो[8] एसा गंतूणं नम्मयं[9] भणइ ॥ १६१
'सो वीरदाससेट्ठी[10] हक्कारइ पच्चयत्थमह[11] तेण ।
एयं मुद्दारयणं पट्ठवियं तुज्झ ता एहि ॥' १६२
दट्ठूण वीरदासस्स संतियं नामसुद्दिया[12]रयणं ।
तो सा वि[13] निव्वियप्पा तीए समं जाइ तत्थ गिहे ॥ १६३
अवदारेण पवेसिय छूढा[14] गुत्तम्मि भूमिहरयम्मि[15] ।
मुद्दं पि वीरदासस्स अप्पियं कुणइ पडिवत्तिं ॥ १६४
उट्ठित्तु ततो[16] एसो सट्ठाणे जाइ तत्थ तमदट्ठुं ।
गविसइ सव्वत्तो च्चिय पुच्छंतो[17] परियणं सव्वं[18] ॥ १६५
जाव[19] न केण वि[20] सिट्ठा तीए वत्ता वि तो गवेसेइ[21] ।
उज्जाणहट्टमाइसु तत्थ वि नो[22] जाव उवलद्धा ॥ १६६
तो दुक्खपीडियंगो इमं उवायं विचिंतए[23] एसो ।
'जेणऽवहरिया बाला किं सो पयडेइ मह पुरओ ॥ १६७
ता वच्चामि ईओ[24]ऽहं बालं पयडेइ जेण सो दुट्ठो[25] ।'
इय भावणाई[26] भंडं घेत्तूणं[27] चलइ घरहुत्तं ॥ १६८
पत्तो भरुयच्छपुरे संजत्तियवणियसंकुले रम्मे ।
तत्थऽत्थि तस्स मित्तो जिणदेवो नाम वरसड्ढो[28] ॥ १६९
तस्सऽक्खइ सो सव्वं भणिओ – 'तं जाहि तत्थ[29] वरमित्त ।'
कत्थ वि गवेसिऊणं तं बालं एत्थं[30] आणेही ॥ १७०
सो वि तयं पडिवज्जिय सामग्गिं करिय जाइ तत्थेव ।
जाणाविया य वत्ता नम्मयपुरिसव्व[31]सयणाणं ॥ १७१

---

१ L अणित्तु. २ L पच्छन्नं. ३ L तत्थप्पन्न°. ४ L °ण एइ सा°. ५ L अन्नं. ६ L °जुग्गं. ७ L निवियप्पा. ८ L तओ. ९ L मन्नणो भ°. १० L °सिट्ठी. ११ L पच्छइत्थ°. १२ L °मुद्दया°. १३ A B सा य नि°. १४ L छुद्धा. १५ L °घरम्मि. १६ L तओ. १७ L च्चिय पुच्छइ. १८ C D °यणं सयलं. १९ A B जा न वि केण. २० L केणइ सि°. २१ L वि ता गवेसइ. २२ L वि तो. २३ L °यं चिंतए. २४ A B तओऽहं. २५ L पुट्ठो. २६ L भावणाए. २७ L घित्तूणं. २८ L °सट्ठो. २९ L जाहि वर°. ३० L इत्थ. ३१ L °पुरि सोव्व.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सोऊण तयं ताणि[1] वि दुक्खत्ताइं रुवंति अइकरुणं।
एत्तो य नम्मयाए जं वित्तं तं निसामेह ॥ १७२
नाऊण वीरदासं गयं तओ हरिणियाएँ सा वुत्ता।
'भद्दे! कुण वेसत्तं[2] माणसु विविहाइँ सोक्खाइं[3] ॥ १७३
सद्दरसरूवगंधे फासे अणुहवसु मणहरे निच्चं।
मह घरवत्ता एसा सव्वा वि हु तुज्झतणियं[4]' त्ति ॥ १७४
तं[5] सोउं नम्मयसुंदरी वि[6] विहुणित्तु करयले दो वि।
पभणइ—'मा भणँ भद्दे! कुलसीलविदूसणं वयणं ॥' १७५
तो रुसिऊणं हरिणी ताडावइ तं कसप्पहारेहिं[8]।
फुल्लियकिंसुयसरिसा खणेण जाया तओ एसा ॥ १७६
'अज्ज वि न किंचि नट्ठं पडिवज्जसु मज्झ संतियं वयणं।'
इय मेहरीएँ भणीएँ भणइ इमा—'कुणसु जं मुणसि ॥' १७७
गाढयरं रुसिऊणं जाव पवत्तेइ[10] तिक्खदुक्खाइं।
सा वेसा ता इयरी[11] सुमरइ परमिट्ठिवरमंतं ॥ १७८
तस्स पभावेण तओ तडं[12] त्ति पाणेहिँ हरिणियाँ[13] मुक्का।
रण्णो निवेइयम्मी[14] तम्मरणे भणइ तो राया ॥ १७९
'किंचि सरूवं अण्णं[15] तट्ठाणे ठवेह[16] गुणगणसमग्गं।
भो मंति! समाऽऽणत्ति(त्तिं)[17] सिग्घं संपाडसु इमं' ति ॥ १८०
नरवइणो[18] आणाए मंती जा[19] तत्थ जाइ ता सहसा[20]।
दट्ठूण नम्मयं सो अच्चंतं हरिसिओ[21] चित्ते ॥ १८१
जंपइ—'मेहरियपयं भद्दे! तुह देमि रायवयणेणं।'
सा[22] वि तयं पडिवज्जइ[23] परिभाविय निग्गमोवायं ॥ १८२
ठविऊण मेहरिं तं मंती वि हु जाइ निययठाणम्मि।
सा वि हु हरिणीदव्वं वेसाणं देइ परितुट्ठा ॥ १८३
तं कहियं केणावि हु रण्णो[24] तेणावि जंपियं एयं।
'आणेह तयं एत्थं' जंपाणं जाइ तो रम्मं ॥ १८४

---

१ L ताण. २ L भद्देण कुण देसत्तं. ३ C D विविहाणि सोक्खाणि. L विवहाइं सुक्खाइं ४ L °तणय त्ति. ५ L ता सोउं. ६ L °सुदंरी त्ति वि. ७ L भणह भद्दे. ८ L ताडावइ कसपहारेहिं. ९ L भणइ मा कुण° १० L पयत्तेइ. ११ L वेसा भा यइरी. १२ L तओ झड त्ति. १३ L हरिणीया. १४ L रन्नो निवेवियम्मी. १५ L अन्नं. १६ C D ठवसु. १७ L मंति समाणत्तं. १८ L जक्खइणो. १९ L मंती ता तत्थ. २० L सहसा, २१ L °सिओ दित्तो. २२ L भा वि २३ L पडिवज्जिय. २४ L रन्ने.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आरोविऊण तम्मिं[1] जा पुरिसा निंति नयरमज्झेणं ।
ता चिंतइ 'मह सीलं को खंडइ जीवमाणीए ॥ १८५

को पुण इत्थ उवाओ' चिंतंती नियइ[2] एगठाणम्मि ।
अइकुहियदुब्भिगंधं[3] पवहंतं गेहनिद्धवणं[4] ॥ १८६

तं पेच्छिऊण [5]जंपइ–'भो भो ! बाढं तिसाइया अहयं[6] ।'
तो मेल्लावेइ[7] जाणं जाणवई दरिसिउं[8] विणयं[9] ॥ १८७

जा आणंति जलं ते ताव इमा उत्तरित्तु जाणाओ ।
सव्वंगियमप्पाणं चिक्खिल्लेणं[10] विलिंपेइ ॥ १८८

पियइ तयं दुग्गंधं[11] नीरं अमयं[12] ति भाणिउं बाला ।
लोलए महीइ पंसुं[13] खिवइ सिरे देइ अक्कोसे[14] ॥ १८९

पभणइ य–'अहो[15] लोया ! अहयं इंदाणिया[16] ममं नियह[17] ।'
गायइ नच्चइ रोवइ भयभीया सीलभंगस्स ॥ १९०

पुरिसेहिँ तयं सिट्ठं निवस्स सो भणिउं[18] गहं लग्गं ।
पेसेइ मंत-तंताइवाइणो[19] तेहिँ किरियाए ॥ १९१

आढत्ताए भाले चढाविउं[20] लोयणे फुरुफुरंती[21] ।
अक्कोसिऊणं[22] गाढं अहिययरगहं पदंसेइ ॥ १९२

तो तेहिँ परिचत्ता हिंडइ नयरस्स मज्झयारम्मि ।
डिंभेहिं परियरिया हम्मंती कट्ठलिट्ठूहिँ[23] ॥ १९३

इय एवमाइ सव्वं कवडग्गहदंसणं[24] पयासेइ ।
सीलस्स रक्खणत्थं धम्मं हियएण सरमाणी ॥ १९४

अह अण्णया कयाई बहुविहलोएणँ[25] परिवुडा बाला ।
निम्मल्लमालियँ[26]तणू गायइ जिणरासयं रम्मं[27] ॥ १९५

तं दट्ठुं जिणदेवो पुच्छइ[28]–'को तं गहो सि जिणभत्तो ।'
सा भणइ–'ससागारं तेण न साहेमि नियनामं ॥' १९६

---

१ L तम्मि. २ L नियय एग°. ३ L अइकुहिए पूइगंधं. ४ L °निव्ववणं. ५ L तं ऊट्ठिपिण जंपइ सा भो बाढं. ६ L अहियं. ७ L तो मित्तादइ. ८ L जाणावइ हरिसिओ. ९ A B °सिउं वयणं. १० L चिक्खिलेणं. ११ L दुगंधं. १२ L A B °धं अमयं नीरं ति. १३ L लोलइ महीए पसु. १४ L अक्कोसो. १५ L यइहो. १६ L °णिय. १७ L नियहा. १८ L °स्स तो मे अयं गहं. १९ L °मंततंतावेयणो. २० L चडाविउं. २१ L फुरफुरंती. २२ A B आकोसि°. २३ L लिट्ठकट्ठेहिं. २४ L सव्वं वडग्ग°. २५ A B °लोएहिं. २६ L °सालिय°. २७ A B गायइ जिणससयं धम्मं. २८ L °देवो पभणइ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बीयम्मि दिणे उज्जाणसंमुहं जाव चल्लिया एसा ।
तो डिंभाईलोगो नियत्तिउं[1] जाइ सट्ठाणे ॥ १९७
सा वि हु एगंतठिया[2] वंदइ देवे विहीएँ जा ताव[3] ।
कत्तो वि हु जिणदेवो समागओ तो तयं दट्ठुं ॥ १९८

वंदामो[4] त्ति भणित्ता पणमइ सीसेण सा वि वरसड्ढं[5] ।
नाऊणं नियचरियं अक्खइ सव्वं[6] जहावत्तं ॥ १९९
तो जंपइ जिणदेवो–'वच्छे! तुह गविसँणत्थमायाओ[7] ।
भरुयच्छाओ अहयं पट्ठविओ वीरदासेण ॥ २००
जम्हा सो मह मित्तो पाणपिओ पेसिओ अहं तेण ।
ता परिचयसु विसायं सव्वं पि हु सुंदरं काहं ॥ २०१
पर किंतु हट्टमग्गे घडगसहस्सं घयस्स मह[8] तणयं[9] ।
जं चिट्ठइ तं तुमए लउडपहारेहिँ भेत्तव्वं[10] ॥' २०२
इय संकेयं[11] काउं दोन्नि[12] वि पविसंति नयरमज्झम्मि ।
विहियं[13] च वीयदिवसे सव्वं जं मंतियं आसि ॥ २०३
तो निवई[14] हक्कारिय जिणदेवं[15] भणइ–'हा कहं तुज्झ ।
हाणी महामहंता विहिया एयाएँ[16] पावाए ॥ २०४
ता रयणायरपारे अम्हँऽवरोहेण[17] खिवसु एयं ति[18] ।
जेणित्थं[19] अच्छंती कुणइ अणत्थंतरे बहुए ॥' २०५
आएसो[20] त्ति भणित्ता नियलाविय नेइ नियय[21]ठाणम्मि ।
छोडित्ता ण्हावेउं[22] परिहाविय भोइयं[23] विहिणा ॥ २०६
वहणे चडाविऊणं पत्तो खेमेण पुण वि भरुयच्छे ।
[24]पविसित्तु निययगेहे जाणावइ नम्मयपुरम्मि ॥ २०७
जा ते संवहिऊणं[25] चलंति ता एइ सो तयं घेत्तुं[26] ।
जणयाई दट्ठूणं कंठविलग्गा रुवइ तो[27] सा ॥ २०८
ताँ उसभसेण-सहदेव-वीरदासाइ बंधवा सव्वे[28] ।
सरिऊणं बालत्तं तीसे रोवंति[29] अइकलुणं ॥ २०९

---

१ L डिंभाइल्लोगो नियत्तियं. २ L हु एमंतट्ठिया. ३ L °ए ता जाव. ४ L वंदामु. ५ L °सढं. ६ L सवं. ७ L गवेस°. ८ L महु. ९ L °स्स नभतणयं. १० L भितवं. ११ L संकेउं. १२ L दुन्नि. १३ A B विहिउं. १४ L निव्वई. १५ L जिणदेवो. १६ A B एयाइ. १७ L रणायरपारे अम्हु. १८ ति is not found in L. १९ L जेणत्थं. २० L आएसु. २१ L नियठाणम्मि. २२ L न्हावेउं. २३ C D भोइउं. २४ L भविसित्तु. २५ L संविहिऊणं. २६ L घित्तुं. २७ C D तो. २८ L सवे. २९ C D रावंति.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुट्ठा य तेहिँ सव्वं जा सा साहेइ निययवुत्ततं ।
सुणमाणाणं दुक्खं[1] सव्वाण वि तक्खणं[2] जायं ॥ २१०

अह तीएँ संगमम्मी विहिया पूया जिणिंदचंदाणं ।
सम्माणिओ य संघो दिण्णाणि[3] महंतदाणाणि ॥ २११

विहियं वद्धावणयं विम्हयजणणं[4] समत्थलोयाणं ।
जिणदेवसावओ वि हु जाइ पुणो नियनयरम्मि ॥ २१२

जा नम्मयसुंदरिसंगमम्मिं[5] दिवसा सुहेण वोलिंति ।
कइ वि तहिं तं[6] पत्तो विहरंतो साहुपरियरिओ ॥ २१३

मोरियवंससिरोमणिसंपइनरनाहनमियपयकमलो ।
दसपुव्वधरो सिरिथूलभद्दसीसो महुरवाणी[7] ॥ २१४

तियसाइवंदणिज्जो अय(इ)सयनाणेण पयडियपयत्थो ।
भवारविंदभाणू सूरी सिरिअज्जहत्थिं[8] त्ति ॥ २१५

तो नाऊणं सूरिं समागयं तस्स वंदणट्ठाएं[10] ।
भत्तिभरनिब्भराइं सव्वाणि वि[11] जंति उज्जाणे ॥ २१६

वंदित्तु तओ[12] सूरिं नच्चासन्नम्मि[13] सन्निविट्ठाइं ।
सूरी वि ताण धम्मं कहेइ जिणदेसियं रम्मं[14] ॥ २१७

जह—'एत्थं संसारे सकम्मफलभोइणो[15] इमे जीवा ।
पाविंति[16] सुहं दुक्खं जं विहियं अण्णजम्मम्मि[17] ॥' २१८

तं सुणिय वीरदासो पुच्छइ करसंपुडं सिरे काउं ।
'भयवं! किमण्णजम्मे[18] विहियं मह भाइधूयाए ॥ २१९

जेणं सीलजुया वि हु पत्ता एवंविहं महादुक्खं ।'
सूरी वि भणइ—'सावय! जं पुट्ठं तं निसामेह[19]' ॥ २२०

अत्थि इह भरहवासे मज्झिमखंडम्मि पव्वओ विंझो ।
उत्तुंगसिहरसंचयसमाउलो खलियरविपसरो[20] ॥ २२१

तत्तो इमा पसूया महानई नम्मया जइणवेगा[21] ।
तीए य अहिट्ठाइगदेवी[22] वि हु नम्मया अत्थि ॥ २२२

---

१ L °माणाणं सव्वाण. २ C D तक्खणे. ३ L दिन्नाणि. ४ L विम्हयहिययं. ५ L °संगमेण. ६ L वि बहिं तो पत्तो. ७ This verse does not occur in A B C D. ८ A B °जो चउविहवरनाणपयडिय°. C D °जो दसपुव्वपगासपयडिय°. ९ L °अज्जसुहत्थि. १० L °णठाए. ११ A B सव्वाइं जंति. L सव्वाण वि. १२ L तउ. १३ L तच्चास° १४ L धम्मं. १५ L °भोयणो. १६ L पावंति. १७ L °अन्नज°. १८ L किमन्न°. १९ A B निसम्मेह. २० L °समायतो मोखलियरविपसरो. २१ L जयण°. २२ L °ट्ठायग°.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सा मिच्छत्तोवहया नम्मयतडसंठियं महासत्तं ।
धम्मरुईअणगारं दट्ठूणं कुणइ उवसग्गे ॥ २२३

नाणाविहे सुघोरे निच्चलचित्तं मुणिं मुणेऊण ।
उवसंता संजाया सम्मत्तधरा ततो[1] चविउं ॥ २२४
एसा हु[2] नम्मयासुंदरि त्ति जाया सुया उ तुम्हाणं ।
पुव्वभवब्भासेण य एईए नम्मया इट्ठा ॥ २२५

जं तइयाँ[3] सो साहू खलीकओ दुट्ठचित्तजुत्ताए[4] ।
तं मुनिकाइयकम्मं भुत्तं एयाएँ[5] दुव्विसहं ॥' २२६
तो[6] सोउं नियचरियं[7] संजायं तीएँ जाइसरणं तु ।
संवेगगयाएँ[8] तओ गहिया दिक्खा गुरुसमीवे ॥ २२७

दुक्करतवनिरयाए ओहिण्णाणं[9] इमीएँ उप्पण्णं[10] ।
तत्तो पवत्तिणित्ते[11] ठविया सूरीहिँ जोग्ग त्ति[12] ॥ २२८
विहरंती य कमेणं[13] संपत्ता कूवचंद्रनगरम्मि[14] ।
रिसिदत्ताए गेहे वसहिं मग्गित्तु उत्तरिया ॥ २२९

वहुसाहुणीहिँ[15] सहिया कहइ य धम्मं जिणिंदपण्णत्तं[16] ।
सुणइ महेसरदत्तो रिसिदत्तासंजुओ निच्चं ॥ २३०
अह अण्णम्मिँ[17] दिणम्मी संवेगत्थं इमस्स सा गुणइ ।
सरमंडलं असेसं जहा इमेयारिससरेण ॥ २३१

होइ नरो इयवन्नो तहा इमेयारिसेण इयवरिसो[18] ।
एवंविहेणं[19] य पुणो इयंआऊ[20] होइ अवियप्पो ॥ २३२
एवंविहसद्देणं होइ मसो गुज्झदेसभायम्मि ।
एवं विहेण य पुणो रेहा ऊर(रु)म्मि संभवइ ॥ २३३
एमाई अन्नं पि हु सव्वं सरलक्खणं मुणेऊण ।
सो हु महेसरदत्तो चित्तम्मि विभावए एवं ॥ २३४
'नूणं मह दइयाए सरलक्खणजाणियाएँ आइट्ठो[21] ।
गुज्झपएसम्मि मसो रेहा वि य तस्से[22] पुरिसस्स ॥' २३५

---

१ L °धरी तओ. २ L एसा उ. ३ L तईया. ४ L °कओ पुढचि°. ५ L एयाइ. ६ L तं सोउं. ७ L °चरिउं. ८ L °गयाइ. ९ L ओहिनाणं. १० L उप्पन्नं. ११ L पवित्तणित्ते. १२ L जोग त्ति. १३ L °रंती कम्मेणं. १४ L कूववद्दनयरम्मि. १५ A B °साहुणीए. १६ L °पन्नतं. १७ L अन्नम्मि. १८ L इयसरिसो. १९ L °विहे य. २० L इयाआऊ. २१ L आयट्ठो. २२ L तस.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तो विलविउं[1] पयत्तो—'हा हा अइनिग्घिणो अहं पावो[2] ।
कूरो अणज्जचरिओ अवियारियकज्जकारि त्ति ॥ २३६
जेण मए सा बाला सरलक्खणजाणिया अरण्णम्मि[3] ।
एगागिणी विमुक्का ईसावसविनडियमणेणं[4] ॥ २३७
करपत्तं वररयणं हारवियं निच्छयं अपुण्णेणं[5] ।
मरणेण विणा सुद्धी नत्थि महं किं च[6] बहुएण ॥' २३८
इय विलवंतं सोउं भणइ इमा नम्मया—'अहं सा[7] उ ।'
कहइ य जं जहवत्तं[8] नीसेसं अप्पणो चरियं ॥ २३९
'तं[9] संपइ मह भाया तुमं अओ कुणसु संजमं विउलं ।'
सो वि तयं सोऊणं खामइ परमेण विणएण ॥ २४०
'खमसु तयं जं तइया अइनिद्दयकूरचित्तजुत्तेण ।
घोरम्मि दुहसमुद्दे पक्खित्ता सुद्धसीला वि ॥' २४१
तो भणइ नम्मयासुंदरी वि—'संतप्प मा तुमं एवं ।
अणुभवियव्वे कम्मे निमित्तमित्तं तुमं जाओ ॥' २४२
जंपइ तओ महेसरदत्तो—'गिण्हामि[10] संजमं इण्हिं[11] ।
नीसेसकम्मदलणं आगच्छइ को वि जइ सूरी ॥' २४३
एत्थंतरम्मि पत्तो अज्जसुहत्थीगुरू तओ एसो ।
तस्स सयासे गिण्हइ[12] रिसिदत्तासंजुओ दिक्खं ॥ २४४
काऊण तवं दोण्णि वि पवर[13]विमाणम्मि सुरवरा जाया ।
तत्तो वि चुया कमसो मोक्खं[14] जाहिंति गयदुक्खं ॥ २४५
मयहरिया वि हु[15] निययं जाणित्ता आउयस्स[16] पज्जंतं ।
विहियं विहिणाऽणसणं तियसो तियसालये[17] जाया ॥ २४६
तत्तो चविउं होही अवरविदेहे मणोहरो नाम ।
रायसुओ गुणकलिओ भोत्तुं[18] रज्जं तहिं विउलं ॥ २४७
लद्धूण संजमसिरिं उप्पाडित्ता य केवलं नाणं ।
संबोहिऊण भविए गच्छिस्सइ[19] सासयं ठाणं ॥ २४८

---

१ L सो विलवियं. २ A B °णो महापावो. ३ L अरन्नम्मि. ४ L °नडीय°. ५ L निच्छियं अपुन्नेणं. ६ A B किं तु बहु°. C D किं च बहु°. ७ L °या असंसाओ. ८ L य जं जं वत्तं. ९ C D तो. १० L गिन्हामि. ११ L इन्हिं. १२ L गिन्हइ. १३ L हुत्ति वि वारुविमा°. १४ L मुक्खं. १५ L वि हु निच्चं नियर्य. १६ L आऊयस्स. १७ L °सालए. १८ L भुत्तं. १९ L भव्वे गच्छिसइ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इय पवरसईए नम्मयासुंदरीए
चरियमइपसत्थं कारयं निव्वुईए ।
हरिजणयसुहिंडीमज्झयाराउ किंची
*लिहियमणुगुणाणं देउ सोक्खं[1] जणाणं ॥ २४९

॥ इति[2] नर्मदासुंदरीकथानकं समाप्तमिति[3] ॥ †

---

१ L सुक्खं. २ इति is not found in L. ३ L °नकं सम्मत्तं० * In the margin of L उद्धरित्तम् is written as a gloss on लिहियम्. † Following words in different handwritting are written in L at the end: नर्मदासुंदरीकथा श्रीस्तम्भतीर्थभाण्डागारे मुक्ता मु. मोहनसागरसौभाग्यसागराभ्याम् सं. १७०५ वर्षे ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिणप्पहसूरिरइया

नमयासुंदरिसंधि

अज्ज वि जस्स पहावो वियलियपावो य अखलियं[1]पयावो ।
तं वद्धमाणतित्थं नंदउ भवजलहिबोहित्थं ॥ १

❀ ❀ ❀ ❀

पणमिवि पणइंदह वीरजिणिंदह चरणकमलु सिवलच्छिकुलु ।
सिरिनमयासुंदरि गुणजलसुरसरि किंपि थुणिवि लिउँ जम्मफलु ॥ २

[१]

सिरिवद्धमाणु पुरु अत्थि नयरु तहिँ संपइ नरवइ धम्मपवरु । १
तहिँ वसइ सुसावगु उसहसेणु अणुदिणु जसु मणि जिणनाहवयणु । २
तब्भज्जवीरमइकुक्खिजाय दो पवरपुत्त तह इक्क धूअ । ३
सहदेव-वीरदासाभिहाण रिसिदत्त पुत्ति गुणगणपहाण । ४
नहु देइ सिट्ठि मिच्छत्तिआणं[2] रिसिदत्त इब्भपुत्ताइयाण । ५
अह कूवचंदनयरागएण परिणीअ कवडवरसावएण । ६
वणिउत्तरुद्ददत्ताभिहेण तहिँ पत्त चत्तधम्मा कमेण । ७
अम्मापिईहिँ परिवज्जिआइ हुउ पुत्तु महेसरदत्तु ताइ । ८
पुरि वद्धमाणि सहदेवघरिणिं[3] सुंदरि नमयानइन्हाणकरणिं । ९
उप्पन्नुं[4] मणो[र]हु पिअयमेण गन्तूण तत्थ पूरिउं[5] कमेण । १०
गब्भाणुभावि तहिँ रहिउं[6] चित्तु सहदेविहिँ नमयापुरु सवित्तु । ११
तहिँ कारिउ जिणचेइउँ[7] पवित्तु मिच्छत्तरायजयपत्तु पत्तु । १२
अह नमयासुंदरि सुंदरीइ धूआ पसूअ गुणसुंदरीअ(इ) । १३
लावन्नरूवनिरुपमकलाहिँ तहिँ वड्ढइ नमया निम्मलाहिँ । १४
पिअमाइपमुहु सयलु वि कुडुंबु आणाविउ तहिँ पुरि निव्विलंबु । १५
उच्छाहिउ रिसिदत्ताइ पुत्तु ववसाइ महेसरदत्तु पत्तु । १६
आवज्जिउं[8] गुणिहिँ सुसावयत्तु पडिवज्जिउं[9] रंजिउ ताहँ चित्तु । १७
नमया परिणीअ महेसरेण तउ कूवचंदि पहुतउ महेण । १८
रिसिदत्त तीइ कय एगचित्तं[10] जिणनाहधम्मि सासुरयजुत्त । १९
आणंदिउ सयलु वि नयरलोगु नम्मयगुणेहिँ तह सयलवग्गु । २०
ओलोअणि अह निअमुहु पमत्त दप्पणि पिक्खिवि वक्खित्तचित्त । २१
तंबोलपिक्क तिणि मुक्क जाव अह जंतह मुणिसिरि पडिअं[11] ताव । २२

The original readings of the Ms. are noted here:—१ अक्खलिय. २ मिच्छत्ती-आण. ३ °घरणि. ४ उपन्नु. ५ पूरीउ. ६ रहीउ. ७ °चेईउ. ८ आवज्जीउ. ९ °वज्जीउ. १० °चित्तु. ११ पडीअ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुणि जम्पइ “कुणइँ जि मुणिवराण आसायण होइ विओगु ताण”। २३
इअं[1] सुणिवि झत्ति उवरिमखणाउ उत्तरिवि साहु खामइ पमाउ। २४
सा नमिवि भणइ “तुम्हि खमनिहाण पहणंतथुणंतह दयपहाण। २५
सावस्स अणुग्गहु मह करेह अवराहु एक्कु मुणिवर! खमेह”। २६
मुणि भणइ “भावि पियसमविओगुं[2] निअं[3]निव(वि)डपुव्वकस्मिण अभङ्गु। २७
मइँ जाणिउ नाणिण कहिउ तुज्झ नहु सावु एहु मा वच्छि! मुज्झ”। २८

॥ घत्ता ॥

इअं[4] मुणिपहुवयणिहिँ अमिअं[5]समाणिहिँ अप्पदुक्ख[6]संवेगजुयँ[7]।
पिअयमि आसासिअं[8] सीलि पसंसिअं[9] करइ धम्मु निम्मलचरिय॥ २९

[२]

अन्नया रुद्ददत्तङ्गओ चल्लए जवणदीवम्मि बहुदव्वअज्जणकए। १
पोअवणिजेण वच्चंतु मुकलावए सयणवग्गं तहिं नम्मयं ठावए। २
कह वि नहु ठाइ सह चलइ नमयासई जा चलइ पवहणं कोइ ता गायई। ३
सुणिवि सरलक्खणं कहइ पइअग्गए नम्मया “गाइ जो पुरिसु सो नज्जए। ४
पिङ्गकेसो अ बत्तीसवरिसो इमो पिहुलवच्छत्थलो सामलो सक्कमो”। ५
इय सुणिवि पियअमो[10] चिन्तए दुम्मा जा इमं मुणइ सा नूणमसई इमा। ६
इत्तियं कालमेसा मए जाणिआ साविआ सीलविमल त्ति सम्माणिआ। ७
कुलकलङ्कस्स हेउ त्ति मारेमि वा तिक्खसत्थेण जलहिम्मि घल्लेमि वा। ८
अलिअकुविअप्पपूरिअमणो जा गओ रक्खसद्दीवु सहस त्ति ता आगओ। ९
उत्तरिउ तत्थ पाणीअइंधणकए नम्मयासहिउ सो दीवु अवलोअए। १०
तहिँ परिस्सन्त सरवरह पालिं गया निद्दहेउं पयं पुच्छए नम्मया। ११
सो वि छड्डुणमणो भणइ विस्सम पिए[11] तरुतले सुअइ[12] जा ता सणियमुट्ठए। १२
सुत्तयं नम्मयं मुत्तु निट्ठुरु मणे झत्ति संपत्तु मायानिही पवहणे। १३
पुट्ठु परिवारि सो कहइ रोअन्तओ “भक्खिआ[13] रक्खसेणं पिआ हा हओ। १४
एअठाणाउ चालेह लहु पवहणं जा कुणइ रक्खसो तुम्ह नहु भक्खणं”। १५
इअ सुणिवि तेहिँ भीएहिँ संचारिअं पवहणं जवणदीवम्मि तं पत्तयं। १६
तत्थ विक्किणिवि पणिअं[14] सलाभो गओ निअपुरं कहइ अम्मापिऊणं तओ। १७
रक्खसोवद्दवं नम्मयाए दुहं पुण वि परिणाविओ भुंजए सो सुहं। १८
जग्गए नम्मया जाव इत्थन्तरे पिच्छए नेव तहिँ पिअयमं परिसरे। १९
विलवए “नाह हा कंत तं कहिँ गओ असरणं मं विमुत्तूण अइनिद्दओ। २०
वीससिअं[15]घायमहदावपज्जालणं सुगुरुआसायणादेवधणभक्खणं। २१
पुव्वजम्मे मए किं कयं दुक्कयं अकयअवराह जं जाइ पिउ मिल्हिउं”। २२
पंच उववास काऊण अह चिन्तए सरिवि मुणिवयणु इय अप्पयं बोहए। २३
“चलइ जइ मेरु उग्गमइ पच्छिमरवी टलइ नहु पुव्वकयकम्मु पुण कहमवी”। २४

---

१ ईअ. २ पीययमवीओगु. ३ नीअ°. ४ ईअ. ५ अमीअ°. ६ दुःख°. ७ °जूय.
८ आसासीअ. ९ पसंसीअ. १० पीयअमो. ११ पीए. १२ सूअइ. १३ भक्खीआ.
१४ पणीअं. १५ वीससीअ°.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धीरविअं[1] चित्तमह कुणइ सा पारणं छट्ठदिणि फलिहिँ कयदेवगुरुसुमरणं। २५
लिप्पमउ विंबु ठावेवि गुहअन्तरे थुणइ पूएइ मणु ठवइ झाणन्तरे। २६
"रक्खसुद्दीवु मिल्हेवि जइ गम्मए भरहखित्तम्मि जिणदिक्ख गिन्हिज्जए"। २७
इय विचिन्तेवि चिंधं जलहितीरए भग्गपोअत्तसंसूअगं उब्भए। २८
वव्वरे[2] कूलि पोएण वच्चंतओ चिंधु पिक्खेवि पिउवन्धु तहिँ आगओ। २९
नम्मयं पिच्छिउं पुच्छए वइअरं[3] कहइ रोअन्त सा विचु जं दुत्तरं। ३०

॥ घत्ता ॥

संवोहिवि जुत्तिहिँ पेमपउत्तिहिँ वीरदासु तहुहदुहिउ।
पवहणि आरोविउ सीलि पमोइउँ[4] वव्वरि[5] गउ नम्मयसहिउ ॥ ३१

[३]

वीरदासु तहिँ कूलि नरेसरि पूइउँ[6] नमया ठावइ मन्द(न्दि)रि। १
हरिणी वेसा तहिँ निवसेई वीरपासि दासी पेसेई। २
प्रवहणप्रति दीणारसहस्सू निवपसाइँ सा लहइ अवस्सू। ३
दासि भणइ "तुम्हि सामिणि वंछइ" वीरु सीलँनिहि तहिँ नहि गच्छइ। ४
तत्तिउ धणु पेसइ तसु हत्थिहि हरिणि भणइ "अम्ह काजु न अत्थिहिँ। ५
वीरदासु एती कल(?) आणि" भणितिभङ्गि तिणि आणिउ प्राणि। ६
खोभिउ हावभावविन्नाणिहिँ न चलिउ जिम सुरगिरि वहुपवणिहिँ। ७
वीरु सदारतुट्ठु तिणि जाणिउ कवडिहिँ हरिणी सो वक्खाणिउ। ८
व(वे)सं दासि भणइ एगन्ते "नारि ज दिट्ठा सिट्ठिगिहन्ते। ९
भयणि सुआ वा निरुवमरूवा सा जइ वेस तु हुइँ वसि देवा"। १०
इअ मन्तिवि तिणि मुद्दारयणू मग्गिउ अप्पिउ सिट्ठि पहाणू। ११
पडिछंदादंसणमिसि पेसिअ मुद्दा नमया(यं) दंसिअ दासिअ। १२
"तेडइ तुम्हि एवडअहिनाणिहिँ वीरदासु आवउ अम्ह भुवणिहिँ"। १३
नामसुद्द पिक्खिवि चिंतिवि वहु सह दासिहिँ नमया आविअ लहु। १४
हरिणीगिहपच्छलि भूमीहरि पुव्वसिक्ख तिणि घल्लिअ निट्ठुरि। १५
मुद्दा दासिहिँ अप्पिअ वीरह नमया दोसु देइ दुकम्मह। १६
उट्ठिउ सिट्ठि जाइ नियमंदिरि ता नहु पिच्छइ नमयासुंदरि। १७
घरि वाहिरि पुरि न [ल]हइ सुद्धि भरुयच्छि गउ कयवुद्धि सरिद्धि। १८
कड्ढिय भूमिगिहाउ महासइ जाणिउ वीरु गयउ अह दंसइ। १९
सयलरिद्धि "एअह तइँ सामिणि करउँ होसि जइ वेसा भामिणि। २०
सग्गु एहु ता [मि]ल्हि असग्गहु" हरिणिवयणु निसुणिवि नमया लहु। २१
वज्जहय व्व भणेइ महासइ "मह जीवन्तिअँ सीलु न नस्सइ। २२
सीलु सयलदुक्खखयं[11]कारणु सीलु सिद्धिसुरलच्छिहि कम्मणु। २३
नरयनयरगोपुरु वेसत्तणु उत्तमनिन्दिअँ[12] तसु किं वन्नणु"। २४

---

१ धीरवीअ. २ वव्वरे. ३ वईअरं. ४ पमोईउ. ५ वव्वरि. ६ पूईउ. ७ सीलु°. ८ पडच्छंदा.° ९ वीरुदासु. १० °जीवन्तीअ. ११ °क्खयकारणु. १२ °निन्दीअ.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तं निसुणिवि तच्छइ निब्भच्छइ हरिणी कणइरकम्बिहि कुट्टइ । २५
जइ जलनिहि मज्जाया मिल्हइ तह वि न नम्मय सीलह चल्लइ । २६
जाइ धरणितलु जइ पायालह तुट्टिउ पडइ गयणु जइ मूलह । २७
तिमिरु तरणि जइ ससि विसु वरिसइ तह वि न नम्मयसीलु विणस्सइ । २८
इयँ अचलंती बहुहा ताडइ स(ल)ट्ठि मुट्ठि पुण सत्त न पाडइ । २९
कुणइ सई परमिट्ठिहि सरणं तसु पभावि हुइ हरिणीमरणं । ३०
जाणिउ सुद्धि नरिन्दु निवेसइ तसु पदि नमया कारणि मन्नइ । ३१
चिन्तइ "मज्झ सीलु नहु भंजइ इंदु वि" अह निवु तहिँ हक्कारइ । ३२
वेसागिहनिग्गमु सुंदरु मणि जाणिवि निवपेसिअसुक्खासणि । ३३
आरोहिवि पहतडि उग्घडियह जन्ती पडइ मज्झि सा खालह । ३४
कद्दमि तणु लिम्पणमिसि निअहिअ गहिअ सीलरक्खणि सन्नाहिअ । ३५
सहमयणिहिँ पत्तइँ किर फाडइ वत्थमिसिणँ[3] सा पमुइअ[4] हिअडइ । ३६
लंखइ धूलि भूअङ्गत्तासणि नच्चइ गायइ सतीसिरोमणि । ३७
सार मुणिवि निवु गुणिआ पेसइ पाहणलंखणि ते वि तासइ । ३८

॥ घत्ता ॥

इय गहिली जाणिय बुद्धि[5]पहाणिअ सीलसकलडिम्भिहिँ कलिअ ।
निवपमुहिहिँ लोइहिँ मुक्क अमोहिहिँ[6] भणइ थुणइ जिणु अक्खलिय ॥ ३९

[४]

मित्तह जिणदेवह कहइ वीरु नम्मयवइअरुँ तसु खिवइ भारु । १
भरुअच्छह गच्छइ नियपुरम्मि जिणदेव पत्तु अह कूलि तम्मि । २
दिट्ठा नच्चन्ती[8] विगलरूव जिणदेवि पुट्ठ "तउ किं सरूव" । ३
सा भणइ "कहिसु वणचेइअम्मि" अन्नोन्न कहिउ वइअरु वणम्मि । ४
सो बुद्धि देइ सा धरइ चित्ति अह घयघड फोडइ गहिलिअ त्ति । ५
घयवणिअ कुणइ निवपासि राव जिणदेवह कहइ नरिंदु ताव । ६
"ए करइ उवद्दवु घणउ देसि पवहणि आरोहिवि लइ विदेसि" । ७
नरनाहवयणु मन्नेवि नियलि बंधिवि चडावि पवहणि विसालि । ८
भरुयच्छि वन्दाविवि देव नीअ जिणदेवि नमय पिअहरि विणीअ । ९
रोअन्त कहइ वुत्तन्तु सयलु पियरिहिँ पुरि उच्छवु विहिउ अतुलु । १०
नमयापुरिअ दसपुव्वधारि सिरिअज्जसुहत्थि संपत्तु सूरि । ११
वंदइ सहदेवु कुडुम्बकलिउ निसुणेवि धम्मु नमयाइ सहिउ । १२
अह वीरदासु पुच्छइ मुणिंदु "किं नम्मयाइ किउ कम्मविन्दुं । १३
पुव्विल्लजम्मि जं दुक्खजुत्त पइचत्त जिअन्ती कह वि पत्त ।" १४
अह कहइ मुणीसरु "नम्मयाइँ पयाइ विंझगिरिनिग्गयाइ । १५
अहिट्ठायग देवय आसि एह पुव्विल्लजम्मि मिच्छत्तगेह । १६
पडिमापडिवन्नह मुणिवरस्स एगस्स नईतडि निसि ठिअस्स । १७
एए नइन्हाणह निन्दग त्ति पढमं पडिकूलुवसग्ग गत्ति[12] । १८

---

१ नमय°. २ इंय. ३ °मिसिणि. ४ पमुइअ. ५ बुद्धि°. ६ अमोहिंहिं. ७ °वईअरु.
८ नच्चन्ति. ९ वईअरु. १० °बिन्दु. ११ नम्मयाई. १२ गति.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पच्छाणुकूल थीरूवपमुह कय खोभहेउ देवीइ दुसह । १९
अक्खुहिउ खमावइ सा वि साहु मुणि कहिअ धम्मि तसु बोहिलाहु । २०
सा देवि चविवि सहदेवधूअ हुय नमयासुन्दरि गुणिहिँ गरुय । २१
पडिकूलिहि तसु हुउ पइविओगु अणुकूलि सीलखोहणपओगु" । २२
इय निअभवु निसुणि[वि भव]विरत्त चारित्तु लेइ नम्मय पवित्त । २३
इक्कारसङ्गधरगणहरेण सा ठविय महत्तरपदि कमेण । २४
फुडअवहिनाणजुयं सह मुणिंदि विहरंत पत्त पुरि कूवचन्दि[2] । २५
कउ तीउ(इ) महेसरु निव्वियप्पु सरलक्खणेण निंदेइ अप्पु । २६
"जाणिज्जइ सत्थपमाणि सव्वु तउ नमया जाणिउ पुरिसरूवु । २७
मइँ दुट्ठि निकिट्ठि सुसील चत्त कंता तसु पावह दिक्ख जुत्त" । २८
नम्मयसुवलक्खिवि चरणु लेइ रिसिदत्तसहिउ सो तवु तवेइ । २९
आराहिवि अणसणुं[3] सग्गि जंति तिन्नि वि अणुवमु सुहु अणुहवंति । ३०

॥ घत्ता ॥

कल्लाणह कुलहर होअउ जयकर नमयासुंदरिसंधि वर ।
अब्भत्थणि सङ्घह रइअँ[4] अणग्घह पढत-सुणन्तह उदयकर ॥ ३१
सरिया वि सीलजुन्हा जीसे सुकयामएण तियलोअं ।
सिंचइ बीइन्दुकल व्व नम्मया जयइ अकलङ्का ॥
तेरससय-अडवीसे वरिसे सिरिजिणपहुप्पसाएणं[5] ।
एसा सन्धी विहिया जिणिन्दवयणाणुसारेणं ॥

॥ श्रीनर्मदासुन्दरीमहासतीसन्धी[ः] समाप्ता ॥

* *
*

१ जूय. २ कूविचन्दि. ३ अणुसणु. ४ रईअ. ५ °पसाएण.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राचीन गुजराती गद्यमय

नर्मदासुन्दरी कथा

॥ ६० ॥ हिव नर्मदासुंदरीनी कथा कहइ ॥ एह जि जंबूद्वीपमाहि वर्धमानपुर नगर । तिहां संप्रति राजा राज करइ । तीणइ नगरि रुषभ सार्थवाह वसइ । तेहनी भार्या वीरमती । तेहनइ वि(बि) पुन(त्र) एक सहदेव १ वीजउ वीरदास २ । अनइं रुषिदत्ता एहवइ नामि पुत्री महारूपवंति यौवनावस्थाइं आवी । तेतलइ घणा महर्द्धिक व्यवहारीया मांगइ । पणि श्रेष्ठि मिथ्यात्वीनइ आपइ नही । इसइ महर्द्धिक रुद्रदत्त नामि वणिगपुत्र वाणिज्यनइ हेति रूपचंद्रपुरहूंतउ तीणइ नगरि आविउ । पणि ते कुवेरदत्त मित्रनइं घरि आवी ऊतरिओ । अनेक व्यवसाय करइ । आपणा घरनी रीतिइं तिहां रहइ । अन्यदा रुषिदत्ता सखीइं परिवरी वारणइ रमती दीठी । हिव रुद्रदत्त मित्र आगलि कहइ "ए कन्या कुमारिका छइ किंवा मांगी छइ" । तिवारइं कुवेरदत्त कहइ "ए कुमारिका छइ । पणि ए श्रेष्ठि जिनधर्म टाली अनेरा कुणहींनइं न आपइ" । तिवारइं रुद्र मिथ्यात्वीइं थकउ रुषिदत्तानइं लोभइं कपटश्राव[क] थई जैनधर्म पडिवजिउं । कांइ माया लगइं गाढाइ विवेकीना चित्त आवर्जियइ । पछइ रुषभसेन सार्थवाहि श्रावक भणी आपणी पुत्री रुषिदत्ता रुद्रदत्तनइं दीधी । तिहां पाणिग्रहण महोत्सव हूओ । केतलाएक मास तिहां अतिक्रम्या । तिसइ रुद्रदत्त ससुरानइं पूछी प्रिया सहित आपणइ नगरि आविउ । तिसइ रुद्रदत्तनउ पिता वधूनइ आगमनि महाहखि(र्खि)ओ । इम घरि रहतां रुद्रदत्ति जिनधर्म छांडिउ । रुषिदत्ताइं पणि भर्तारना संसर्ग लगइ जिनधर्म छांडिउ । क्रमिइं महेश्वरदत्त पुत्र रुषिदत्ताइं जन्मिउ । क्रमिइं सर्व कला अभ्यसी मोटउ हूओ ।

इसइ रुषिदत्तानउ वडउ बांधव सहदेव भार्या सुंदरी सहित सुखिइं रहइ छइ । एहवइ तिणि सुंदरीइं अपूर्व सउंणउं देखिउं । तेहनइ योगि आधान धरिवा लागी । क्रमिइं वृद्धि पामतइं एहवउ डोहलउ ऊपनउ । जाणइ जउ नर्मदानदी मांहि जई स्नान करउं । ए वात भर्तार आगलि कही । पछइं सहदेव संघातनी रचना करी सुंदरीनइं साथि लेई चालिउ । हिव नर्मदानइं कांठइ आवी पूजा अर्चा करी नर्मदामांहि पइसी जलक्रीडा कीधी । पछइं सहदेव व्यवसायनइ सुखिइं तिहां नगरनी स्थापना कीधी । नर्मदापुर नाम दीधउं । तिहां जिनमंदिर कराविउं । सम्यक्त्वपिंड पोषिवा भणी पछइं सघलाई व्यवहारिया आपणा नगर मूंकी तिहां आवी वस्या । इसइ पूरे दिवसे पुत्री जन्मी । पणि पुत्रजन्मनी परिइं उत्सव कीधउ । नर्मदासुंदरी ए नाम दीधउं । क्रमिइं क्रमिइं सघलीइ कला अभ्यसी यौवनवस्थाइं आवी ।

इसइ नर्मदासुंदरीनउं रूप सांभली रुषिदत्ताइं चींतविउ "जउ माहरउ पुत्र महेसरदत्त तेहनइं हेति ए नमयासुंदरी मागीइ । अथवा मुझनइं धिग् धिक्कार हुउ । जे मइ जिनधर्म छांडतइ हूं कुटुंबियइं छाडी । जे हूं पर्वतिथिना नामइं न जाणउ ते माहरा पुत्रनइं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किम देस्यइ ?" इम कहती रोवा लागी । तेतलइ रुद्रदत्त आविउ । तिणि पूछिउं "तूं असमाधि कांइ करइं ?" तिवारइं रुषिदत्ताइं सर्व वृत्तांत कहिउं । एहवइ महेश्वरदत्त पुत्र मा-बापनी वात सांभली कहिवा लागउ "तात मझनइं तिहां मोकलउ । जिम सघलाई आवर्जी माउलानी पुत्री परिणी मानइं हर्ष ऊपजावउं ।" पछइं पिताइं महेसरदत्त चलाविउ । थोडे दिहाडे पंथ अवगाही नर्मदापुरि आविउ । तिहां सहदेवनइं मिलिउ । हिव महेसरदत्त तिम बोलइ तिम चालइ जिम सहदेवादिक सहू मनि चमत्कर्या । पछइं उत्संगि बइसारी कहिवा लागा "वत्स तइं अम्हारा चित्त आवर्ज्या जिम जांगली विद्याइं करी साप वशि थाइ तिम अम्हे तइं वशि कीधा । तउ वत्स मांगि जि कांई मांगइ ते आपउ ।" तिवारइं महेसरदत्ति नर्मदासुंदरी मांगी । पछइं माता-पिताए दीधी । तिहां महेसरदत्ति जिनधर्म पडिवजिउं । शम-शपथ कीधा जु इणि भवि जिनधर्म टाली अवर-धर्म न करउं । पछइं महाआनंदि महोत्सवि नर्मदासुंदरीनउं पाणिग्रहण कीधउं । केतलाएक दिन तिहां रहिउ । हिव नर्मदासुंदरीइं तिम जिनधर्मना उपदेस दीधा जिम महेसरदत्त जिनधर्मनइं विषइ गाढउ निश्चल हूओ । पछइं केतलेएक दिहाडे ससुरानइं कही भार्या सहित महेश्वरदत्ति आवी मातापितानइं प्रणाम कीधउ । तिसइ रुषिदत्ता नर्मदासुंदरीनइं उत्संगि बइसारी कहइ "वत्सि तइं तिम करिवउं जिम मिथ्यात्वनउं नाम घरमां न रहइ ।"

हिव महेसरदत्त नर्मदासुंदरी सुखिइं काल गमाडतां सर्व स्वजननइं मान्य हूआ । अन्यदा नर्मदासुंदरी गउखि बइठी आरीसइ आपणउ मुख जोवती, तंबोल खाती, अनेक चित्रम करती लीलालगी तंबोल वारणइ नांखिउ । इसइ महातमा, एक तलइं जातउ हूंतउ तेहनइं माथइ तंबोल पडिउ । तेतलइ महातमाइं कहिउं "इम जे रुषिनी आशातना करइ ते भर्तारनउ वियोग पामइ ।" इसउं ते महातमानउ सकोपवचन सांभली विषादपर नमयासुंदरी गउखिहूंती ऊतरी महातमाने पगे लागी, कहिवा लागी "हे महात्मन् ! हूं वरांसी जे हूं जिनधर्म जाणतीइंहूंती एवडउ अविनय कीधउ । तउ हिव तुम्हे विश्वनइं वत्सल छउ । मझ ऊपरि क्षमा करउ । तुम्हेतउ वइरीइं ऊपरि कोप न करउ । पछइं मझ ऊपरि किम करिस्यउ । तथापि मझ अभागणी ऊपरि शराप परहउ करउ ।" तिसइ मुनि बोलिउ "हे वत्सि ! सांभलि, खेद म धरिजे । जे महातमा हुइं ते शाप अनइं अनुग्रह न करइं । पणि न जाणउं माहरा मुखहूंतउ एहवउ वचन किमहीं नीकलिउ । अथवा वली जे नींबनइं कडुअपणउ हुइ ते कोई करइ छइ सिउं ना; ते तउ स्वभावइं जि हुइ ।" इम प्रतिबोधी महातमा आपणइ ठामि गयओ । नमयासुंदरी पाछी घरि आवी । सुखिइं घरि रहइ छइ ।

इसइ अनेरइ दिवसि महेसरदत्त व्यवसाय भणी जवनद्वीप भणी चालिवा लागउ । तेतलइ नमयासुंदरी कहइ "स्वामी ! हूं पणि साथि आविसु ।" पछइं नमयासुंदरी संघाति चाली । हिव समुद्रमांहि प्रवहणि बइसी चालतां अर्धपंथ अवगाहिउ जेतलइ, तेतलइं रात्रिनइ समइ कुणही एकणि गीत गायउं । ते गीत सांभली नमयासुंदरी स्वरना लक्षण जाणती हूंती भर्तारनइं आश्चर्य ऊपजावा भणी कहिवा लागी "स्वामीन् ! जे ए गीत गाइ छइ ते सामलइ वर्णि छइ । स्थूल हाथ छइं । कृश देह छइं । गुह्यप्रदेशि म...

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छइ । शेण लांछन छइ । बावीस वरसनउ छइ । हीयउ पिहुलउ छइ ।" इत्यादि स्त्रीना वचन सांभली महेसरदत्त मनमांहि चींतवइ "ए नमयासुंदरी कुसीलिनी संभावियइ । अन्यथा एतली वात किम जाणइ । तउ हिव परीक्षा करउं ।" पछइं प्रभाति ते पुरुष तेडी सर्व अहिनाण जोई मनि निश्चय कीधउ "तां सही ए कुसीलिनी जि छइ । इहां संदेह कांई नहीं।" पछइं गूढ कोप धरतउ चींतवइ "एतला दिन हूं इम जाणतउ जु ए महासती छइ । पणि तउ आज पारिखउं दीठउं । तउ हिव एहनइ समुद्रमांहि ठेली दिउं । अथवा खड्गकरी केलिनी परिइं विखंड करउं ।" इम जेतलइ चींतवइ छइ तेतलइ अकस्मात् निर्यामक कूआखंभा ऊपरि चडीनइं कहइ "अरे लोको ! प्रवहण राखउ । सिढ पाडउ । नागर मूंकउ । राक्षसउं द्वीप आविउं । जल-ईंधणनी सामग्री लिउ ।" इम कही आपणउं प्रवहण राखिउ । सर्व संग्रह कीधउं । इसइ महेसरदत्त मायालगइं गूढ कोप धरतउ नर्मदासुंदरीनइ वनमांहि लेई गयउ । अनेक तलाव देखाड्या । वली सर्व वन देखाडी संध्याइं किहां एक वननिकुंजमांहि जई सूता । तेतलइ पूर्वोपार्जित दुःकर्मलगइं नर्मदानइं निद्रा आवी । तेतलइ महेसरदत्त नमया सूती जि मूंकीनइ प्रवहणि आविउ । लोकानइं कहइ "अहो ! लोको नासउ नासउ; कांता तउ राक्षसइं खाधी । हूं नासी आविउ । तुम्हे चालउ, नहींतर राखिस आवी खासीइ ।" तिवारइं बीहतां लोक प्रवहणि चडी चाल्या । पछइं महेसरदत्त चींतवइ "मइं विन्हइ वात कीधी । दुःसीलिनी स्त्री पणि छांडी अनइं लोकनउ ई अपवाद राखिउ ।" हिव क्रमइं क्रमइं जवनद्वीप आविउ । तिहां घणउ धन उपार्जी आपणइ नगरि आविउ । अनइं प्रियानउं स्वरूप कहिउं । जु राक्षिसइं प्रिया भरखी । पछइं असमाधि करी नमियाना प्रेत कार्य कीधा । वली महेसर नवी वार परणाव्यउ ।

हिव नमयासुंदरी वनमांहि जिम सूती हूती तिम जि पुकार करती जागी । पणि आगलि भर्तार न देखइ । तिसइ नमया भोलपण लगइं कहइ "स्वामी ! एहवउ हासउं न कीजइ ।" तउ ही पति नावइ । तेतलइ ऊठी वनमांहि जोवा लागी । पणि भर्ता न देखइ । तिवारइ नमया रोवा लागी । तिणि रोवतां जे वनमांहि स्वापद छइ ते ही रोवा लागा । पछइं लताना घरमांहि रात्रिइं रही । पणि रात्र सउ वर्ष समान हुई । वली प्रभाति रुदन करती, वन जोवती, पांच दिन अतिक्रमावी, छट्ठइ दिनि जिहां प्रवहण हूंता तिहां आवी । देखइ तउ आगलि प्रवहण नहीं । तिवारइं गाढेरी निरासथकी रुदन करती ते मुनिनउ वचन चीति आविउ । पछइं थोडेरी असमाधि करिवा लागी । इम आपणउं पूर्वोपार्जित कर्म भोगवती, आत्मानइं प्रतिबोध देती, महासतीइं सरोवरि स्नान करी, वनमांहि देव वांदी, फलाहार करीनइं तापसी हुई । पछइं गुफामांहि माटीनी प्रतिमा करी, मननइं स्थिरता भणी फल-फूले पूजी, आगलि बइठी सिझाय करइ । एकाग्रचित्त दीक्षाना ध्याननइं तत्पर हूंती रहइ ।

इसइ ते नमयानउ पीतरियउ वीरदास बब्बरकूल भणी जातउ हूंतउ तीणइं प्रदेशि जिहां गुफामांहि स्वामीनी स्तुति करइ छइ तिहां आविउ । पछइं ते स्तुति सांभली वीरदास गुफामांहि पइठउ । तिसइ साश्चर्यरूपि वीरदासइं भत्रीजी देखी कंठि आलिंगी शोक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनइं हर्ष धरतउ पूछिवा लागउ "हे वत्सि ! तूं एकाकिनी इहां कांई अथवा तूं किम आवी ?" इम पूंछिइ हूंतइ नमयाइं आपणउ सर्व वृत्तांत कहिउं। पछइं वीरदास दैवनइं उलंभा देतउ हूंतउ नर्मदासुंदरीनइं संघाति लेई बब्बरकूल आविउ। तिसइ नमयासुंदरी ऊतारइं मूंकी पछइं वीरदास मेटि लेई राजानइं मिलिवा गयउ। राजाइं बहुमान देई अर्थदाण मूंकिउं। पछइं वीरदास क्रियाणा वेचिवा लागउ।

हिव तिहां हरिणी नामि पणांगना वसइ। पणि ते प्रवहणी लोककन्हलि सहस्र दीनार लिइ। ते लेवा भणी दासी एक वीरदासनइं उतारइ मोकली। तिणि दासीइं नमयासुंदरी दीठी रूपवंति। तिणि जई हरिणीनइ कहिउं "जु एहवउं रूप पृथ्वीमांहि नथी। ए जउ ताहरइ घरि आवइ तउ जाणे कल्पवेलि आवी। तीणइं द्रव्यनी कोडि ऊपार्जिइं।" पछइं हरिणिइं धन मांगिवानइ मिसि तेह वीरदासनउ चरित्र जोवा भणी वली तेह जि मोकली। तिसइ वीरदासि सहस्र दीनार दीधा। तिसइ दासी पाछी आवी हरिणिनइं कहइ "न जाणियइ वीरदासनी बहिन छइ, अथवा सगी छइ, किंवा दासी छइ। ते जाणियइ नहीं।" तिवारइं हरणी तेहनइ घरि आवी। पछइं वीरदासनइं बलात्कारि आपणइ घरि लेई गई। मिषांतर करी वीरदास भोलवी हाथनी वींटी नामांकित लीधी। ते लेई वली हरिणीइं दासी हाथि नमयासुंदरीकन्हइं मोकली। नामांकित मुद्रा देखाडी नमयानइं घरि आणी भउंहरइ लेई घाली। मुद्रिका वलि पाछी आपी। पछइं अखंडव्रत वीरदास पाछउ घरि आविउ। जइ ऊतारइ जोवइ तउ नमयानइं न देखइ। पछइं सर्व नगर जोतउ जोतउ सासंक हरिणीनइं घरि आविउ; पूछइ जु "नमिया किहां ?" तिवारइं ते कपटपंडिता न मानइ; कहइ "हूं स्यउं जाणउ।" तिसइ वीरदास चींतवइ "एक कारेलं अनइं नींबि चडी। तिम एक वेश्या अनइं राजानउ बहुमान। तउ ए साथि न पहुचियइ। एक परदेस; बीजउं जीणइ गोपवी ते किम आपिस्यइ।" इम घणी असमाधि कीधी। पछइं आपणी वस्तु लेई घणउ लाभ ऊपार्जी पाछउ चालिउ। भरूअचि नगरि आविउ। तिहां आव्या पछइं परममित्र परमश्रावक जिणदास ते आगलि सर्व वात कही। नर्मदासुंदरीनी सुद्धिनइं हेति बब्बरकूल भणी आपणइ ठामि मित्र मोकलिओ।

हिव हिरणीइं वीरदास चाल्या पछइं नमयासुंदरीनइं कहिउं "हे सुभगि ! सौभाग्यनउ निधान वेश्यापणउ आदरि। यौवननउं फल लिइ।" ए वचन जेतलइ हरिणी कहिवा लागी तेतलइ नमयाइं कान ढांकी नइं कहिउं "ए वात आज पछइ म कहिसि। हूं आजन्म शीलनी खंडना नहीं करउं।" तिवारइं वेश्या कहइ "अम्हारउ जन्म सफल, जे आपणी इच्छाइं विलसउं, भोग भोगवउं।" तेतलइ नर्मदा कहइ "इणइं सुखिइं संसारना सुख कउण हारवइ। जां मझनइं जीवितव्य तां माहरउ शीलरत्न कुण हरी सकइ। कदापि मेरु पर्वतनी चूलिका चालइ अनइं कदापि पश्चिमइं सूर्य ऊगइ; पणि माहरउ शील भंग न करउं।" पछइं हरिणीइं अनेक दीन बोल बोल्या लोभ देखाडिउ। पणि तउ ही न मानइ। तिवारइं हरणीइं पांचसइ नाडी नमयानइं देवरावी। पणि लगारइ ते सतीनउं [मन ?] शीलनइं प्रमाणि खुभिउ नहीं। अनइ शील पणि राखिउं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिसइ नमयानइं मारतां शीलनइं प्रमाणिइ हरिणी वेश्या मुई। पछइं वीजी वेश्या भयभीत हूंती पगे लागी। नमयानइं मनावइं "तूं अम्हारइ स्वामिनी था। प्रभुत्वपणइं आपणी इच्छाइं शील पालि।" पछइं नमयासुंदरीइं ते वचन मानिउं। इम करतां प्रधानि नमयासुंदरीनउं रूप देखी प्रार्थना कीधी। पणि मानइ नहीं। तिवारइं प्रधानि राजा आगलि जई नमयाना रूपनी वर्णना कीधी। तेतलइ राजाइं नमयासुंदरी भणी पालखी मोकली। तिसइ राजाने सेवके जई महाविस्तारि नर्मदासुंदरी सुखासनि वइसारी, माथइ छत्र धरी चलावी। एहवइ नमयासुंदरी शीलनी रक्षा भणी गहिली हुई। मोटउ एक नगरनउ खाल तेहमांहि ऊलली पडी। लोकानइं कहइ "अहो लोको! माहरइ शरीरि यक्षकर्दम कहतां सूकडि कपूर केसर कस्तूरी लागी छइ।" इम कहती सघलाई लोकानइं कादमसिउं छांटइ अनइं आपणा वस्त्र फाडइ। वली लोक साम्ही धूलि नांखइ। इसइ प्रधानि राजानइं कहिउं "स्वामी! न जाणियइ छलभेद हूओ किंवा दृष्टि लागी; तिम ते गहिली थई।" तेतलइ राजाइं मंत्रवादी तेड्या। जेतलइ मंत्र गुणी गुणी सरिसव नांखइ तेतलइ नमयासुंदरी ते साम्हा पाषाण नाखइ। तिम ते मंत्रवादी सर्व नासी गया। हिव नगरमांहि गहिलीनी परिइं फिरइ। वीतरागना गीत गावइ।

इसइ ते जिनदास श्रावक भरूवछहूंतउ आविउ। तीणइ ते नमियासुंदरीनइं मुखि वीतरागना गीत सांभल्या। तिवारइं जिनदास आगलि आवी दयापरहूंतउ कहिवा लागउ "हे सुभगि! तुझनइं ए स्यउं थयउं? तूं परम श्राविका जैन भक्ति दीसइ छइ।" तिवारइं नमिया कहइ "तूं जउ जैन श्रावक छइ तउ माहरउ स्वरूप एकांति पूछे; पणि लोक देखतां म पूछे।" हिव अन्यदा गीत गावती वनमांहि जई नमिया देव वांदी गीत गावइ छइ। तिसइ जिनदास पणि केडइ लागउ वनमांहि गयउ। तिहां तेहनइं 'वांदू' इम कही जिनदास पूछिवा लागउ "तूं कउणि?" तिवारइं नमयाइं आपणउं सर्व वृत्तांत श्रावक आगलि कहिउं। तिवारइं जिनदास कहइ "वत्सि! ताहरी मोटी वात। जिम तुइं शील राखिउ तिम बीजउं कोई न राखइ। हिव हूं ताहरइ कीधइ भरूवछहूंतउ आविउ छउं। वीरदास मित्रइं हूं मोकलिउ। तउ हिव तूं खेद म धरिसि। जिम रूडउ हुस्यइ तिम हूं करिसु। पणि आज पछइं राजमार्गि जेतला पाणीना घडा आवइ तेतला तूं भांजें।" इम संकेत करी बेऊं नगरमांहि आव्या। पछइं नमया पाषाण नांखइ, हांडला फोडइ, लोकनइं संतावइ। इसइ नगरनउ राजा नीकलिउ। तिणि ते गहिली दीठी। तिसइ जिनदास आगलि ऊभओ हूंतउ तेहनइं कहिउं "जउ इणि इ स्त्रीइं नगर सघलउ वानरानी परिइं संताविउं। हिव तिम करि जिम प्रवहणि बइसारी एहनइं परद्वीपि लेई जा; जिम व्याधि तूटइ।" तिसइ जिनदासि वचन पडिवजिउं। मनमांहि हर्खिउ। पछइं लोहार तेडी नमयानइं पगि अठीलि घाती प्रवहणि बइसारी, सर्व वाखर प्रवहण भरी, अनेक वस्त्र वाना घाती, पछइं आप प्रवहणि बइसी चालिउ। मार्गि जातां अठीलि भांजी। वस्त्र आभरण पहिरावी नर्मदापुरि आणी। तिसइ पिताइं पुत्री आवी जाणी पिता सामुहउ आविउ। पछइं नमयासुंदरी माता-पितानइं पगि लागी। तारस्वरि रुदन करिवा लागी। तिसइ रुषभसेनादिक कहिवा लागा "भलउ हुउं जे अम्हे बेटी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

3363

जीवती दीठी । तउ आज पुत्रीनइं नवउ जन्म हूओ ।" तेह भणी महामहोत्सव करिवा लागा । जैनप्रासादि पूजापूर्वक साधर्मिक वात्सल्यादिक कीधा । केतलाएक दिन साधर्मि जिनदास तिहां रही वीरदासनइं पूछी भरूवछ आविउ ।

इसइ एकदा आर्य सुहस्तिसूरि दशपूर्वधर विहार करता नर्मदापुरि आव्या । तिवारइं नमयासुंदरी मा-बाप पीतरिआ सहित आचार्य समीपि आवी प्रणाम करी आगलि बइठी । तेतल[इ] श्री सुहस्तिसूरी धर्मलाभ कही धर्मोपदेश दीधउ । तिवार पछइं देशनानइं अंति वीरदास गुरुनइं प्रणमीनइं पूछिवा लागउ "स्वामिन् ! नर्मदासुंदरीइं भवांतरि कउण कर्म उपार्जिउं जे निर्दोषइ सुसीलथकी एवडां कष्ट पाम्या ?" तिवारइं भगवंत श्रुतनउ उपयोग देई पूर्वभव कहिवा लागा—"इणइं पृथ्वीपीठि वंध्यगिरि तेहमांहि थकी नर्मदा नींकली छइ । तेहनी अधिष्ठायिका मिथ्यात्वनी देवताइं एकदा महातमा एक धर्मरुचि प्रतिमाइं रहिउ देखी घणा उपसर्ग कीधा । तउ ही धर्मरुचि महातमा ध्यान हूंतउ न चूकइ । तिसइ देवताए महातमानी क्षमा देखी प्रतिबूझीहूंती सम्यक्त्ववंति हुई । हिव ते मरी तुम्हारी पुत्री नर्मदा हुइ । अनइं पूर्विला अभ्यासलगी नर्मदास्ना[न]नउ डोहलउ ऊपनउ । वली जे महातमानइं उपसर्ग कीधा तेह भणी दुक्खिणी हुई ।" ए वात सांभली नर्मदाइं दीक्षा लीधी । तिसइ जातीस्मरण ऊपनउं । पछइं चारित्र पालतां वली अवधिज्ञान ऊपनउं ।

पछइं पवतिणिपद पामी रूपचंदपुरि आवी । पणि तप लगी कालक्रमइं कृशदेह हुई छइ । पणि तिहां कुणहीं ऊलखी नहीं । पछइं ते नर्मदासुंदरी पर्व(व)तिणि महासतीने वृंदे परिवरी रुषिदत्तानइं घरि आवी धर्मलाभ कहिउ । तिसइ रुषिदत्ताइं उपाश्रय दीधउं । तिहां महासती रही । हिव धर्मनउ उपदेस महासती सदा दिइं अनइं महेसरदत्त रुषिदत्तातउ उपदेस सांभलइ । पणि कोई महासतीनइं ऊलखइ नहीं । इम अन्यदा संवेगरंग अपाइवा भणी महेसरदत्तनइं स्वरलक्षण जणाविउ । ते स्वरलक्षणोपदेस सांभली ते नर्मदासुंदरी चींति आवी । पछइं पश्चात्ताप करिवा लागउ "धिग् धिक्कार मझनइं, जे मइं एहवीइ सती वनमांहि मूंकी; तउ ते नमयाना कुण हाल होस्यइं ।" इम आपहणी शोक करतउ देखी दया लगइं महासती कहइ "ते हूं नमयासुंदरी जे तुझ आगलि बइठी छउं ।" तिवारइं महेसरदत्त चींतवइ "ए किसउं आश्चर्य । जोउ सघलइ कर्म जि प्रधान सबल जिम नचावइ तिम नाचीयइ । इंहां किहनउ दोस नहीं ।" पछइं ऊठी महासतीने पगे लागी, आपणउ अपराध खमावी करी, वैराग्यरंगपूरित हूंतउ श्री सुहस्तिन् आचार्य समीपि जई व्रत लीधउं । अनइं रुषिदत्ताइं पणि चारित्र लीधउं । पछइं बेहूं तप तपी चारित्र पाली स्वर्गनइं भाजन हुआ । अनइं नमयासुंदरी पणि प्रांतसमउ जाणी संलेखनापूर्वक अणसण पाली देवलोकि पुहुती । पछइं वली महाविदेहि क्षेत्रि ऊपजी दीक्षा लेई मोक्षि पहुचिस्यइ ॥ श्री ॥

॥ इति श्री शीलोपदेशमाला बालावबोधस्य वा० श्री० मेरुसुंदर० शीलोपरि नमयासुंदरीकथा ॥ श्री ॥

*

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri